कवि-श्री माला

* तमिल *

कवि

सुब्रह्मण्य भारती

सम्पादक—अनुवादक

क म शिवराम शर्मा


राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

मोहनलाल भट्ट,
मंत्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर, वर्धा

● ● ●

1

प्रथम संस्करण—१००
मई, १९६२
मूल्य—रु. २/-

● ● ●

मुद्रक

मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस
हिन्दीनगर, वर्धा

● ● ●

आमुख

हर्षका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा अपने कार्य-कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मनाये जानेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यका परिचय 'कवि-श्री माला' की पच्चीस पुस्तकोंमें हिन्दी गद्यानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके सामने आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ काव्य-सर्जकका निर्णय करना एक कठिन कार्य है, फिर भी अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उन उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनावका कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चुनाव किया गया है उनका चुनाव करते समय सन् १९२० से पूर्वका साहित्य और १९२० से बादका साहित्य—इस तरहकी एक विभाजन रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९०० के पूर्वके तथा १९२० के बादके साहित्यमें प्रवाहित विचार-धारामें एक विशेष प्रकारका अलगाव-सा पाया जाता है।

श्री क. म. शिवरामजी शर्माने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यको चुनने, उन्हें सम्पादित तथा अनूदित कर सभी सामग्रीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। पुस्तकमें संकलित चित्रोंके प्राप्त करानेमें श्री आर. के. पद्मनाभनने भी अपना सहयोग दिया है। संग्रहकी आवरण सज्जामें बम्बई के श्री वही. एन. आडारकरजी (डीन, सर जे. जे. इन्स्टीट्यूट आफ अप्लाईड आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मिला है, उसके लिये समिति उनकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त छपाई तथा अन्यान्य दृष्टियोंसे भिन्न-भिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंको रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

मंत्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

अनुक्रमणिका



सुब्रह्मण्य भारती

[फोटो श्री आर. के पद्मनाभम्‌के सौजन्यसे प्राप्त]

तमिल साहित्य परिचय

[प्रारम्भसे १९२० तक]

तमिल भाषा और उसका साहित्य

• • •

अनादि कालसे आसेतु हिमाचल प्रदेश एक राष्ट्र माना गया है। प्राचीन कालसे ही गंगाके साथ-साथ यमुना गोदावरी सरस्वती नर्मदा सिन्धु और कावेरीके नाम लिये जाते हैं काशीके साथ-साथ रामेश्वर, द्वारका और बद्रीनाथके नाम लिये जाते हैं। भारतवर्षकी यह विशेषता है कि इस राष्ट्रीय एकताके होते हुए भी विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेशोंकी अपनी-अपनी विशिष्टता सदासे ही बनी रही। हमारे देशके हर भू-भागका रहन-सहन खान-पान या पहनावा ढंग ही अपना-अपना अलग रहा। भाषाकी भिन्नता सदा रही। विशेष रूपसे दक्षिणकी भाषाएँ उत्तरकी भाषाओंसे एकदम भिन्न रहीं। दक्षिणकी भाषाएँ द्रविड़ परिवारकी हैं। इस परिवारकी अब चार प्रमुख भाषाएँ तमिल तेलगु, कन्नड़ और मलयालम प्रचलित हैं। इन साहित्य सम्पन्न चार भाषाओंके अलावा अन्य कई बोलियाँ भी प्रचलित हैं।

यह कहना कठिन है कि द्रविड़ लोग भारतके आदिम निवासी थे या बाहरसे आए। कुछ लोगोंका विश्वास है कि वे भारतके आदिम निवासी थे कुछ अन्य लोगोंका विश्वास है कि भारतके पश्चिममें अब जहाँ अरब सागर है वहाँ एक बड़ा भू भाग था जो भारतको अफ्रीकासे जोड़ता था। उस समय हिमालय प्रदेशमें एक समुद्र था। एक बड़ा भूकंप हुआ जिसमें अफ्रीका और भारतको जोड़नेवाला भू-भाग तो बह

मग्न हो गया और हिमालय प्रदेशका समुद्र संसारका सर्वोन्नत पर्वत बन गया। अफ्रीका और भारतको जोड़नेवाले प्रदेशके निवासी भारतमें आ बसे और द्रविड़ कहलाए। कुछ लोगोंका यह विश्वास है कि द्रविड़ उत्तरकी ओरसे भारतमें आये। इन दोनों मतोंमें कौन-सा ठीक है, यह कहना कठिन है। पर इतना निश्चित है कि एक समय था जब द्रविड़ भारत भरमें व्याप्त थे।

द्रविड़ परिवारकी भाषाओंमें तमिल सबसे अधिक प्राचीन है और इसका साहित्य काफी सम्पन्न है। कई तमिलभाषियोंका कहना है कि यह भाषा संस्कृतसे भी अधिक प्राचीन है। पर इतना निश्चित है कि दोनों भाषाओंने एक दूसरेसे बहुत कुछ लिया तथा एक दूसरेको बहुत कुछ दिया। यद्यपि तमिल भाषाने भी संस्कृतसे बहुत कुछ लिया तो भी अन्य भाषाओंकी अपेक्षा उसपर संस्कृतका प्रभाव कम ही पड़ा।

तमिलकी प्राचीनतामें कोई सन्देह नहीं है। ऐसा माना जाता है कि इस भाषाके पिता शिवजी हैं। प्राचीन तमिल साहित्यके तीन " संघ-काल " माने जाते हैं। तमिल भाषाकी उन्नतिके लिए पहला संघ मदुरा नामक नगरमें स्थापित हुआ। इस संघकी स्थापनाकी कहानी यों है —अगस्त्य मुनि जब दक्षिणकी यात्रापर निकले तब शिवजीने उन्हें तमिल भाषा सिखाई। अगस्त्य मुनि (दक्षिणमें) मलय-प्रदेशमें जा पहुँचे और वहीं अपना आश्रम बनाकर रहने लगे। वहीं उन्होंने एक 'तमिल-अनुशीलन-समिति' स्थापित की। इस समितिके कार्यमें कई लोग उनकी सहायता करते थे। उन दिनों मदुरामें जो राजा राज्य करता था वह पाण्ड्य वंशका था। उसके कई दरबारी कवि अगस्त्यके निकट सम्पर्कमें रहते थे। एक बार इस पाण्ड्य राजाके मनमें यह विचार आया कि राजाका प्रोत्साहन पाकर भाषाकी उन्नतिका काम अधिक सफलताके साथ चल सकेगा। अगस्त्य मुनिको भी बात जँच गई। अनुशीलन समिति अब " संघ " नाम से मदुरा जा पहुँची। अगस्त्य भी वहीं जाकर रहने लगे। वह मदुरा नगर वर्तमान मदुरा नगरसे बहुत दूर दक्षिणमें था। पाण्ड्य राजाओंमेंसे एकके मनमें आया कि राजधानी समुद्रके किनारे रहे तो अच्छा होगा। वह अपनी राजधानी मदुरासे हटाकर कपाटपुरम् (या कपाटपुरम्) नामक समुद्र तटवर्ती नगरमें ले गया। तब मदुराका प्रथम संघ समाप्त हुआ और कपाटपुरम्‌का मध्यम संघ अथवा द्वितीय संघ स्थापित हुआ। इस राजधानीके बारेमें भी कुछ लोगोंका विश्वास है कि मदुरा जल-मग्न हो गया तब प्रथम संघका भी अन्त हुआ कपाटपुरम्‌में नई राजधानी बनी तब द्वितीय संघकी स्थापना हुई। कहते हैं कि प्रथम संघकाल ४४४० वर्षों तक रहा और द्वितीय संघकाल १७ वर्षोंतक। इस काल-परिमाणमें अतिशयोक्ति हो सकती है पर कपाट-पुरम्‌का उल्लेख रामायण और महाभारतमें हुआ है। तुलसीदासके अनुसार शम्भु (शिवजी) कुम्भज (अगस्त्य) के पास त्रेता युगमें गए। वहाँसे लौटते हुए

जिनसे दण्डकारण्यमें सीताके विरहसे व्याकुल श्रीरामचन्द्रजीसे मिले। इस दृष्टिसे मानना ही पड़ता कि अगस्त्य मुनि त्रेतायुगमें ही दक्षिणमें पहुँच गए थे और तमिल भाषाकी उन्नतिका प्रयत्न करने लगे थे। इसी आधारपर मानना होगा कि कपाटपुरम् यदि अधिक नहीं तो तीन चार हजार वर्ष पुराना तो अवश्य ही है। कुछ समय बाद कपाटपुरम् भी जल-मग्न हो गया। उसके साथ द्वितीय संघ और द्वितीय संघकालका भी अन्त हुआ।

जब कपाटपुरम् पानीमें डूब गया तब पांड्य राजाओंकी नई राजधानी वर्तमान मदुरा नगरमें स्थापित हुई। पहले इस नगरका कोई दूसरा नाम था परन्तु तत्कालीन राजाने अपनी पुरानी राजधानीका नाम ही इस नई राजधानीको दिया। यहीं तृतीय या अन्तिम संघकी स्थापना हुई। कहते हैं कि यह संघ १८५० वर्षों तक सक्रिय रूपसे भाषाकी सेवा करता रहा। ऐतिहासिक प्रमाणोंसे विदित होता है कि यह संघ ईसाके बाद दूसरी सदी तक चला। संभव है उस समय पाण्ड्य राजाओंपर कोई महान संकट आया हो और इस कारणसे तृतीय संघका अन्त हो गया हो।

इस तरह प्राचीन तमिल साहित्यके तीन संघ-काल माने जाते हैं—प्रथम संघ-काल मध्य (द्वितीय) संघ-काल और अन्तिम (तृतीय) संघ-काल।

प्रथम संघ-कालकी कोई रचना उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है कि अगस्त्य मुनिने तमिल व्याकरणकी रचना की थी। उसका नाम "अगत्तियम्" है। बादके साहित्यमें इस "अगत्तियम्" से उद्धृत कई अंश सूत्र-रूप पाये जाते हैं। इन उद्धरणोंसे विदित होता है कि यह प्रथम संघकालकी रचना है।

दूसरे संघकालकी केवल एक रचना अब उपलब्ध है। उसका नाम है, "तोल काप्पियर" का तोलकाप्पियम्।" "तोलकाप्पियम्" व्याकरण ग्रन्थ है। "तोलकाप्पियर" का अर्थ है—"तोलकाप्पियम् वाले"। इसके रचयिताके सम्बन्धमें कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। माना जाता है कि ये जातिके ब्राह्मण थे और अगस्त्य मुनिके शिष्य थे।

"तोल काप्पियम्" शब्दके "काप्पियम्" को कुछ लोग "काव्य" का रूपान्तर मानकर "तोल काप्पियम्" का अर्थ प्रथम या पुराना काव्य करते हैं। इस आधारपर वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि तमिलके प्रथम काव्यमें ही संस्कृत शब्दका योग हुआ है उसके पूर्व तमिल भाषामें कोई रचना ही सम्भवतः नहीं रही। यह सिद्धान्त कुछ ठीक-सा नहीं लगता। "काप्पियम्" शब्द "काप्पु"—और "इयम्" इन दो शब्दोंसे बना हुआ सामासिक शब्द है। इसका अर्थ होता है "निवास रीति" "तोलकाप्पियम्" का अर्थ है प्रथम या प्राचीन निवास रीति।

तमिल भाषामें 'व्याकरण' को 'इलक्कणम्' कहते हैं। पर इलक्कणम्का क्षेत्र व्याकरणके क्षेत्रसे अधिक विस्तृत होता है। "इलक्कणम्" की उत्पत्ति संस्कृतके "लक्षणम्" शब्दसे हुई है। "अगत्तियम्" और "तोल्काप्पियम्" दोनों "इलक्कणम्" हैं। तमिल इलक्कणम्के तीन विभाग हैं—अक्षर विभाग, शब्द विभाग और विषय विभाग। प्रथम दो विभाग तो संस्कृत तथा अन्य भाषाओंके व्याकरणोंमें भी हैं, पर विषय विभाग तमिलका अपना एक विशेष विभाग है।

तमिल साहित्यमें मानव-बस्तीके पाँच भेद माने गए हैं— (१) कुरिंजी—अर्थात् पहाड़ी प्रदेश, (२) मुल्लै—अर्थात् वन प्रदेश, (३) मरुतम—अर्थात् उर्वर भूमि, (४) नेय्दल—अर्थात् समुद्रतीर और (५) पालै—अर्थात् मरु प्रदेश। इन पाँचों प्रदेशोंके निवासियोंके आचार-विचार और व्यवहारकी अलग-अलग रीतियाँ थीं। इन प्रदेशोंके विभिन्न व्यापारोंका वर्णन साहित्यमें किस प्रकार हो, किन व्यापारोंका वर्णन हो आदि "इलक्कणम्" के तीसरे (विषय) विभागका विषय है। साहित्यिक विषयके दो भाग माने गये हैं— अहं और पुरम। "अहं" का अर्थ "भीतरी" है। मनुष्यके अन्तःकरणमें उत्पन्न होनेवाले प्रेम, विश्वास, श्रद्धा, क्रोध, भय आदि भावोंका वर्णन इस 'अहं' नामक भागमें रहता था। "पुरम" का अर्थ बाह्य है। इसमें मनुष्यके प्रेमालाप, युद्ध, शासन आदि कार्य कलापोंका वर्णन रहता था। इन जैसी बातोंका निरूपण ही तोल्काप्पियम्के तीसरे विभागका विषय है और इसी परसे रचनाका नामकरण हुआ है।

तमिलमें स्वरको जीवाक्षर और व्यंजनको कायाक्षर कहते हैं। ये नाम बहुत ही सार्थक हैं। स्वरोंमें 'ऋ' नहीं है, अनुस्वार और विसर्ग नहीं हैं। 'ए' और 'ओ' दीर्घ हैं—इन दोनों अक्षरोंके ह्रस्व रूप भी तमिल भाषामें हैं। तमिल भाषामें एक विशेष स्वर ( ) है जिसका उच्चारण अक है। यह आधुनिक उच्चारण है पर मालूम पड़ता है कि प्राचीन कालमें यह स्वर व्यंजनके आगे या पीछे आकर उस व्यंजनके उच्चारणमें कुछ अन्तर पैदा कर देता था। तमिल वर्णमालामें संस्कृतके सभी वर्ण नहीं हैं। उन सभी वर्णोंको सूचित करनेके लिये तमिल लिपिसे मिलती-जुलती ग्रन्थाक्षर नामक लिपि प्रचलित हुयी है। इस लिपिके प्रचारका प्रभाव तमिल स्वर अक पर इतना पड़ा कि उसका लोप-सा हो गया।

तमिल वर्णमालामें व्यंजनोंकी संख्या बहुत कम है। नागरी वर्णमालाके क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग और प वर्ग—इन पाँच वर्गोंके पचीस व्यंजनोंके स्थानपर केवल दस व्यंजन हैं—हर वर्गका प्रथम और अन्तिम अक्षर व्यंजन है। तमिल भाषाके ये व्यंजन इस प्रकार हैं:—क ङ, च ञ, ट ण, त न, प और म। इनमें ङ ञ ण न और म के सम्बन्धमें कोई कठिनाई नहीं है। पर क च ट त और प का उच्चारण क्रमशः ग (और कभी-कभी ह) ज ड द और ब भी हो सकता है। जिस

अक्षरका कब कैसा उच्चारण होगा इसके लिए भी कुछ नियम हैं। तमिलमें य, र, ल और व ये वर्ण तो हैं पर श, ष, स और ह नहीं हैं। सम्पर्कजन्य प्रभावके परिणाम स्वरूप अब ये व्यंजन भी तमिलमें प्रचलित हो गए हैं।

तमिलमें चार नए व्यंजन हैं जो हिन्दीमें प्रचलित नहीं हैं। वे हैं ऴ ळ ऱ और ऩ।

ऴ द्रविड़ भाषाओंका एक विशेष व्यंजन है। आजकल यह अक्षर तेलुगु और कन्नड़ भाषाओंमें नहीं चलता है केवल तमिल और मलयालम भाषाओंमें प्रचलित है। ष के उच्चारणमें जो हल्का-सा मकार है उसके स्थानपर लकार लानेपर इस अक्षरका उच्चारण हो जाता है। तमिल शब्दका अन्तिम अक्षर यही है। इस अक्षरको सूचित करनेके लिए अन्य भाषाओंमें अक्षर नहीं है, इसलिए इसके स्थानपर लकारका उपयोग किया जाता है। "तमिल" शब्दका शुद्ध रूप "तमिऴ" है।

तमिल में हिन्दीका ल और मराठीका ळ दोनों प्रचलित हैं।

तमिलमें एक भारी "ऱ" होता है। इसका उच्चारण र के उच्चारणसे कुछ अधिक परुष है पर "ड़" नहीं है। इस व्यंजनकी एक विशेषता है—इसके द्वित्वका उच्चारण "ट्र" होता है।

तमिलमें एक विशेष "ऩ" है। "द" के बाद आनेवाले न और इस "ऩ" के उच्चारणमें अधिक भेद नहीं है। पर इसके लिए नियम है कि किस न का प्रयोग कहाँ करना चाहिए।

तमिल साहित्यके तीन विभाग हैं—इयल इशै और नाटकम्। मोटे तौरपर इयलको काव्य माना जा सकता है। इशै संगीत है और नाटकम नाटकका समानार्थी है। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन कालमें तमिलमें संगीत साहित्य और नाटक साहित्यकी भी बहुत उन्नति हुई थी। जब जैन और बौद्ध धर्मोंका प्राबल्य हुआ तब इन दोनों साहित्योंका नाश हुआ। संगीतकी एक प्राचीन परम्परा थी जो अब नहीं रही। इस परम्पराका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थोंमें मिलता है।

तमिल प्रदेशके चोल पांड्य और चेर—ये तीन प्राचीन राजवंश बहुत प्रसिद्ध हैं। आजकल तंजौर और तिरुचिरापल्ली जिलोंके नामसे प्रसिद्ध कावेरी नदीके पासका प्रदेश चोल राज्य था। इस प्रदेशके दक्षिणमें आजकल मदुरा रामनाथपुरम् और तिरुनेल्वेली कहलानेवाले जिलोंका प्रदेश पांड्य राज्य था। इन दोनों राज्योंके पश्चिममें आजकलके केरल प्रदेशके दक्षिणमें चेर राज्य था। ये तीनों प्रबल राज्य थे इनके अलावा अन्य कई छोटे मोटे राज्य थे। इन राजाओं और महाराजाओंका आश्रय पाकर कवियों और विद्वानोंने तमिलकी श्रीवृद्धि की। तमिल संघ मदुरा नगरमें था। हर कवि यह चाहता था कि उसकी कविताको संघकी मान्यता प्राप्त हो।

प्रथम संघकालके अगस्त्य-कृत "अगत्तियम्" के केवल कुछ उद्धरण अब प्राप्य हैं। द्वितीय संघ कालका केवल "तोलकाप्पियर" कृत "तोलकाप्पियम्" पूरा प्राप्य है। तृतीय संघ कालकी रचनाओंमें "एट्टु तोगै" "पत्तु पाट्टु" और "पदिनेण् कीष् कणक्कु" प्रधान हैं। "एट्टुत्तोगै" में आठ रचनाओंका संकलन है। "पत्तुपाट्टु" में दस रचनाओंका और "पदिनेण् कीष् कणक्कु" में अठारह रचनाओंका संकलन है। इन रचनाओंमें कई कवियोंकी वीर और शृंगार रस प्रधान कविताओंका संग्रह है। इस संघकालकी सर्वोत्तम रचना "तिरुक्कुरल" है। इसके रचयिता "तिरुवल्लुवर" हैं। "तिरु" शब्दका अर्थ "श्री" है। "वल्लुव" एक निम्न जातिका नाम है। यह चमार जातिके तुल्य मानी जाती है। "न" प्रत्यय वाला अर्थ सूचित करता है। "न" के स्थानपर आदर सूचित करनेके लिए "र" प्रत्यय जोड़ा जाता है। "तिरुवल्लुवर" शब्दका अर्थ "श्री चमार जाति-वाले" माना जा सकता है। यह विदित नहीं है कि उस कविका असली नाम क्या था। कविके नामकी विशेषताके अनुरूप ही रचनाका नाम भी है। *"कुरल" एक छन्दका नाम है। दोहेके सदृश दो चरण माने जायें तो "कुरल"* के दो ही चरण होंगे। "तिरुक्कुरल" का अर्थ "श्री कुरल छन्द" है। कविने अपनी रचना पूरी करके संघके सम्मुख पेश की। संघने उस रचनाको मान्यता देने योग्य नहीं माना। ऐसी किंवदन्ती है कि दैवी प्रेरणासे इस उत्तम रचनाको संघकी मान्यता प्राप्त हुई।

करीब दो हजार वर्ष पूर्व रचित इस तिरुक्कुरलका तबसे आजतक बराबर आदरपूर्ण अध्ययन किया जाता है।

करीब दस या बारह सदी पूर्व बहुतसे ईसाई दक्षिण भारतमें आ बसे थे। उन लोगोंने इस रचनामें ईसा मसीहके विचारोंका प्रतिबिम्ब पाया। उन लोगोंने तिरुवल्लुवरको ईसाई माना। बौद्धोंने उस महान कविको बौद्ध माना और जैनियोंने जैन माना। शैवोंने शैव माना और वैष्णवोंने वैष्णव। यहाँतक कि नास्तिकोंने उन्हें नास्तिक माना। इसमें जिन बातोंका प्रतिपादन हुआ है वे मनुष्य मात्रके लिए मान्य हैं। तिरुक्कुरलमें न किसी धर्मका निरूपण हुआ है न किसी धर्म-विशेषकी विशेषताओंका। इसमें मनुष्य मात्रके क्रियाकलापोंका निरूपण हुआ है।

तिरुक्कुरलके तीन खंड हैं—धर्म अर्थ और काम। इन तीनों क्षेत्रोंमें मनुष्यका आचरण जब पवित्र और पूर्ण बनता है, तब वह मोक्ष प्राप्त करता है। यह मोक्षकी स्थिति अवर्णनीय है केवल स्वानुभूतिसे ही इसका अनुभव किया जा सकता है। कबीरने "आतम अनुभव" ज्ञानकी जो बात कही है वह इस मोक्षकी बातसे मिलती जुलती है। धर्म खण्डमें गृहस्थ धर्म और यति धर्म दोनोंका निरूपण हुआ है। अर्थ खण्डमें राज्य शासन सेना संचालन मन्त्रीके कर्तव्य कर आदिका निरूपण है। काम

खण्डमें दाम्पत्य प्रेमके सभी व्यवहारोंका निरूपण है। परन्तु कोक शास्त्र या काम शास्त्रके नामसे प्रचलित ग्रन्थोंका-सा इसमें कुछ भी नहीं है। हर खण्डके कई अध्याय हैं और प्रत्येक अध्यायके दस कुरल (नामक छन्द) हैं। तीनों खण्डोंके कुल १३३ अध्याय और १३३० कुरल (नामक छन्द) हैं। पहला कुरल है —

अगर मुदल्‌ एल्‌त्तॆल्लाम्‌ — आदि
भगवन्‌ मुदट्रे उलगु।

अकारको लेकर ही अक्षरोंका प्रचलन है। आदि भगवानको लेकर ही लोकका प्रचलन है।

इस कुरलके आधारपर कुछ लोगोंकी कल्पना है कि कविकी माताका नाम 'आदि' और पिताका नाम 'भगवान' है। इस छन्दमें कविने अपने माता-पिताका स्मरण किया है। पर "आदि भगवन" का अर्थ अनादि परब्रह्म मानना ही उत्तम मालूम पड़ता है। यदि "सीय राममय सब जग जानी" के आधारपर तुलसीदासकी माताजीका नाम "हुलसी" माना जा सकता है तो इस कुरलके आधारपर "तिरु-वल्लुवर" के माता-पिता भी आदि और भगवान माने जा सकते हैं।

वृष्टिकी महिमा गाते हुए कवि कहते हैं —

तुप्पार्क्कुत्‌ तुप्पाय तुप्पाक्कित्‌ — तुप्पार्क्कुत्‌
तुप्पाय तूउम्‌ मऴै।

इसका सारांश इस प्रकार है—वृष्टि आहारके योग्य सब पदार्थोंकी सृष्टि करके स्वयं ही आहार बन जाती है।

इस रचनाको वेदके समान ही आदर प्राप्त है। सचमुच यह तमिल वेद कहलाता है। दो-ढाई सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारतमें इटली देशके कान्स्टेन्ज बेस्की नामक एक ईसाई धर्म प्रचारक रहते थे। उन्होंने इस रचनाका लैटिन भाषामें अनुवाद किया। आज इसका अनुवाद अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन तथा संस्कृतमें हुआ है।

संघ कालीन कवियोंमें कवयित्री "औवै" का नाम उल्लेखनीय है। अब "औवै" शब्द वृद्धाओंके प्रति आदर सूचित करनेके लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द है। ऐसा मालूम होता है कि तमिल भाषामें "औवै" नामकी दो-चार कवयित्रियाँ रही होंगी। इन कवयित्रियोंके नामसे प्राप्त रचनाओंमें शैलीका अन्तर पाया जाता है। "पुर नानूरु" "कुरुन्तोकै" "नट्रिणै" "अगनानूरु" आदि ग्रन्थोंमें इनकी कविताएँ पाई जाती हैं। कहा जाता है कि यह "अदियमान" नामक राजाके आश्रयमें रहती थी। इनकी रचनाओंमें राजाका यशगान भी है और सर्व-साधारणके उपयुक्त नीति भी है। इन्होंने कहा है "जाति इरण्डोऴिय वेरिल्लै" अर्थात्‌ जाति तो बस केवल दो हैं — दाता उत्तम जातिका है और न देनेवाला (अर्थात्‌ कंजूस) निम्न जातिका है। इनका आदेश है "कोडुप्पदु अऴुक्कुट्रेल्‌ कुट्रम्‌"

अर्थात् जहां मन्दिर न हो ऐसी बस्तीमें निवास मत करो। तमिल देशमें कोई नगर या गांव ऐसा नहीं जिसमें मन्दिर न हो। तमिल लोगोंने जहां-जहां नई बस्ती बसाई है, वहां-वहां मन्दिर निर्मित करनेका प्रबन्ध अवश्य कर लिया है।

कहा जाता है कि भगवान कुमारने इस कवयित्रीको दर्शन दिये थे। एक बार औवै कहीं जा रही थी रास्तेमें एक जामुनके पेड़पर एक बालक बैठा था। उससे कवयित्रीने कहा— बेटा कुछ जामुन तो गिराओ मैं खाऊंगी। लड़केने पूछा—नानी तुम गरम जामुन खाओगी या ठण्डे? कवयित्रीने कहा— बेटा क्या तुम दिल्लगी करते हो? कहीं जामुन भी गरम या ठण्डा होता है? लड़केने कहा—नानी! मैं अपनी नानीसे दिल्लगी न करूं तो और किससे करूं? अच्छा लो मैं तुम्हें गरम जामुन खिलाऊंगा। यह कहकर उसने पेड़की एक शाखा इस तरह हिलाई कि पके-पके जामुन जमीनपर टप-टप गिरने लगे। औवैके हाथमें एक भी जामुन नहीं गिरा। जामुन पके थे इसलिए उनपर मिट्टी लग गई थी। औवै एक-एक फलको चुन चुनकर और फूंक-फूंककर खाने लगी। लड़केने पूछा— नानी! जामुन है न गरम? नानीने कहा— नहीं बेटा! ये तो ठण्डे ही हैं। लड़केने कहा— नानी झूठ क्यों बोलती हो? यदि जामुन गरम नहीं है तो फूंक फूंककर क्यों खाती हो? औवै निरुत्तर हो गई। वह मनमें सोचने लगी—मुझे अपने ज्ञानका बड़ा गर्व था। आज इस बालकके सामने मैं मूर्ख सिद्ध हुई। यह बालक सचमुच ही प्रतिभाशाली है। उन्होंने सिर उठाकर पेड़की ओर देखा तो उन्हें उस पेड़पर कुमार भगवान (बाल-सुब्रह्मण्य) के दर्शन हुए।

संघ कालके एक और प्रसिद्ध कवि कपिलर हैं। कपिल नामके साथ आदर सूचक 'र' प्रत्यय जोड़कर बनाया गया 'कपिलर' शब्द तमिलमें बहुत प्रचलित है। ये कवि पारि नामक एक प्रसिद्ध दाताके आश्रयमें रहते थे। पारिकी दानशीलता पारि और कपिलरका सम्बन्ध तथा पारिके बाद उनकी कन्याओंके विवाहके लिए कपिलर द्वारा किए गए महान प्रयत्न आदिकी कई रोचक कथाएं तमिल प्रदेशमें प्रचलित हैं।

संघ कालीन अन्य कवियोंमें नक्कीरर, परणर, और कणियन पूंकुन्रनारके नाम उल्लेखनीय हैं।

संघ कालीन काव्योंके नाम तो बहुत दिनोंसे प्रचलित थे पर वे काव्य करीब पचास या साठ वर्ष पूर्वतक उपलब्ध नहीं थे। तमिल प्रदेशमें ताड़के पेड़ बहुत हैं और ताड़के पत्तोंपर लोहे-लेखनीसे लिखनेकी प्रथा अनादि कालसे प्रचलित है। आजकलके कागज और छापखानेके जमानेमें यह प्रथा बहुत कम हो गई है पर एकदम उठ नहीं गई। तमिल भाषाका सौभाग्य है कि इस बीसवीं सदीके आरम्भमें महामहोपाध्याय डॉ॰ उ॰ वे॰ स्वामिनाथ अय्यर नामक उत्तम साहित्यकार हुए। तमिल

साहित्यमें इनका करीब-करीब वही स्थान है जो हिंदी साहित्यमें आचार्य श्री महावीर प्रसाद द्विवेदीजीका है। इनके अनवरत प्रयत्नोंका ही परिणाम है कि अनेक प्राचीन कविताएँ प्रकाशित हो सकी। अपने अनुभवोंका उल्लेख करते हुए उन्होंने एक बार कहा था—"यह सिद्ध होता है कि तमिल देशमें अनेक प्रकारकी कलाएँ थीं और उनसे सम्बद्ध समृद्ध साहित्य था। ताड़ पत्रोंमें सुरक्षित कला-साहित्यको खोज-खोजकर प्रकाशित करना आवश्यक है। इन पत्रोंकी खोजमें जब मैं गया तब मैंने देखा कि पहली बार मैंने जो पाया था उसका बहुतांश दूसरी बार जानेपर नष्ट हो गया है। उस ताड़-पत्रका महत्त्व समझकर उसकी रक्षा करनेवाले उस समय नहीं थे। कुछ तो जर्जर हो गये और कुछ पत्र दिखलाई ही नहीं पड़े। इस बातको ध्यानमें रखते हुए मुझे कहना पड़ता है कि इस समय जो कुछ उपलब्ध है, उसको यत्न-पूर्वक सुरक्षित रखा जाय और विद्वानों द्वारा उसका अनुशीलन करवाकर उसे प्रकाशित कराया जाय तो अच्छा होगा।"

ब्रिटिश सरकारने श्री स्वामिनाथ अय्यरको महामहोपाध्यायकी उपाधिसे विभूषित किया था। जनता उनके प्रति अपना आदर व्यक्त करनेकी दृष्टिसे उन्हें "तात्ता" (बाबा) कहकर पुकारती थी। इस महानुभावकी कृपासे ही हमें संघकालीन अनेक रचनाओंके रसास्वादन‍ा अवसर प्राप्त हुआ है।

प्राचीन तमिल साहित्यके पाँच महाकाव्य और पाँच लघु काव्य प्रसिद्ध हैं। कई लोग इन्हें संघकालकी रचनाएँ मानते हैं। पंच महाकाव्य ये हैं—शिलप्पधिकारम्, "मणि मेखलै जीवक चिन्तामणि वलयापति और "कुण्डलकेशी"। इन काव्योंके समय तक तमिल प्रदेशमें बौद्ध और जैन धर्मोंका पर्याप्त प्रचार हो चुका था। इन काव्योंमें उन धर्मोंका प्रभाव प्रकट होता है।

शिलप्पधिकारम् नामक काव्यके रचयिता कविका नाम "इळंगो है। "इळंगो" शब्दका अर्थ "छोटा राजा है। यह कवि चेर राज्य (आज कलके केरल राज्यके दक्षिणका भाग) के राजा चेरन सेंगुट्टुवन" का छोटा भाई था। कहा जाता है कि स्वयं चेरन सेंगट्टुवन तो वैष्णव था पर उसका भाई कवि "इळंगो" जैन था। इन्होंने गृहस्थ जीवन त्यागकर संन्यास ग्रहण किया तब लोग इन्हें "इळंगो अडिगळ" कहने लगे। इन शिलप्पधिकारम्" काव्यकी विशेषता यह है कि इसमें तत्कालीन चोल पाण्ड्य और चेर—तीनों राज्योंका वर्णन है। इस काव्यकी कथावस्तु अत्यन्त लोकप्रिय है। संक्षेपमें इस काव्यकी कथा वस्तु इस प्रकार है —

समुद्रसे कावेरी नदीका जहाँ संगम होता है वहाँ "पुहार" या कावेरी पूम्पट्टिनम् नामक एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था। (उस स्थानपर अब कावेरि पूम्पाट्टिनम् नामक छोटा-सा ग्राम है।) वहाँके एक धनी वैश्यके पुत्र कोवलन

धर्मियोंका वे मिलकर सामना करते थे। इस उद्देश्यमें उन्हें बड़ी सफलता मिली। अब तमिल प्रदेशमें बौद्धोंकी संख्या नगण्य है। यद्यपि जैनियोंकी संख्या वैसे कुछ अधिक है पर जनसंख्याकी दृष्टिसे अनुपाततः यह बहुत ही कम है। भक्ति कालके शैव और वैष्णव कवियोंने अपनी अमृतवाणीकी वर्षाकर जनतामें नई जागृति पैदा की। ऐसा माना जाता है कि संघ कालमें ही कुछ भक्त कवियोंकी रचनाएँ शुरू हो गई थीं।

भक्तिकालके शैव कवि "नायन् मार" और वैष्णव कवि 'आळ्वार' कहलाते हैं। नायनमार" का अर्थ पिता लोग अथवा नेता गण है। "आळ्वार" का अर्थ पालन करनेवाले हैं। कुछ लोग "आळ्वार" के आपवार" मानकर उन महान कवियोंको भक्ति रसमें डूबनेवाले मानते हैं। पर "आळ्वार" शब्द ही शुद्ध है।

वैसे तो नायनमार ६३ हैं। पर इनमें चार बहुत प्रसिद्ध हुए हैं —माणिक्क वाचकर, तिरु ज्ञानसम्बन्धर, अप्पर और सुन्दरर।

सब नायनमारोंमे पुराने माणिक्क वाचकर हैं। कुछ लोग इनको संघ कालीन मानते हैं। ये जातिके ब्राह्मण थे। ये पाण्ड्य वंशके किसी राजाके मन्त्री थे। अपना सुख भोग त्याग कर शिव मन्दिरोंकी यात्रा करते फिरते थे। जगह जगह मन्दिरोंके अधिष्ठाता देवोंकी स्तुति गाते थे। उन्हीं गीतोंका संकलन "तिरु वाचकम्" के नामसे प्रसिद्ध है। तिरु का अर्थ तो श्री है वाचकम् रचनाके नामसे कविका वाचकर (माणिक्क विशेषण युक्त)नाम हुआ या कविके नामसे रचनाका यह नाम हुआ—यह एक समस्या ही है। इनकी एक और रचना "तिरु कोवैयार" है। इसमें सूफियोंकी तरह परमात्माका प्रेमिकाके रूपमें और जीवात्माका प्रेमीके रूपमें वर्णन हुआ है। तमिल और उसका साहित्य" नामक अपने ग्रन्थमें श्री पूर्णम् सोमसुन्दरमने लिखा है कि एक प्राचीन तमिल काव्यमें सूफी मतकी यह छाया आश्चर्यजनक है।

तमिलके भक्ति-रस-पूर्ण गीतोंमें "तेवारम्" और "तिरुवाचकम् का स्थान बहुत ऊँचा है। दक्षिण भारतके सभी शिव मन्दिरोंमें इन गीतोंका गायन प्रायः प्रति-दिन होता है। यद्यपि शास्त्रीय संगीत और इन गीतोंका संगीत वस्तुतः एक ही है तो भी इन दोनोंके गानकी रीतिमें कुछ अन्तर अवश्य है। तमिल प्रदेशके मन्दिरोंमें प्रति वर्ष दस दिनका मेला लगता है। उन दिनोंमें प्रति दिन दो बार—सवेरे और रातको भगवानकी मूर्ति जुलूसमें कार्ड जाती है। इन जुलूसमें प्रधान मूर्तिके पीछे वेद पारायण करनेवाले आते हैं और उनके पीछे भक्ति-भावपूर्ण तेवारम्" आदि गीत गानेवाले आते हैं। इन गीतोंका श्रवण कर लोग भक्तिमें विभोर हो जाते हैं। शास्त्रीय संगीतके श्रवणमें मनमें भक्ति-अनुभावनाकी अपेक्षा कानोंको ही

अधिक आनन्द प्राप्त होता है। तिरुवाचकम् तो माणिक्क वाचकरकी रचना है— तेवारम् तिरु ज्ञान-सम्बन्धर अप्पर और सुन्दरर की रचनाओंका संग्रह है। "देव हारम्" का तमिळ रूप तेवारम् है। ये सब भक्त नायनमार भिन्न-भिन्न तीर्थ स्थानोंकी यात्रा करते थे उन उन स्थानोंकी महिमा बराबर गाया करते थे। इन गीतोंके कारण वे स्थान महिमान्वित हुए। इस कारणसे वे स्थान "पाडल पेट्र स्थलम्" अर्थात् गीत-प्राप्त स्थल कहलाते हैं। ऐसे तथा अन्य भक्ति भावपूर्ण गीतोंका संकलन ही तेवारम् है। समयकी दृष्टिसे इस तेवारम्के तीनों रचयिताओंमें पहले अप्पर हुए, उनके बाद तिरुज्ञान सम्बंधर हुए और उनके बाद सुन्दरर।

अप्पर पहले जैन थे पर बादमें वे शैव बन गए। उस समयका राजा जैन था। उसने अप्परको बहुत सताया। किंतु शैव धर्मके प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। सांसारिक सुख-दुखोंकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। अप्परको तिरु नावुक्करसु" भी कहते हैं। इसका अर्थ है "श्री जिह्वा राज"। उनकी कविताएँ उत्तम कोटीकी थी। उनकी कविताओंपर मग्न होकर एक बार तिरुज्ञान सम्बंधरने उन्हें "अप्पर" अर्थात् "हे पिताजी" कहकर पुकारा इसलिए उनका अप्पर नाम पड़ा। इस कविकी प्रसिद्ध उक्ति है "नामार्कुम कुडि अल्लोम नमनै अंजोम्" अर्थात् हम किसीकी (अधीनतामें रहनेवाली) प्रजा नहीं हैं हम यमसे डरते नहीं हैं। पन्द्रह सौ साल पूर्वके कविकी यह उक्ति स्वतन्त्रता-प्राप्तिके आन्दोलनमें एक उत्तम नारेके काममें आई।

तिरुज्ञान सम्बन्धरके सम्बन्धमें कहानी है कि इनकी माता अपने शिशुको एक तालाबके किनारे छोड़कर उसमें स्नान करने गई। शिशु भूखके मारे बहुत रोया पर माताका ध्यान उस ओर नहीं गया। वे स्नान करनेमें ही मग्न थीं। तब स्वयं भगवतीने आकर शिशुको स्तन-पान कराया। भगवतीके स्तनोंका पान करते ही वह शिशु भावपूर्ण गीत गाने लगा। साक्षात् भगवतीसे उसका सम्बन्ध हुआ इसलिए शिशुका नाम सम्बन्धर हुआ। ये जातिके ब्राह्मण थे और इन्होंने वेदोंका सांगोपांग अध्ययन किया था। इसलिये तो वे प्रकाण्ड विद्वान थे ही। इनकी रचनाओंमें स्वाभिमानका भाव झलकता है।

अप्पर और ज्ञान सम्बन्धरके कई सौ वर्ष बाद सुन्दररका काल आता है। वे स्वयं अच्छे कवि थे। अपने समयके पूर्व जो कवि हुए, उनकी कविताओंकी रक्षाका उन्होंने प्रबन्ध किया।

सेक्किळार नामक एक और कवि हुए हैं जिन्होंने पेरिय पुराणम् (बृहत् पुराण) की रचना की। इस पुराणमें सभी शैव कवियोंका जीवन वृत्तान्त है।

तिरुमूलर नामक एक अन्य शैवने "तिरु मन्तिरम्" (श्रीमन्त्र) नामकी एक स्तुति ग्रन्थकी रचना की। इस स्तुतिमें शिव-महिमाकी तीन हजार कविताओंका संग्रह है।

प्राचीन शैव भक्तोंका नाम लेते हुए नन्द का नाम लेना आवश्यक है। इनकी कोई रचना उपलब्ध नहीं है पर तमिल प्रदेशके शैव-भक्त सन्तोंमें इनका स्थान बहुत ऊँचा है। इनकी कहानीके आधारपर उन्नीसवीं सदीमें गोपाल कृष्ण भारती नामक साहित्यकारने नन्दन चरित्तिरम् (नन्द-चरित्र) नामक एक चरित्र-ग्रन्थ लिखा जो बहुत ही लोकप्रिय हुआ। नन्द जातिका अछूत था। अछूत जातिका आराध्य-देव ब्राह्मणोंके देवसे भिन्न था। पर अछूत नन्दकी श्रद्धा "ब्राह्मणोंके देव" चिदम्बरम्‌के नटराजपर हुई। वे चिदम्बरम् जानेको अत्यन्त आतुर थे। एक ब्राह्मण जमींदारके अधीन खेतीका काम करते थे। ब्राह्मण जमींदार भला अछूत दासको चिदम्बरम् जानेकी अनुमति कैसे देते। पुनके पक्के नन्द अपना पवित्र उद्देश्य छोड़नेको भी तैयार नहीं थे। वे अपने मालिककी इच्छाके साथ सेवा करते थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि मैं कल तो अवश्य ही मालिक की अनुमति पाकर चिदम्बरम् जाऊँगा। चिदम्बरम् जानेके लिए वे प्रति दिन कल कल कहते थे इस कारणसे उनका नाम "तिरु नाळै पोवार" पड़ा। "नाळै" का अर्थ तमिलमें "आगामी कल" है और "पोवार" का अर्थ "जाएँग" है। अर्थात् उनका नाम ही "कल जाएँगे" पड़ गया। उनका चरित्र सत्य और अहिंसाकी विजयका सुन्दर प्रमाण है।

शैव भक्तोंमें कुछ महिलाएँ भी थी।

"आळ्वार" नामक वैष्णव भक्त कवियोंकी संख्या बारह है। इन बारहों भक्त कवियोंकी रचनाओंका संग्रह "नालायिर प्रबन्धम्" (चार हजार प्रबन्ध) कहलाता है। पोय्गै आळ्वार" "पूदत्ताळ्वार" (भूतताळ्वार) और "पेयाळ्वार" प्रथम तीन आळ्वारके नामसे प्रसिद्ध हैं। नालायिर प्रबन्धम्‌का हर प्रकरण (अध्याय) "तिरुवन्दादि" नामसे प्रसिद्ध है। ये तीनों आळ्वार उक्त प्रबन्धम्‌के प्रथम तीन तिरुवन्दादियोंके कवि हैं। इन तीनोंका जन्म क्रमशः कांची पुरम महा बलिपुरम और मयलापुरममें हुआ। जिस दिन पोय्गै आळ्वारका जन्म हुआ था उसके दूसरे ही दिन पूदत्ताळ्वारका जन्म हुआ और तीसरे दिन पेयाळ्वारका जन्म हुआ। ऐसा माना जाता है कि ये तीनों आठवीं सदीमें हुए थे।

इन तीन आळ्वारोंके सम्बन्धमें एक रोचक कहानी इस प्रकार है —मद्राससे करीब डेढ़ सौ मील दक्षिण-पश्चिमकी दिशामें "तिरु कोविलूर" नामक एक प्रसिद्ध तीर्थ है। पोय्गै आळ्वार एक दिन इस तीर्थमें रास्तोंपर चल रहे थे। उस समय जोरका पानी बरसने लगा। वे एक झोपड़ीके अन्दर पहुँच गए। वह झोपड़ी बहुत ही छोटी थी। उसमें उनके लेटने भरके लिए स्थान था। वे लेटे ही थे कि एक सज्जन वहाँ आ पहुँचे। आगत महाशयसे पूछनेपर मालूम हुआ कि वे पूदत्ताळ्वार थे। स्थानाभावके कारण दोनों बैठे रहे और बैठे-बैठे ही दोनों भगवत् चर्चा

करने लगे। इस बीचमें एक और सज्जन वहाँ आ पहुँचे। वे पेयाळ्वार थे। झोपड़ीमें तीन लोगोंके बैठनेके लिए स्थान नहीं था इसलिए तीनों खड़े-खड़े भगवत् चर्चामें मग्न हो गए। इधर ये तीनों महात्मा भगवच्चर्चामें तल्लीन थे और उधर वृष्टिके कम होनेके कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे। अचानक उस झाड़ीमें एक अपूर्व ज्योति दिखाई दी। यह ज्योति भगवान विष्णुकी थी। तीनों आळ्वारोंने एक साथ भगवान विष्णुके दर्शन पाये। इस अपार आनन्दमें हरएकने सौ-सौ गीत रचे। ये ही गीत तिरुवन्तादि कहलाते हैं।

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि पेरियाळ्वार छठी सदीमें हुए थे। परन्तु उनको आठवीं सदीमें हुआ मानना ही उचित होगा। ये रामनाथपुरम् जिलेके श्री विल्लिपुत्तूरके निवासी थे। ये "भट्टर पिरान (ब्राह्मण-महाराज) और "विष्णु चित्तर" भी कहलाते थे। उन्होंने श्रीकृष्णको ही अपना इष्ट देव माना। उनकी कविताओंमें श्रीकृष्णके शैशवका बहुत ही सुन्दर वर्णन हुआ है। इनका धंधा था—भगवानको पूमालै (पुष्प हार) और पामालै (कविताका हार) अर्पित करना। एक दिन वे फूल लाने पुष्प वाटिकामें पहुँचे। वहाँ तुलसीके पास उन्हें एक शिशु पड़ा हुआ मिला। अपने घर लाकर उन्होंने उसका पालन पोषण किया। वही शिशु आगे चलकर "आण्डाळ" नामक आळ्वार हुई।

"आण्डाळ" का अर्थ है वह जिसने पालन किया। अन्तिम ळ स्त्री सूचक प्रत्यय है। भगवानको फूलोंकी माला अर्पण करते-करते आण्डाळका भगवानसे प्रेम हो गया। वह भगवानको ही अपना पति मानती थी। भगवानको अर्पण करनेके लिए जो फूलकी माला तैयार करती थी उसको स्वयं पहले पहनती थी और उसके बाद भगवानको पहनाती थी। इस बातका जब पता चला तब पहले तो लोगोंने उसपर आक्षेप किया। पर शीघ्र ही विदित हो गया कि भगवानको उसकी पहनी हुई माला ही पसन्द है। तबसे आण्डाळका नाम "सूडि कोडुत्त नाच्चियार" (पहनकर देनेवाली नायिका) पड़ा।

पाडि कोडुत्ताळ नर्पा मालै—पूमालै
सूडि कोडुत्ताळै सोल्लु।

अर्थात् कविताएँ तो गा करके पहनाईं (चढ़ाईं) और फूलकी माला धारण करके पहनाई।

तिरुमंगै आळ्वार एक और आळ्वार थे। ये सेनापति थे। ये शैव भक्त अप्पर के समकालीन थे। तिरुमंगै भी अप्परके घनिष्ठ मित्र थे। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि दक्षिण भारतमें—विशेष रूपसे तमिल प्रदेशमें शैव और वैष्णवोंमें संघर्ष बहुत कम हुए। उन धर्मोंका सामान्य उद्देश्य था—बौद्ध

और जैन धर्मका खण्डन करना। तिरुमंगै आळ्वारने दसों अवतारोंकी और विशेष रूपसे रामावतारकी महिमा गाई है।

आळ्वारोंमें नम्माळ्वारका स्थान बहुत ऊँचा है। इनकी कविताओंको "तिरुवाय मोऴि" (श्रीमुख वचन) कहते हैं। इनका जन्म तिरुनेल्वेली जिलेके आळ्वार तिरुनगरी नामक नगरमें हुआ। कहा जाता है कि बालकपनमें इन्होंने इमलीके पेड़के नीचे बैठे-बैठे कठिन तपस्या की और इनपर भगवान हरिकी कृपा हुई। इनकी कविताएँ सुमधुर और तत्त्वज्ञानसे पूर्ण हैं।

आळ्वारोंमें अन्तिम कुलशेखर आळ्वार थे। वे केरलके राजा थे। उनकी कविताओंमें राम और कृष्ण दोनोंकी स्तुति है। इनकी मुकुन्द माला" नामक संस्कृत पद्यावली बहुत प्रसिद्ध है। इनका काल दसवीं सदी माना जाता है।

अन्य चार आळ्वारोंमें "मधुर कवि आळ्वार" तिरुप्पाणाळ्वार" "तोण्डरडिप्पोडि आळ्वार" और "तिरु मऴिसै आळ्वार" की गणना होती है।

आळ्वारोंका काल दसवीं सदीके करीब समाप्त होता है। इसके बाद वैष्णव सम्प्रदायके "आचार्यों का काल आरम्भ होता है। आळ्वार लोग उत्तम कवि थे ज्ञानी थे और भगवानके दर्शन पाये हुए थे। आचार्य लोग टीकाकार थे। वे आळ्वारोंके विचारोंका जन साधारणमें प्रचार करते थे। आचार्योंमें प्रथम "नाथमुनि" थे उनके बाद यामुनाचार्य और उनके बाद "रामानुजाचार्य" हुए। नाथमुनिने ही आळ्वारोंके गीतोंके संग्रहकर दिव्य प्रबन्धम् के नामसे सम्पादन किया था। यामुनाचार्य नाथमुनिके पौत्र थे। वे बचपनसे ही बड़े प्रतिभाशाली थे। कहते हैं कि चोल राजाके यहाँ एक पंडित था। उसने तत्कालीन सभी पण्डितोंको परास्तकर दिया था। वह उन सबोंसे कर वसूल करता था। जब उसके आदमी यामुनाचार्यके गुरुसे कर माँगने आए, तब संयोगवश गुरु अनुपस्थित थे। यामुनाचार्यने कर देनेसे इनकार कर दिया। इसपर पंडित बहुत रुष्ट हो गया और यामुनाचार्यको डराने-धमकाने लगा। पर यामुनाचार्य जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने कहा कि शास्त्रार्थमें मुझे परास्त करके ही आप कर वसूल कर सकते हैं। इसपर दोनोंमें शास्त्रार्थ हुआ और पंडित महोदय परास्त हुए। चोल राजाकी रानी पहलेसे ही उस पंडितसे अप्रसन्न थी। वह यामुनाचार्यसे बहुत प्रसन्न हो गई। वह उनको अपने पास बुलाकर उनकी पीठ सहलाती हुई बोली—तू "आळवंदार" है अर्थात् "पालनेके लिए आया हुआ" है। तबसे यामुनाचार्यका नाम "आळवन्दार" पड़ा। श्री आळवंदार संस्कृतके भी अच्छे विद्वान थे।

सभी आचार्योंमें रामानुजाचार्य सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। वे विशिष्टाद्वैतके प्रवर्तक हैं। शंकराचार्यने ब्रह्मसूत्र उपनिषद् और भगवद्गीताका भाष्य रचकर अद्वैत तत्त्वका प्रतिपादन किया था। रामानुजाचार्यने भी उन्हीं तीनोंका भाष्य

रचकर विशिष्टाद्वैतका प्रतिपादन किया। रामानुजाचार्यके बाद मध्वाचार्यने भी इन्हीं तीनोंका भाष्य रचकर द्वैत तत्त्वका प्रतिपादन किया।

रामानुजाचार्यका जन्म श्री पेरम्बूदूरमें हुआ। यह मद्रास शहरके पश्चिममें करीब पचीस मीलपर है। शिक्षा प्राप्त करनेके लिए वे कांचीपुरम् गए। शिक्षा कालमें ही उनका अपने गुरुसे मतभेद हो गया। ब्रह्मसूत्रके वे अपने गुरु द्वारा बताये गए अर्थका खंडन करते थे। गुरु इस बातको लेकर शिष्यसे बहुत रुष्ट हुए और उन्होंने शिष्यको मार डालने तकका प्रयत्न किया पर रामानुजाचार्य किसी तरह बच गए। कई वर्ष बाद जब उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गई तब तो गुरु महाराज उनके अनुयायी बन गए।

रामानुजाचार्यकी कीर्तिसे परिचित होनेपर यामुनमुनिने उनसे मिलना चाहा। उन्होंने अपने एक शिष्यको कांचीपुरम् इसलिए भेजा कि वह रामानुजाचार्यको बुला लाए। पर उन दोनोंके पहुँचनेसे पहले ही यामुनमुनिका देहान्त हो गया था। देहान्तके बाद भी उनके एक हाथकी तीन उँगलियाँ मुड़ी ही रह गई थीं। इसका मर्म किसीको मालूम नहीं हुआ। रामानुजाचार्य जब श्रीरंगम् पहुँचे तब यह देखकर वे समझ गए कि यामुनमुनिकी तीन इच्छाएँ पूरी नहीं हुईं। उन्होंने कहा—"यामुनमुनिकी बड़ी इच्छा थी कि ब्रह्मसूत्र उपनिषद् और भगवद्गीताका भाष्य रचा जाए। उनकी इन तीन इच्छाओंको पूरा करना उनके शिष्यका कर्तव्य है। इन तीनोंका भाष्य अब मैं लिखूँगा।" उनकी इस प्रतिज्ञाके बाद यामुनमुनिकी वे तीनों उँगलियाँ सीधी हो गईं।

यामुनमुनिके शिष्यके साथ भी रामानुजाचार्य कांचीपुरम्में रहते थे। दोनोंकी पत्नियोंमें बार-बार झगड़ा हो जाता था। इसपर यामुनमुनिके शिष्य तो श्रीरंगम् चले गए और रामानुजाचार्य गृहस्थ-जीवन त्यागकर संन्यासी बन गए। वे बहुत दिनों तक श्रीरंगम्में रहते रहे। वहाँके मन्दिरके दैनिक कार्यक्रमोंका उन्होंने सुव्यवस्थित प्रबन्ध किया। वे अपने विशिष्टाद्वैतका खूब प्रचार करते थे। अपनी विद्वत्ताके प्रभावसे अनेक अद्वैतवादियोंको उन्होंने अपना अनुयायी बना लिया था। उस समयका चोल राजा रामानुजके सिद्धान्तोंको नहीं मानता था। उसने रामानुजाचार्यको अपने पास बुलाया। पर रामानुज नहीं गए। वे चोल राज्यको छोड़कर मैसूरकी ओर चल गए और मेलकोट्टै नामक एक तीर्थस्थलमें रहने लगे। तत्कालीन राजाकी सहायता पाकर उन्होंने वहाँ श्री नारायणका मन्दिर बनवाया। आज भी इस मन्दिरके वार्षिक महोत्सवमें मैसूरके महाराजा सक्रिय सहयोग देते हैं।

रामानुजके दो प्रधान शिष्य थे। एकका नाम था "वेदान्त देशिकर" और दूसरेका "मणवाल मामुनि"। यद्यपि दोनों एक ही गुरुके शिष्य थे और

विशिष्टाद्वैतके सिद्धान्तको मानते थे फिर भी दोनोंने दो भिन्न सम्प्रदाय बनाए। वेदान्त देशिकरने 'वड़ कलै' (उत्तरी कला) सम्प्रदाय चलाया और मनवाल मामुनिने तेन कलै (दक्षिणी कला) सम्प्रदाय चलाया। वेदान्त देशिकर वेदोंको महत्व देते थे। वे वेद पारायणके समर्थक थे। मनवाल मामुनि आळ्वारोंके दिव्य प्रबन्धको महत्व देते थे और मन्दिरोंमें उसीका पाठ करानेके पक्षपाती थे।

इसमें संदेह नहीं कि दक्षिणमें शैवों और वैष्णवोंके बीचमें संघर्ष हुए। परन्तु वैष्णवोंके इन दोनों सम्प्रदायोंके बीचमें कम संघर्ष नहीं हुए। इन संघर्षोंकी प्रतिध्वनि कहीं-कहीं आज भी सुनाई पड़ती है।

इन भक्त कवियोंके साथ-साथ अन्य अनेक कवि अपने अपने ढंगसे काव्यकी रचना करते थे। इनमें "जयम कोण्डार" (जय-प्राप्त) नामक कविका नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने "कलिंगत्तु परणि" नामक काव्य रचा। "परणि" हिन्दीके रासो" के समान मानी जा सकती है। इसलिए कलिंगत्तु परणि" को हम "कलिंग रासो" मान सकते हैं। मालूम पड़ता है कि अभागा कलिंग राज्य उत्तर दक्षिण दोनों ओरसे शत्रुओंका लक्ष्य बना। तमिल देशके राजाओंने कलिंगपर जो आक्रमण किया उसीका वर्णन "कलिंगत्तु परणि" का विषय है। इस कविका अनुकरणकर अन्य कवियोंने भी परणि" काव्य रचे।

ग्यारहवीं सदीमें तमिल साहित्यके चमकते हुए नक्षत्र कम्ब" का उदय हुआ। वे चोल राज्यके निवासी थे। तंजाऊर जिलेके तेरिषन्नूर नामक गाँवमें उनका जन्म हुआ था। उन्होंने अपनी मातृभाषाके साथ-साथ संस्कृतका भी गहरा अध्ययन किया था। उनको "शडयप्प" नामक दाताका आश्रय मिला था। इस आश्रयदाताकी प्रशंसा उन्होंने अपनी रामायणमें की है। उनके जीवन-कालमें उनकी कीर्ति फैल गई। बड़े-बड़े राजा-महाराजा उनके आगमनसे अपनेको धन्य मानते थे। उन्होंने अपनी रचनाके लिए कथा वस्तु तो वाल्मीकिसे ली पर उसको ऐसे साँचेमें ढाला कि उनकी रामायण वाल्मीकि रामायणसे एकदम स्वतन्त्र-सी बन गई। कम्बके पूर्व भी तमिलमें रामायणकी रचना हो चुकी थी। संघकालकी एक तमिल रामायणका उल्लेख भी हुआ है। किसी जैन कविकी रामायणका भी उल्लेख है। पर कम्बकी रामायणके सामने वे सारी रचनाएँ सूर्योदयके बादके नक्षत्र तुल्य बन गई। आज विश्व साहित्यमें कम्ब रामायणको एक आदरणीय स्थान प्राप्त है।

रामायणकी रचनामें कवि कम्बने इस बातका ध्यान रखा कि यह पूर्ण रूपसे तमिल काव्य हो। अयोध्याका वर्णन तो किसी तमिल नगरका-सा हुआ है। सरयूका वर्णन नाम मात्रके लिए सरयूका है—पर सचमुच है कावेरीका। तमिल भाषाके वर्तमान कवियोंमें सुप्रसिद्ध नामक्कल रामलिंगम पिल्लैने इस सम्बन्धमें कहा है —

"संस्कृतमें भी रामायण है और तमिलमें भी है। तमिल रामायणकी रचना संस्कृत रामायणके आधारपर ही हुई है। दोनोंमें रामावतारकी ही कहानी है। पर तमिल रामायण संस्कृत रामायणसे एकदम भिन्न है। अवतारके संकल्पसे लेकर राज्याभिषेक तककी प्रत्येक घटनामें कम्बकी कृति वाल्मीकिकी कृतिसे भिन्न है। वाल्मीकि रामायणमें जिस रामका सामान्य मानवके रूपमें वर्णन हुआ है, वह कम्ब रामायणमें आदि-मध्यान्त-रहित परमात्माके रूपमें वर्णित है। जहाँ संस्कृत रामायणमें सीता रावण द्वारा केश पकड़कर उठाई गई अतः अपमानित भी की गई बताई गई है, वहाँ तमिल रामायणमें सती सीताको छूनेका साहस किसीमें नहीं था ऐसा वर्णित है। वाल्मीकि-रामायणमें अहिल्या जान-बूझकर अपना सतीत्व नष्ट करनेवाली बताई गई है। कम्बकी रामायणमें वह निर्मल मनवाली दोष-रहित सती साध्वीके रूपमें चित्रित हुई है। वाल्मीकि रामायणमें बताया गया है कि जब लक्ष्मण सुग्रीवसे मिलने किष्किन्धा गए तब रामके हाथों मृत्यु-प्राप्त वालिकी पत्नी तारा मद्यपान करके सुग्रीवके साथ कामक्रीड़ा करती थी। पर तमिल रामायणमें बताया गया है कि वहाँ तारा लक्ष्मणका क्रोध शान्त करनेके लिए वैधव्यके सारे लक्षणोंसे युक्त होकर आई और उसको देखकर लक्ष्मणने सोचा— हमारी माताएँ भी अब (पिता दशरथके देहान्तके बाद) ऐसी ही रहती होंगी। इस तरह वाल्मीकि रामायणका हर पात्र आवश्यकता और औचित्यके अनुसार तमिलके साँचेमें ढाला गया है।"

तमिल भाषाका पोषण केवल राजा-महाराजाओंने ही नहीं बल्कि धार्मिक मठों और मठाधीशोंने भी किया है। ऐसे मठोंमेंसे एक है "तिरुप्पनन्दाल काशीवासी मठ"। तंजौर जिलेके तिरुप्पनन्दाल नामक गाँवमें यह मठ स्थित है। उस मठके प्रथम मठाधीश करीब अकबरके समयमें काशीमें जाकर रहते थे। इसलिए उस मठका "काशीवासी मठ" नाम पड़ा। कहा जाता है कि उस मठाधीशने काशीमें कम्ब रामायणके प्रवचनोंका प्रबन्ध किया था और सम्भव है तुलसीदासपर उन प्रवचनोंका प्रभाव पड़ा हो। इसके लिए प्रमाणस्वरूप यह कहा जाता है कि आर्य सम्प्रदायमें विवाह या स्वयंवरके पूर्व वर-वधूको केवल गांधर्व-विवाहमें मिलनेका— एक दूसरेको देखनेका—अवसर मिलता है। वाल्मीकि रामायणमें धनुष-यज्ञके पूर्व सीता और रामके मिलनेका कोई वर्णन नहीं है। द्रविड़ सम्प्रदायमें पहले नायक-नायिका एक दूसरेको देखकर रूप-गुणोंसे मोहित होते हैं और उसके बाद विवाह-सूत्रमें बँधते हैं। कम्बने अपने देशाचारके अनुसार स्वयंवरके पूर्व ही राम और सीताको परस्पर दर्शनका मौका दिया। तुलसीदासने भी राम और सीताको ऐसा मौका दिया है। उन्होंने सीता और रामको एक ही समय पुष्पवाटिकामें पहुँचाया है। तुलसी और कम्बकी रामायणमें कई अन्य स्थानोंमें भी विशेष प्रकारकी समानताएँ पाई जाती हैं।

यहाँ इस चर्चामें हमें नहीं पड़ना है कि कम्बका तुलसीपर प्रभाव पड़ा था या नहीं। इतनी बात अवश्य है कि वाल्मीकि कम्ब और तुलसीकी कृतियोंका

टीका इतनी अच्छी है कि लोगोंका यह विश्वास है कि स्वयं तिरुवल्लुवरने नया जन्म लेकर परिमेलअगर नामसे अपनी ही रचनाओंकी टीका की है।

"नच्चिनार्क्किनियर" एक प्रसिद्ध टीकाकार थे। वे तामिलके अच्छे पारखी थे। आपने वैदिक बौद्ध और जैन धर्मोंके सिद्धान्तोंका अध्ययन करके तीनों धर्मोंके सूक्ष्म तत्वोंका परिचय प्राप्त किया। इन्होंने "तोल काप्पियम्" "जीवक चिन्तामणि" आदि कई रचनाओंकी टीकाएँ लिखी हैं।

पेरिय वाच्चान पिळ्ळै"ने आळ्वारोंके नालायिर प्रबंधम्की टीका लिखी है। उनकी भाषा तमिल और संस्कृत मिश्रित मणिप्रवाल (खिचड़ी) शैलीकी थी।

तमिल साहित्यमें "सिद्ध कवियों" की (सिद्ध कवि) एक परम्परा चली है। इन सिद्ध कवियोंको हिन्दी साहित्यके सन्त कवियोंके समान माना जा सकता है। इन कवियोंकी भाषा सुसंस्कृत उच्च शैलीकी न होकर जन-साधारणकी बोलीकी शैलीकी थी। सिद्ध कवि एकेश्वरवादी थे। वे शिवको ही परब्रह्म मानते थे। वे योग साधनापर अधिक जोर देते थे। कई सिद्ध कवि अपनी करामातोंके लिए प्रसिद्ध थे। कई कवि रासायनिक प्रयोगोंमें अभिरुचि रखते थे। वे बाह्याचारोंका खंडन कर सच्चे मनसे ध्यान करनेकी शिक्षा देते थे। ऐसा माना जाता है कि सिद्ध कवियोंकी परम्परा अगस्त्यके कालसे ही चली आई है। स्वयं अगस्त्य एक सिद्ध कवि माने गए हैं। अठारहवीं सदीमें "तायुमानवर" नामक एक कवि हुए थे। उनकी एक रचना "सित्तर गणम्" है। उसमें उन्होंने सिद्ध कवियोंका परिचय देते हुए नाथ सम्प्रदायके कई हिन्दी कवियोंका परिचय दिया है। तमिल भाषाके सिद्ध कवि अठारह हैं। इनमेंसे "पाम्बाट्टि सित्तर" "कुदम्ब सित्तर" "अहप्पै सित्तर" और "शिवचाक्कियर" ये बहुत प्रसिद्ध हैं।

सिद्ध कवियोंकी चर्चा करते हुए यह बताना उचित होगा कि तमिल प्रदेशमें "सिद्ध वैद्य" नामक चिकित्सा पद्धति प्रचलित है। यह पद्धति आयुर्वेदसे भिन्न है। इस पद्धतिके प्रवर्तक सिद्ध कवि माने जाते हैं।

दक्षिण भारतमें अनादि कालसे ही शिव और शिवपूजा या शैव धर्मका प्रचार रहा। पर बारहवीं सदीमें इस शैव धर्मकी एक नई पद्धति शुरू हुई। इस पद्धतिके प्रवर्तक मेयकण्डदेव (सत्य-द्रष्टादेव) तंजौर जिलेमें पैदा हुए। उन्होंने "शिव ज्ञान बोधम्" नामक ग्रन्थ रचकर उसमें शैव सिद्धान्त शास्त्रका प्रतिपादन किया। शिव ही पति है, वह आदि मध्य और अन्तरहित परब्रह्म है, उस परब्रह्मकी शक्ति सती है— आदि इस सिद्धान्तकी प्रमुख बातें हैं। जैसे सूर्यसे उत्पन्न ज्योति जीव राशिकी सृष्टि स्थिति और लय करती है, वैसे ही पति (शिव) से उत्पन्न सती ही सृष्टि स्थिति और लयका कार्य करती है। सारी जीव राशि पशु है। यह पशु "पाशम्" में पड़कर पतिके पास पहुँचनेमें असमर्थ हो जाता है।

इस शैव सिद्धान्तका प्रचार करनेके लिए अनेक मठ स्थापित हुए, जिनमें तीन बहुत प्रसिद्ध हैं। तिरुप्पनन्दाल काशीवासी मठ का तो उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। तिरुवावडुदुरै आधीनम् और दरुमपुरम् (धर्म पुरम्) आधीनम्—ये दो मठ और हैं। इन तीनों मठोंने शैव सिद्धान्तके प्रचारके साथ-साथ तमिल साहित्यकी और आस्तिक धर्मकी बड़ी सेवाएँ की हैं।

शैव सिद्धान्तके समर्थनमें अनेक पुस्तकें लिखी गईं, जिनमें मुख्य ये हैं —

"शिव ज्ञान सिद्धर" इसके लेखक अरुल नन्दि शिवाचार्य मेयकंड देवरके शिष्य थे।

"शिव प्रकाशम्" इसके लेखक उमापति शिवाचार्य ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न हुए। शैव धर्म स्वीकार करके उन्होंने उसपर कई ग्रन्थ लिखे। "कोयिल्पुराणम्" "कोयिल पुराणम्" आदि उनकी रचनाएँ हैं।

तमिल साहित्यमें "व्याकरण" सम्बन्धी कई रचनाएँ हुईं, उनमेंसे कुछ मुख्य रचनाओंका परिचय यहाँ दिया जाता है —

याप्परुंगलक्कारिकै —यह छन्द शास्त्र है। इसके लेखक अमृत सागरर बारहवीं सदीके हैं।

नन्नूल —उत्कृष्ट व्याकरण ग्रन्थ है। इसके लेखक पवणन्दि मुनिवर तेरहवीं सदीके हैं।

वीर चोलियम्" बुद्ध मित्र नामके लेखकने यह व्याकरण "वीर चोलन नामक राजाके नामपर ग्यारहवीं सदीमें रचा था।

प्राचीन भक्त कवियोंकी यह परम्परा उन्नीसवी सदी तक चली आई थी। तायुमानवर शैव भक्त कवि अठारहवीं सदीमें हुए थे। गृहस्थाश्रम चलानेके बाद उन्होंने सन्यास ग्रहण किया और शैव धर्मोंका पर्यटन किया। उनकी कविताएँ उत्तम श्रेणीकी हैं।

उन्नीसवी सदीमें "रामलिंग स्वामी" नामक संत कवि हुए। वे बचपना अवस्थामें ही सन्यासी हो गए थे। वे समन्वयवादी थे—सब धर्मों और सम्प्रदायोंके समन्वयके पक्षपाती थे। उनका पंथ "समरस सन्मार्ग पथ" कहलाता है। कहते हैं कि एक कमरेमें जाकर उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया था। फिर जब वह खोला गया तब वे वहाँ नहीं पाये गए। उनकी रचना "अरुट्पा" है।

तमिल साहित्यमें कई मुसलिम कवियोंकी रचनाओंको आदरपूर्ण स्थान मिला है। इनमें "उमर पुलवर" और "सय्यादु पुलवर" (कवि) प्रसिद्ध हैं। शीदक्कादि नामक मुसलिम अमीर तमिल कवियोंका बड़ा आदर करते थे। उनका नाम "सैयद कादर" था जो तमिलमें "शीदक्कादि" बन गया।

तमिल साहित्यकी चर्चा करते हुए " वीर मा मुनिवर " (वीर महामुनिजी) का नाम लेना आवश्यक है। ये इटली देशके थे और ईसाई धर्मका प्रचार करनेके लिए सन् १७०६ ई में दक्षिण भारतमें आए। उनका नाम " कान्स्टेन्ट बेस्की " था। उन्होंने तमिल भाषाका अध्ययन कर उसमें अच्छा पाण्डित्य प्राप्त किया। उन्होंने " तेम्बावणि " " नावलूर कलम्बकम् " " तोन्नूल विळक्कम् " आदि ग्रन्थ रचे।

यहाँपर संगीतके सम्बन्धमें दो बातें बताना आवश्यक है। आजकल दक्षिण भारतमें प्रचलित संगीत " कर्नाटिक संगीत " कहलाता है। इसकी पद्धति और शैली उत्तर भारतमें प्रचलित संगीतसे एकदम भिन्न है। बहुत प्राचीन कालमें तमिलका अपना एक संगीत क्रम था। अनेक प्रकारके बाजे थे तथा अनेक प्रकारके राग प्रचलित थे। जैन और बौद्ध धर्मोंके कट्टर प्रचारकोंके कारण तमिल संगीत सम्बन्धी साहित्य तथा वाद्य यन्त्र लुप्त-प्राय हो गए। कुछ सदी पूर्व संगीतका जब उद्धार हुआ, तब रागोंके नये संस्कृतजन्य नाम प्रचलित हुए। यद्यपि उत्तर भारतके रागों और दक्षिणके रागोंके नामकी समानता पाई जाती है तो भी स्वरूप एकदम भिन्न हैं। उदाहरणके लिए तमिलका " भैरवी " नामक राग उत्तर भारतीय " भैरवी " से एकदम भिन्न है। उत्तरकी " भैरवी " में प्रयुक्त सभी स्वर दक्षिणके " तोडि " नामक रागमें आते हैं पर गानेकी—अलापकी पद्धति भिन्न है। अब प्राचीन संगीत साहित्य सम्बन्धी शोध शुरू हुई है।

तमिल प्रदेशोंमें यद्यपि " तेवारम् " " तिरुप्पुगल " आदि तमिल गीतोंका प्रचार बराबर रहता आया तो भी उनका क्षेत्र मन्दिर-मठ आदि धार्मिक क्षेत्रों तक ही सीमित था। संगीत समारोह विवाह आदिमें अधिकतर तेलुगु या संस्कृतके गीत ही गाये जाते थे। प्रसिद्ध संगीतकार त्यागराज तमिल प्रदेशमें पैदा हुए थे। वे वहीं रहते थे फिर भी उनकी सारी रचनाएँ तेलुगुमें हुई थीं। उनके कुछ गीत संस्कृतमें भी हैं, पर तमिलमें उनका कोई गीत नहीं है। अठारहवीं सदीमें गोपाल कृष्ण भारती नामक एक कवि हुए। वे त्यागराजकी पद्धतिपर तमिल भाषामें " कीर्तन " रचने लगे। उनके नन्दनार चरित्र कीर्तन बहुत प्रसिद्ध है। अब तमिल गीतोंकी बहुत उन्नति हुई है।

उन्नीसवीं सदीमें जब सारे देशपर अंग्रेजोंका शासन स्थायी रूपसे जम गया तब देशकी सभी भाषाओंका एक नया ही युग आरम्भ हुआ। शिक्षाका एक नया क्रम प्रचलित हुआ। इसके लिए नए ढंगकी " पाठ-पुस्तकों " (readers) की आवश्यकता हुई। नये ढंगके व्याकरणकी आवश्यकता हुई। कविताका रूप बदला विषय बदला और शैली भी बदली। अतः कवियोंके लिए कोई स्थान नहीं रहा। नये समाचारपत्र निकलने लगे। नये ढंगके उपन्यास निकलने लगे। गद्यमें पुरानी पाण्डित्यपूर्ण जटिल भाषाके स्थानपर सरल सुन्दर भाषाका प्रचार बढ़ा। तमिल भाषाने शीघ्र ही अपनेको इस नये वातावरणके अनुकूल बना लिया।

तमिल भाषामें मीनाक्षी सुन्दरम् पिळ्ळै नये युगके प्रवर्तक माने जाते हैं। ये स्वयं उत्तम श्रेणीके विद्वान थे। उनकी प्रेरणा पाकर अनेक नवयुवक भाषाके सेवक बने। उन सेवकोंने न केवल उत्तम साहित्यकी ही रचना की बल्कि कई प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया और तमिल भाषाकी नई शैली चलाई।

उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं सदीके प्रथम दो दशाब्दियोंके साहित्यकारोंमें वेद नायकम् पिळ्ळै,सूर्य नारायण शास्त्री सुन्दरम् पिळ्ळै राजम् अय्यर, माधवय्या महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यर, व वें सु अय्यर और सुब्रह्मण्य भारती बहुत प्रसिद्ध हैं।

वेदनायकम् पिळ्ळै ईसाई थे और जिला मुंसिफ थे। उन्होंने आधुनिक ढंगके 'प्रताप मुदलियार चरित्तिरम्" नामक सर्वप्रथम तमिल उपन्यासकी रचना की। उनकी अन्य कई रचनाएँ भी हैं।

"सूर्य नारायण शास्त्री" तमिलके बड़े विद्वान थे। उनके तमिल प्रेमकी गहराईका अनुमान इस बातसे किया जा सकता है कि उन्होंने अपना नाम परिदिमाल कलैञर" कर लिया। "सूर्य नारायण शास्त्री" का यह शुद्ध तमिल रूप है। तमिल मोळिवरलाद" नामक उनकी तमिल भाषा सम्बन्धी रचना बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने इतिहास विज्ञान आदिपर कई पुस्तकें लिखवाईं।

सुन्दरम् पिळ्ळैने मनोन मनीयम्" नामक एक नाटक लिखा। "तिरु ज्ञान सम्बन्धर" नामक प्राचीन शिवभक्त कविका काल निर्णय तिरुविदांकूर (ट्रैवनकोर) के राजवंशका इतिहास आदि उनकी अन्य रचनाएँ हैं।

"राजम् अय्यर" बड़े उत्साही नवयुवक थे। उनपर स्वामी विवेकानन्दका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। उनके "कमलाम्बाळ चरित्तिरम" को तमिल उपन्यास साहित्यमें बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ है। बत्तीस वर्षकी अल्पायुमें ही उनका देहान्त हो गया था।

श्री माधवय्या एक अच्छे उपन्यासकार और कहानी-लेखक थे।

महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यर तमिल ताता (दादा) कहलाते थे। उन्होंने कई प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया। प्राचीन ताड़पत्रोंकी खोजमें उन्होंने बहुत कष्ट उठाया। कई प्राचीन रचनाओंकी प्रामाणिक प्रतियाँ प्राप्त कर वे उन्हें प्रकाशमें लाए। उनके अनेक शिष्य आज भी प्राचीन ग्रन्थोंकी खोज और नव साहित्य सृजनमें लगे हुए हैं।

व वें सु अय्यर प्रसिद्ध देशभक्त थे। बैरिस्टरीकी शिक्षा पानेके लिए वे इंग्लैण्ड गए। वहाँ वे वीर सावरकरके सम्पर्कमें आए। भारतकी स्वतन्त्रताके लिए आतंकवादियोंके साथ मिलकर आन्दोलन करने लगे। अंग्रेज सरकार उन्हें कैद करना चाहती थी, पर वे किसी तरह बचकर पाण्डिचेरी चले गए। वहाँ अरविन्द-

घोष और सुब्रह्मण्य भारतीके साथ रहने लगे। अंतमें पक्के गांधीवादी बने। आप "देश भक्तन्" नामक तमिल दैनिक पत्रका सम्पादन करते थे। उनकी कई कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं।

तमिलका सर्वप्रथम दैनिक पत्र "सुदेश मित्रन्" है। श्री सुब्रह्मण्य अय्यर नामक प्रसिद्ध देशभक्तने यह पत्र आरम्भ किया। आज दैनिक तमिल पत्रोंमें इसका स्थान सर्वोपरि है।

अंग्रेजी शिक्षाका प्रभाव भारतवर्षमें तमिल भाषा-भाषियोंपर जितना पड़ा उतना अन्य लोगोंपर नहीं पड़ा। तमिल भाइयोंने अंग्रेजीकी बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त की। वे उसके ऐसे प्रेमी हो गए कि अनेक परिवारोंमें घरेलू बोल-चालमें अनेक अंग्रेजी शब्द अनायास बीच-बीचमें आ जाते थे। सार्वजनिक क्षेत्रोंमें तो केवल धार्मिक संस्थाओंमें और पुराण-प्रवचनों आदिमें तमिलका प्रयोग होता था। ऐसे अवसरोंमें भी स्वागत भाषण परिचय कराना बधाई देना धन्यवाद समर्पण आदि अंग्रेजी भाषामें ही होते थे। तमिलमें बोलना तो आत्म-गौरवके लिए हानिकर माना जाता था। ऐसी स्थितिमें सुब्रह्मण्य भारती कांचीपुरम्‌के कृष्णास्वामी शर्मा सुब्रह्मण्य शिवा व वे सु अय्यर, सत्यमूर्ति आदि देशभक्तोंने तमिल भाइयोंमें नव जीवन फूंककर तमिल भाषाको महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

• • •

सुब्रह्मण्य भारती

[कवि-परिचय]

भी देशभरमें व्याप्त थे और उसी प्रकार गरम दलवाले भी सारे देशमें फैले हुजे थे। बीसवीं सदीके आरम्भमें हमारा देश स्वराज्यका मन्त्र जपने लगा। नरम दलवाले केवल प्रस्ताव पासकर अधिक अधिकारकी माँग पेश करते थे। आतंकवादी बास तथा अलका प्रयोगकर स्वतन्त्रता पानेका प्रयत्न करते थे। इन दोनोंके बीचमें गरम दलवाले लोग जनतामें जागृति पैदा करके स्वराज्य पानेका प्रयत्न करते थे।

सन् १९१४ में यूरोपमें प्रथम महायुद्ध छिड़ा। उसका प्रभाव सारे संसारपर पड़ा—भारतपर भी पड़ा। उसी समयके लगभग गाँधीजी दक्षिण अफ्रीकामें अपना काम पूराकर भारत लौटे थे। लगभग उसी समय तिलक महाराज छह वर्षके कारावाससे मुक्त हुए थे। उन्हीं दिनोंमें एनी बसन्टने होम रूल आन्दोलन शुरू किया था। इन परिस्थितियोंका परिणाम यह हुआ कि देशमें एक नवीन एकताका भाव जागृत हुआ। तिलक महाराज देशके सर्वोत्तम नेता बने। उनके देहान्तके कुछ समय पहले ही गाँधीजी सक्रिय राजनैतिक आन्दोलनमें भाग लेने लगे थे। जब लोकमान्य तिलकका देहान्त हुआ तब मानों उन्होंने अपने नेतृत्वका भार गाँधीजीको सौंपा।

तिलक महाराजके दक्षिण भारतीय समर्थकोंमें सुब्रह्मण्य भारती प्रमुख थे। गाँधीजी जब दक्षिण भारत आये तब भारती उनसे मिले उन्हें आशीर्वाद दिया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद भारतीका देहान्त हुआ।

जब भारतके सार्वजनिक मंचमें बापूजी उतरे, तब एनी बसन्ट, विपिन सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि नेताओंकी ज्योति मन्द पड़ गई थी।

दक्षिण भारतमें कविवर सुब्रह्मण्य भारती गाँधी युगके आरम्भके लिए पूर्व तैयारियाँ करनेवालोंमेंसे एक थे। अपने साप्ताहिक पत्रों और सुमधुर गीतोंके द्वारा उन्होंने जनतामें नया उत्साह पैदा किया—नई जान फूँकी। भारती जन्मतः कवि थे। यदि स्वतन्त्रताके लिए प्रयत्न करनेका प्रश्न न होता तो भारतीकी रचनाएँ सम्भवतः और ही ढंगकी होतीं। यह मानना पड़ेगा कि भारतीने अपने लेखों और गीतों द्वारा अपने कालपर जितना प्रभाव डाला उतना ही प्रभाव उस समयकी परिस्थितिने भारतीपर भी डाला।

जन्म और शिक्षा

दक्षिण भारतकी दक्षिणी सीमामें पूर्व कालमें पाण्ड्य राजाओंका प्रभुत्व था। उसके बाद अनेक छोटे-मोटे राजा हुए। अँग्रेजोंके आनेके बाद वहाँ केवल कई छोटे जमींदार रह गये जो राजा कहलाते थे। "एट्टयापुरम्" एक ऐसी ही जमींदारी थी। यह स्थान तिरुनेल्वेली जिलेमें है। इस जमींदारीकी करीब पाँच-छह लाखकी वार्षिक आमदनी थी। इस जमींदारके चिन्नसामि अय्यर नामक एक दरबारी थे। उनका गणित शास्त्रसे बड़ा प्रेम था। सुब्रह्मण्य

भारती चिन्नस्वामी अय्यरके पुत्र थे। उनका जन्म सन् १८८२ में हुआ। बचपनमें लोग उनको "सुब्बय्या" नामसे पुकारते थे। जब वे पाँच सालके थे तब उनकी माताका देहान्त हुआ। उनके पिताने दूसरा ब्याह कर लिया।

चिन्नस्वामी अय्यरकी बड़ी इच्छा थी कि "सुब्बय्या" बड़ा गणितज्ञ बने और आई सी एस में उत्तीर्ण होकर बड़े ओहदेपर जावे। पर भारतीका मन बचपनसे ही कविताकी ओर प्रवृत्त हुआ। वे पितासे बहुत डरते थे। इस डरके कारण अपने समवयस्क बालकोंके साथ खेलते भी बहुत कम थे। किसी अंग्रेज कविके बारेमें कहा जाता है कि वह बचपनमें ही कविता रचने लगा था। उससे रुष्ट होकर उसके पिताने खूब मारा कि वह आगे कविता न रचे तो लड़का मार खाते-खाते अपने पितासे बोला —

"पपा पपा पिटी टक
मी मोर वर्सेस विल नाट मेक"

भारतीकी भी कुछ ऐसी ही बात थी। पिताजी पुत्रको डाँटते कि "क्या बात है? सुब्बय्या तू गणितपर ध्यान नहीं देता। तेरा तो बालकाल है, यही सीखनेका समय है" तो भारती पिताको जवाब देनेका साहस तो नहीं करते थे पर मन-ही-मन गुनगुनाते 'बाल गमक पाक काक भाक यह सब जाल है।' मतलब यह कि अनुप्रासयुक्त शब्दोंके जोड़का उनको बचपनमें ही बड़ा शौक था।

शिक्षा प्राप्त करनेके लिए यथासमय उनको पाठशालामें दाखिल किया गया। पढ़ाईमें वे बहुत ही सामान्य थे पर कविताएँ बराबर करते रहते थे। पाठ्यक्रममें विद्यार्थियोंको प्राचीन कवियोंकी रचनाएँ कण्ठस्थ करके वर्गमें सुनानी पड़ती थीं। भारती कवियोंकी रचनाएँ सुनानेमें तो असमर्थ थे अपनी ही एक-दो कविताएँ सुनाते थे। इसपर अध्यापक और विद्यार्थी उनको व्यंग्यमें "भारती" (सरस्वती—विदुषी) कहा करते थे। एक बार भारती वर्गमें न कोई प्राचीन कविता सुना सके न अपनी ही रचना सुना सके। अध्यापकने कहा— "तू तो बड़ा कालमेघ (एक प्राचीन कवि—इस शब्दका अर्थ है प्रलयका बादल) है, कविता क्यों नहीं सुनाता?" झट भारतीने जवाब दिया— "गुरुजी, मेघ तो किसीकी आज्ञासे वृष्टि नहीं करता। वह तो स्वेच्छासे ही बरसा करता है।" यह सुनकर अध्यापक खुश भी हुए और साथ ही साथ नाराज भी। कुछ दिन बाद भारतने उनको एक स्तव सुनाया। उस कवितामें केलेके पेड़के साथ-साथ सुपारीके पेड़का भी वर्णन था। अध्यापक बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने एक सभा बुलाई। उन्होंने पहले उपहासमें जो 'भारती' की उपाधि दी थी वही उपाधि अब उन्होंने गम्भीरताके साथ समारोह सुब्बय्याको दी। तभीसे उनका उपनाम 'भारती' ही अधिक प्रचलित हो गया।

भारती सदा ही अन्ध परम्पराका खण्डन करते रहे। प्राचीन कवियोंकी कविताओंका मतलब समझे बिना तोतेके समान रटना उन्हें पसन्द नहीं था। पर प्राचीन कविताओंका अध्ययनकर उनकी विशेषताओंका परिचय प्राप्त करनेमें उनकी बड़ी अभिरुचि थी। वे कालिदासके पुजारी तो थे ही अंग्रेज कवियोंकी रचनाओंके प्रति भी उनके मनमें बड़ी रुचि थी। उन्हें विशेष रूपसे शेली और कीट्स (Shelly and Keats) की रचनाएँ बहुत पसन्द थीं। उन्होंने एट्टयापुरम्में "शेलियन संघ की स्थापना भी की थी।

विवाह

सन् १८९७ में चौदह वर्षकी आयुमें भारतीका विवाह हुआ था। उस समय उनकी पत्नी "चेल्लम्मा केवल सात वर्षकी थी। उन दिनों तमिल ब्राह्मणोंमें विवाहका समारोह पाँच दिन तक रहा करता था। पहले दिन बरातका आगमन होता था दूसरे दिन विवाह संस्कार होता था और पाँचवें दिन विवाह समारोहका समावर्तन होता था। बीचके तीसरे और चौथे दिन सामान्य मनोरंजनका कार्यक्रम रहता था। शामको वर-वधू एक दूसरेके पाँवमें महावर लगाया करते। यह कार्यक्रम नलंगु कहलाता है। रातको भोजनके बाद वर-वधू झूलेपर बैठकर झूलते हैं। यह कार्यक्रम "ऊँजल कहलाता है। इन अवसरोंपर वर और वधू दोनों पक्षकी महिलाएँ (कभी-कभी पुरुष भी) सम्मिलित होकर खुशियाँ मनाया करती हैं। इन अवसरोंपर गानेका कार्यक्रम अनिवार्य रूपसे रहता है और वधूका गाना तो होता ही है। भारतीके विवाहमें बेचारी सात वर्षकी वधू गा नहीं सकी। तो कविवरने तुरन्त गीत रचकर अपने सुमधुर कण्ठसे सुनाया। आजकल पाँच दिनके समारोहकी प्रथा उठ ही गई है—पहले दिन वरका स्वागत और दूसरे दिन विवाह संस्कार होता है। विवाहके दिन "नलंगु "ऊँजल" आदि कार्यके लिए भी किसी-न-किसी तरह समय निकाल लिया जाता है।

काशीवास

विवाहके कुछ दिन बाद ही भारतीके पिताका देहान्त हो गया था। उनकी दूसरी पत्नीसे उनके दो सन्तानें थीं सोलह वर्षकी छोटी उम्रमें ही भारतीपर सारे परिवारके पालनका भार आ पड़ा था। पिताकी कोई सम्पत्ति नहीं थी राजाश्रयका विश्वास नहीं था। वे किसी परीक्षामें उत्तीर्ण नहीं थे कि कहीं कोई नौकरी प्राप्त कर सकते। इसलिए वे इस बातका अनुभव करने लगे कि शिक्षा प्राप्तकर किसी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए बिना कुटुम्बके निर्वाहका भार उठाना कठिन हो जाएगा। परिणामतः उन्होंने अपनी पत्नीको उसके मायके भेज दिया उनकी विमाता भी अपने बच्चोंके साथ अपने मायके चली गई। उन दिनों भारतीकी फूफी

भारतीमें रहती थी। उसके गुजरनेपर भारती काशी चले गये। कुप्पी निस्सन्तान थी इसलिए अपने भतीजेका वह बड़े प्रेमसे लालन-पालन करने लगी।

उन दिनों तमिल युवकोंमें खूब लम्बी चोटी रखनेकी प्रथा थी। आजकल तो पाश्चात्य ढंगपर बाल कटवानेकी रीति चल पड़ी है। तमिल प्रान्तके ब्राह्मण लोग आज भी मूँछें नहीं रखा करते। भारती तो अन्ध परम्पराके विरोधी थे ही। अतः काशी पहुँचकर वे पाश्चात्य ढंगसे केशोंको बढ़ाने लगे। पौरुषसूचक मूँछें भी बढ़ाने लगे। उनके फूफाजीको यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने नवयुवक भारतीको अपने साथ बैठकर खाना खानेसे मना कर दिया। भारतीको इस बातसे विशेष दुख नहीं हुआ। फूफाजीके खानेके बाद या कभी-कभी पहले भी अपने भोजनसे निवृत्त होकर पढ़ाईके कामपर वे चले जाया करते थे।

भारतीके फूफाजी प्रतिदिन बड़ी निष्ठाके साथ "नटराज" भगवानकी मूर्तिकी पूजा किया करते थे। वह चलसे फूल अक्षत नैवेद्य आदि सामग्री जमा करते और ध्यान आवाहन आदि सोलहों उपचारोंसे युक्त पूजा करते थे। उन उपचारोंमें भक्ति-गीत सुनानेका भी एक क्रम रहता है। इसके लिए उन्होंने "ओदुवार" (पाठक या गायक) नामक जातिके एक युवकको नियुक्त किया था। उसका प्रतिदिनका काम था—पूजाके लिए फूल जमा करके लाना और समयपर भक्तिगीत गाना। एक दिन वह पूजाके समय उपस्थित नहीं था। फूफाजी चाहते नहीं थे कि गीत सुनानेका क्रम टूटे। वे बहुत बेचैन हो गए। उनकी पत्नीने उस समय उनसे कहा कि "सुब्बय्या तो बहुत अच्छा गाता है, उसीको गानेके लिए क्यों न बुलाया जाये ?" भारतीको बुलाया गया। भारतीने ऐसे भावपूर्ण ढंगसे गीत गाकर सुनाया कि फूफाजी मन्त्रमुग्ध-से हो गए।

जीवन संग्राम :

काशीमें भारती सेण्ट्रल हिन्दू कालेज में पढ़ते थे। अन्य विषयोंके साथ-साथ उन्होंने संस्कृत और हिन्दीका भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। मैट्रिककी परीक्षामें वे प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए।

पढ़ाई पूरी करके भारती फिर एट्टयापुरम् पहुँचे। राजा साहबने उन्हें काशीसे घर पहुँचनेका खर्च देकर बुलाया था। राजा साहब उनको अपना दरबारी बनाकर सदा अपने पास रखना चाहते थे। भारती पहलेसे ही बड़े देश-भक्त थे। काशीवासमें उनका मन देश-प्रेम और स्वतन्त्रताके भावोंसे और भी अधिक भर गया था। मैजिनी और गैरिबाल्डी जैसे स्वतन्त्रताके पुजारियोंके वे भक्त बन गये। वे उनकी प्रशंसामें गीत रचने लगे। उन्हें राजा साहबका ऐश-आराम और निरुद्योगी जीवन अच्छा नहीं लगा। वे राजा साहबके मुँहपर ही उनकी कड़ी आलोचना करने लगे। सदा अपनी प्रशंसा ही सुननेके आदी राजा साहब

ऐसी आलोचना भला क्यों सहते? भारतीको राजा साहबके दरबारसे [illegible]
पड़ा। आजीविकाके प्रश्नने उनके सामने भयंकर रूप धारण कर लिया। [illegible]
नगरके सेतुपति हाईस्कूलमें तमिल भाषाके शिक्षक बने।

उन दिनों हाई स्कूलोंमें भाषा शिक्षककी बड़ी दुर्गति थी। वे [illegible]
केवल अपनी भाषाकी जानकारी रखते थे—अन्य विषयोंकी जानकारी प्राप्त [illegible]
कोई प्रयत्न नहीं करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि न स्कूलके [illegible]
ही उनका आदर करते थे और न विद्यार्थी। भारती ऐसे भाषा शिक्षक नहीं
उन्हें काफी यात्राके कारण जीवनका कुछ अनुभव हो गया था तात्कालिक [illegible]
परिस्थितिका ज्ञान था। अंग्रेजीकी भी अच्छी जानकारी थी। अत [illegible]
उनका बड़ा आदर करते थे।

पत्रकार भारती

इसके कुछ समय पूर्व ही मद्रास शहरसे "सुदेश मित्तिरन (
मित्र) नामक एक तमिल दैनिक पत्र निकलने लगा। उस समय मद्रास
दो-तीन अंग्रेजी दैनिक पत्र तो निकल ही रहे थे पर तमिल दैनिक पत्र एक [illegible]
था। श्री सुब्रह्मण्य अय्यर नामक एक प्रसिद्ध देशभक्तने यह पत्र आरम्भ
उन दिनोंमें देशी भाषाओंके पत्र चलानेमें बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती
विशेष रूपसे तमिल प्रदेशमें परिस्थिति और भी कठिन थी। तमिल भाषा
पंडित थे वे देश-विदेशकी स्थितियोंका परिचय प्राप्त करनेकी आवश्यक
नहीं रखते थे। जो ऐसी क्षमता रखते थे वे मातृभाषाकी सेवा करना कोई
गौरवकी बात नहीं मानते थे। ऐसी परिस्थितिमें भी श्री सुब्रह्मण्य [illegible]
ध्यान सुब्रह्मण्य भारतीकी ओर आकृष्ट हुआ। वे भारतीके उत्साह ओजस्वी
देश प्रेमसे प्रभावित हुए। यद्यपि वे भी पक्के देशभक्त थे तो भी कुछ नरम [illegible]
थे। उन्हें डर था कि भारतीको यदि पूरी स्वतन्त्रता दे दी जाये तो वे [illegible]
आकर कुछका कुछ लिख बैठेंगे। इसलिए उन्होंने भारतीको अपना तमिल
उपसम्पादक बनाकर केवल विदेशी समाचारोंके अनुवाद तथा अन्य समा[illegible]
सम्पादन करनेका काम सौंपा। अग्रलेख लिखनेका भार भी भारतीपर नहीं
भारती यह काम स्वीकारकर मद्रास शहरमें आकर रहने लगे।

सदा राजाकी स्तुति गाते रहने या निरे अध्यापक बने रहनेकी
यह पत्र-सम्पादनका काम भारतीके मनके कुछ अधिक अनुकूल था। पर यहाँ [illegible]
पूरा सन्तोष नहीं मिला। विदेशियोंका अत्याचार और स्वदेशवासियोंकी [illegible]
और संकुचितताले वे दुखी थे—अपना सन्देश सुनानेके लिए आतुर थे। अप[illegible]
इच्छाकी पूर्ति वे बीच-बीचमें गीत रचकर तथा उन्हें सार्वजनिक सभाओंमें
कर देते थे पर समाचारपत्रों द्वारा अपने इन विचारोंको प्रकट नहीं कर पाते थे

स्वदेशी नौका कम्पनी

इस बीचमें देशमें कई महत्वपूर्ण ऐसी घटनाएँ घटीं जिनसे उनके उत्साह को और भी अधिक बढ़ावा मिला। भारती सन् १९ ४ में मद्रास पहुँचे। सन् १९ ५ में बंग-विभाजन हुआ। राजनैतिक क्षत्रमें वन्दे मातरम् मन्त्रका जप होने लगा। भारतीने इस मन्त्रको लेकर अनेक गीतोंकी रचना की। सन् १९०६ में श्री वो चिदम्बरम् पिळ्ळै नामक देशभक्तने जहाजका कारोबार शुरू किया। प्राचीन कालमें तमिल प्रदेशके जहाज दूर-दूर देशोंतक पहुँचते थे। अंग्रेजोंके राज्यमें शुरू-शुरूमें भारतीयोंका एक भी जहाज नहीं था जितने भी जहाज थे सभी विदेशियोंके थे। भारतवर्षके समुद्रतटीय बन्दरगाहोंके बीच भी कहीं कोई देशी जहाजका आना गमन नहीं होता था। चिदम्बरम् पिळ्ळैने "तूतुकुडी (अंग्रेजीमें टूटिकोरिन) से सिंहल (लंका) के कोलोम्बो नगरतक जहाज चलानेका निश्चय किया। लाखों रुपयोंकी पूँजी लगाकर "स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कम्पनी नामक संस्था कायम करके उन्होंने एक जहाज खरीदा। जहाज दोनों बन्दरगाहोंके बीचमें चलने लगा। जनताने इस नव प्रयत्नका बहुत समर्थन किया। पर विदेशी व्यापारियों और सर कारने कुछ ऐसा चक्र रचा कि यह कारोबार चल ही न सका। परिणामतः लाखों रुपयोंकी पूँजी डूब गई। चिदम्बरम् पिळ्ळैपर राजद्रोहका दोष लगाया गया। उन्हें कठिन कारावासका दण्ड दिया गया। उन्हें जेलमें बैलकी तरह कोल्हू चलानेका काम दिया गया। चिदम्बरम् पिळ्ळै भारतीके मित्र थे। उनपर किए गए इन अत्याचारोंका भारतीपर बहुत प्रभाव पड़ा।

"इन्डिया और "बाल भारत"

सन् १९ ६ में कलकत्तेमें राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का अधिवेशन दादाभाई नौरोजीकी अध्यक्षतामें हुआ था। भारती उसमें गए थ। अधिवेशनके बाद मद्रास लौटनेके पूर्व वे सिस्टर निवेदितासे मिलने गए। इस मुलाकातका परिणाम यह हुआ कि भारती स्त्री-स्वातन्त्र्य तथा धर्म-जाति-समन्वयके समर्थक बने।

भारती अपने विचारोंको प्रकट करनेके लिए आतुर थे। कलकत्तेसे लौटनेके बाद उन्हें इस बातका सुअवसर प्राप्त हुआ। स्वदेशी आन्दोलन खूब प्रबल हुआ। स्वदेशी वस्तुओंका व्यापार चलानेके लिए एक "भारत भण्डार स्थापित हुआ। तमिल और अंग्रेजीमें एक-एक साप्ताहिक पत्र निकालनेका निश्चय हुआ। उत्साही देशभक्त आवश्यक आर्थिक सहायता देनेको तैयार हुए। भारती दोनों साप्ताहिक पत्रोंके सम्पादक और भण्डारके व्यवस्थापक बने। तमिल पत्र "इन्डिया और अंग्रेजी पत्र "बाल भारत नामसे प्रकाशित हुए। भारतीका दैनिक "सुदेश मित्तिरन" पत्रसे सम्बन्ध छूट गया।

उन दिनों सामान्य जनताकी अभिरुचि सार्वजनिक कार्योंमें बहुत कम थी। कुछ पढ़े-लिखे लोग कांग्रेसके नरम दलका समर्थन करते थे। कुछ लोग छिपे-छिपे गोला-बारूदका संग्रह करनेके स्वप्न देखा करते थे। तिलक महाराजके विचारोंका समर्थन करनेका किसीको साहस नहीं होता था। भारतीने यह काम अपने ऊपर लिया। अपने दोनों पत्रों द्वारा उन्होंने नव-जागृतिका शंख फूँका था। सार्वजनिक सभाओंमें नये-नये गीत गाकर आप लोगोंमें उत्साह पैदा करते थे।

उन दिनों मद्रासके एक प्रसिद्ध देशभक्त थी थी कृष्णस्वामी अय्यर थे। (यहाँपर अप्रासंगिक होनेपर भी यह कहना अनुचित न होगा कि सन १९१० में ये देशभक्त काशीकी नागरी प्रचारिणी सभाके एक समारोहमें सम्मिलित हुए और उससे प्रभावित होकर उन्होंने घोषित किया कि हिन्दी ही भारतकी राष्ट्रभाषा बन सकती है और उसका दक्षिण भारतमें प्रचार किया जाना चाहिए। वे महामना मालवीयजीके आप्त मित्र थे। उनके पुत्र आज भी दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके सबल समर्थक हैं।) वे नरम दलके थे। भारती अपने पत्रोंमें उनकी कड़ी आलोचना करते थे।

नरम दलके नेतासे भेंट

एक बार एक मित्र भारतीको श्री कृष्णस्वामी अय्यरके पास ले जाना चाहते थे। भारती चलनेको तैयार नहीं थे पर मित्रके अनुरोधसे उन्हें जाना ही पड़ा। मित्रने कृष्णस्वामी अय्यरसे केवल "एक उदीयमान कवि" कहकर भारतीका परिचय कराया। उनके गीत सुनकर अय्यर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कविको १०) का पुरस्कार देकर कविके गीतोंकी दस हजार प्रतियाँ छपवाईं और उन्हें सारे तमिल प्रदेशमें बँटवाईं। बादको जब कविके नामका पता चला तो श्री कृष्ण-स्वामी अय्यर बोले—"राजनीति अलग बात है साहित्य अलग। सम्पादक भारतीको मेरा खण्डन करनेका अधिकार है पर कवि भारतीका आदर करना मेरा कर्तव्य है। मुझे सम्पादक भारतीसे कोई डर नहीं है कवि भारतीके प्रति मेरी बड़ी श्रद्धा है।

सूरत कांग्रेस

सन् १९०७ में सूरतमें जो कांग्रेस हुई थी उसमें भारती भी गये थे। मद्रासके कई नवयुवक उनके साथ गए। भारतीके मनमें पहलेसे ही तिलक महाराजके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। सूरतकी यात्राके बाद तो तिलक महाराज उनके आराध्य देव ही बन गए। वे कहा करते थे—"जो नेता केवल अपने बड़प्पनका ख्याल रखता है अपने अनुयायियोंकी सुख-सुविधाओंका ख्याल नहीं रखता वह तो निरा नेता है। पर जो नेता सदा अपनसे अधिक अपने अनुयायियोंकी चिन्ता करता है वह मनुष्य नहीं देवता है। सूरतमें प्रतिदिन तिलक महाराज हमारे बासामें

जाते और हर प्रतिनिधिसे पूछते थे कि तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं होती है? किसी बातकी आवश्यकता हो तो निस्संकोच माँगो। वे तो सचमुच देवता ही थे!

तिलक महाराजसे भेंट

सूरत पहुँचते ही भारतीका प्रथम प्रयत्न तिलक महाराजसे मिलनेका था। उन्होंने तिलकका नाम सुना था पर उनसे कभी मिले नहीं थे। सूरत शहर नया था वहाँकी भाषासे भी वे परिचित नहीं थे। उनके पहुँचनेके कुछ समय पूर्व ही वहाँ जोरका पानी बरसा था। रास्तेपर चलना कठिन था। फिर भी वे उत्साह निकल पड़े। घुटन तकके कीचड़में चलते हुए भारती कांग्रेस मण्डपकी ओर गए। वहाँ एक स्थानपर उन्होंने देखा कि कुछ लोग पानी बहानेके लिए नाले काट रहे थे और एक सज्जन हाथमें छाता लिए उन लोगोंको मार्गदर्शन करा रहे थे। भारतीने फौरन ही अपने इष्टदेवको पहचान लिया। न तो पानीकी ही परवाह की न कीचड़की। वहींपर झटसे उन्होंने भूमिपर गिरकर दण्डवत प्रणाम किया।

सूरत काँग्रेसके बाद सरकारने अपनी दमन नीतिका आरम्भ किया। यद्यपि "इन्डिया" के सम्पादनका सारा काम भारती ही करते थे—सारे लेखोंका उत्तर दायित्व उन्हींपर था तो भी सरकारी कागज-पत्रोंमें इस पत्रके सम्पादक पदपर "श्रीनिवासन" नामक एक सज्जनका नाम छपता था। भारतीका एक लेख आपत्तिजनक माना गया सरकारने पत्रपर कानूनी कार्रवाई की। पत्रके सम्पादकके नाते दण्ड भुगतना पड़ा "श्रीनिवासन" को। उन्हें पाँच वर्षके कठिन कारावासका दण्ड दिया गया था।

पाण्डिचेरी प्रवास

इधर सरकार भारतीको किसी-न-किसी तरह पकड़कर दण्ड देनेके यत्नमें थी और उधर उत्साही नवयुवकोंका प्रयत्न था कि भारतीके सम्पादकत्वमें "इन्डिया" पत्र बराबर निकलता रहे। मद्राससे दक्षिणमें करीब एक सौ मीलकी दूरीपर समुद्रके किनारे पुदुच्चेरी नामक एक नगर है। इसे पाश्चात्य लोग पाण्डिचेरी कहते हैं। यह उन दिनों फ्रान्स देशके अन्तर्गत था। (यद्यपि अब यह नगर "भारत-संघ" में सम्मिलित हो गया है तो भी फ्रान्स देशने अभीतक उसे विधिवत भारतको सौंप नहीं दिया है।) यह निश्चय हुआ कि भारतीको पाण्डिचेरी भेजा जाये और वे वहाँसे "इन्डिया" पत्र निकालें। पहले तो इस विचारको स्वीकार नहीं किया गया। यह कहा गया कि मद्रास छोड़कर जाना "पलायन" माना जाएगा "कायरता" मानी जाएगी। पर अन्तमें निश्चय यही हुआ कि लोग चाहे जो कहें या समझें पर देशके हितके लिए पत्रको जारी रखना आवश्यक है और पाण्डिचेरीसे ही यह काम हो सकता है।

इस बीचमें सरकारने भारतीको कैद करनेकी आज्ञा जारी कर दी थी। इसका पता भारतीको कृष्णस्वामी अय्यर द्वारा मिल गया। इन कृष्णस्वामी अय्यरके विषयमें कुछ लोगोंका तो यह विश्वास है कि ये वही प्रसिद्ध नेता हैं, जिनकी भारतीने कड़ी आलोचना की थी। उस समय वे मद्रास राज्य सरकारके बहुत उच्च पदाधिकारी बन गए थे। दूसरे कुछ लोगोंका यह कहना है कि कृष्णस्वामी अय्यर एक दूसरे ही सज्जन थे जो पुलिस विभागके उच्च अधिकारी थे और भारतीके बड़े प्रेमी थे। जो भी हो यह समाचार पाते ही भारती मद्रास छोड़कर पाण्डिचेरी चले गए। उनके पहुँचनेके कुछ दिन बाद श्री अरविन्द घोष और व. वें. सु. अय्यर भी वहाँ जा पहुँचे।

ये सब राजनैतिक प्रवासी पाण्डिचेरीमें "सुदेशी" (स्वदेशी आन्दोलनके समर्थक) कहलाते थे। इन लोगोंको वहाँ बहुत-सी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। भारती जब मद्राससे निकले तब अपने एक मित्रसे पाण्डिचेरी निवासी एक सज्जनके नाम एक परिचय-पत्र ले गए। उस सज्जनने भारतीको अपने साथ रखा। परन्तु अँग्रेजी राज्यकी पुलिसकी प्रेरणासे फ्रान्सकी पुलिसने उस सज्जनको इतना डराया-धमकाया कि उन्हें विवश होकर भारतीको अपने यहाँसे हटाना पड़ा।

सौभाग्यवश उन्हें पाण्डिचेरीमें एक और मित्र मिल गए। उस मित्रका भारतीके प्रति इतना ममत्व हो गया था कि स्वयं कष्ट उठाकर भी उन्होंने भारतीको अपने घरमें आरामसे रखा। इतना ही नहीं भारतीकी सहायता करनेके लिए वे अपनी पत्नीके गहने तक गिरवी रखनेमें संकोच नहीं करते थे। यह सच्चे भारती भक्त न तो कोई बड़े नेता थे और न सम्पन्न परिवारके ही। ये एक व्यापारीके यहाँ मुनीमी करके अपनी आजीविका चलाते थे। देशभक्तिकी भावना उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। ये काव्यप्रेमी भी थे और भारतीके त्यागका महत्व जानते थे। उनका नाम सुन्दरेश अय्यर था।

प्रवासकी कठिनाइयाँ

अँग्रेज सरकार फ्रेंच सरकारपर बहुत दबाव डालती थी कि वह राजनैतिक कार्यकर्ताओंको अपने यहाँसे हटा दे। पर राजनैतिक कार्यकर्ताओंको आश्रय देनेसे इनकार करना अन्तर्राष्ट्रीय नीति एवं नियमोंके विरुद्ध था। उसी प्रकार अँग्रेज सरकारको असन्तुष्ट करना उनके अपने स्वार्थके लिए हानिकारक था। इसलिए उसने एक नया कानून बनाया कि जो "विदेशी" पाण्डिचेरीमें आकर बसना चाहते हैं, उन्हें पाण्डिचेरीके पाँच ऑनरेरी मजिस्ट्रेटोंकी सिफारिश प्राप्त करनी होगी। पाण्डिचेरी भारतके अन्तर्गत एक छोटा-सा शहर है। उसपर फ्रान्सका आधिपत्य था। इसलिए फ्रान्सीसी अधिकारियोंके लिए उस नगरके बाहरका भाग "विदेश" था। इस कानूनसे अरविन्द बाबू, व. वें. सु. अय्यर, भारती और अन्य सभी



सुब्रह्मण्य भारती और उनकी पत्नी चेल्लम्मा

[श्री बी आर. के पद्मनाभनके सौजन्यसे प्राप्त]

इस बीचमें सरकारने भारतीको कैद करनेकी आज्ञा जारी कर दी थी। इसका पता भारतीको कृष्णस्वामी अय्यर द्वारा मिल गया। इन कृष्णस्वामी अय्यरके विषयमें कुछ लोगोंका तो यह विश्वास है कि ये वही प्रसिद्ध नेता हैं, जिनकी भारतीने कड़ी आलोचना की थी। उस समय वे मद्रास राज्य सरकारके बहुत उच्च पदाधिकारी बन गए थे। दूसरे कुछ लोगोंका यह कहना है कि कृष्ण-स्वामी अय्यर एक दूसरे ही सज्जन थे जो पुलिस विभागके उच्च अधिकारी थे और भारतीके बड़े प्रेमी थे। जो भी हो यह समाचार पाते ही भारती मद्रास छोड़कर पांडिचेरी चले गए। उनके पहुँचनेके कुछ दिन बाद ही अरविन्द घोष और व वें सु अय्यर भी वहाँ आ पहुँचे।

ये सब राजनैतिक प्रवासी पांडिचेरीमें "सुदेशी" (स्वदेशी आन्दोलनके समर्थक) कहलाते थे। इन लोगोंको वहाँ बहुत-सी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। भारती जब मद्राससे निकले तब अपने एक मित्रसे पांडिचेरी निवासी एक सज्जनके नाम एक परिचय-पत्र ले गए। उस सज्जनने भारतीको अपने साथ रखा। परन्तु अंग्रेजी राज्यकी पुलिसकी प्रेरणासे फ्रान्सकी पुलिसने उस सज्जनको इतना डराया-धमकाया कि उन्हें विवश होकर भारतीको अपने यहाँसे हटाना पड़ा।

सौभाग्यवश उन्हें पांडिचेरीमें एक और मित्र मिल गए। उस मित्रका भारतीके प्रति इतना ममत्व हो गया था कि स्वयं कष्ट उठाकर भी उन्होंने भारतीको अपने परम आरामसे रखा। इतना ही नहीं भारतीकी सहायता करनेके लिए वे अपनी पत्नीके गहने तक गिरवी रखनेमें संकोच नहीं करते थे। यह सच्चे भारती-भक्त न तो कोई बड़े नेता थे और न सम्पन्न परिवारके ही। ये एक व्यापारीके यहाँ मुनीमी करके अपनी आजीविका चलाते थे। देशभक्तिकी भावना उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। ये काव्यप्रेमी भी थे और भारतीके त्यागका महत्व जानते थे। उनका नाम सुन्दरेश अय्यर था।

प्रवासकी कठिनाइयाँ

अंग्रेज सरकार फ्रेंच सरकारपर बहुत दबाव डालती थी कि इन राजनैतिक कार्यकर्ताओंको अपने यहाँसे हटा दे। पर राजनैतिक कार्यकर्ताओंको आश्रय देनेसे इनकार करना अन्तर्राष्ट्रीय नीति एवं नियमोंके विरुद्ध था। उसी प्रकार अंग्रेज सरकारको असन्तुष्ट करना उसके अपने स्वार्थके लिए हानिकारक था। इसलिए उसने एक नया कानून बनाया कि जो "विदेशी" पांडिचेरीमें आकर बसना चाहते हैं, उन्हें पांडिचेरीके पाँच ऑनरेरी मजिस्ट्रेटोंकी सिफारिश प्राप्त करनी होगी। पांडिचेरी भारतके अन्तर्गत एक छोटा-सा शहर है। उसपर फ्रान्सका अधिकार था इसलिए फ्रान्सीसी अधिकारियोंके लिए उस नगरके बाहरका भाग "विदेश" था। इस कानूनसे अरविन्द बाबू, व वें सु अय्यर, भारती और अन्य सभी



सुब्रह्मण्य भारती और उनकी पत्नी चेल्लम्मा

[illegible]

"सुदेशी" लोग बहुत चिन्तित हो गए। एक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भारतीके मित्र थे। भारतीने उन्हें सारी परिस्थिति समझाई। उन सज्जनने वहींपर एक सिफारिश पत्र लिखवाया और भारतीको आश्वासन देकर घर भेज दिया। दूसरे दिन उस सज्जनने भारतीको पत्रोंका एक गट्ठर लाकर दिया। उसमें भारतीके लिए, अरविन्द बाबूके लिए और व. वें. सु. अय्यरके लिए पाँच मजिस्ट्रेटोंके पाँच-पाँच सिफारिश-पत्र थे।

तब अंग्रेज सरकारने उन राजनैतिक शरणार्थियोंको कष्ट पहुँचानेका एक दूसरा मार्ग निकाला। पाण्डिचेरी एक छोटा-सा नगर है। वहाँ आश्रम प्राप्त उन सभी "सुदेशी" लोगोंको आर्थिक सहायता ब्रिटिश भारतसे ही मिलती थी। ब्रिटिश डाक विभागने सब पत्र मनीआर्डर आदि रोक लिए। उन तीनों या अन्य प्रतिष्ठित लोगोंके नामपर आनेवाले पत्र मनीआर्डर आदि प्रेषकोंको वापस कर दिए जाते थे। इससे भारती और उनके साथियोंको बहुत अधिक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थीं। पर उन लोगोंने सारे कष्ट बड़े धीरजके साथ सहन किए। सहायता पहुँचानेवाले डाकसे रकम न भेजकर खुद ले जाते थे या विश्वसनीय लोगोंके हाथ भेज देते थे। इधर सरकारको भी हार मानकर अपनी निर्धारित नीति बदलनी पड़ी।

पाण्डिचेरीमें अरविन्द बाबू, भारती और व. वें. सु. अय्यर प्रति दिन नियमित रूपसे मिला करते थे और अनेक विषयोंकी चर्चा करते थे। धीरे-धीरे अरविन्द बाबूकी अभिरुचि निरी राजनीतिसे हटकर आध्यात्मिक विषयोंकी ओर मुड़ी। भारतीमें भी इस तरहका कुछ-कुछ भाव परिवर्तन हुआ। केवल देशप्रेमके बदले अब वे देवीकी स्तुति "काली माँ" "शक्ति" आदिपर भी गीत रचने लगे। पर उनके देशप्रेममें किसी तरहका अन्तर नहीं हुआ। वह ज्यों-का-त्यों बना रहा।

पाण्डिचेरीमें "इण्डिया" पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका। उधर ब्रिटिश सरकारका विरोध था इधर फ्रेंच अधिकारियोंने भी बहुत कष्ट दिया। "इण्डिया" के बाद भारतीने "कर्मयोगी" नामक पत्र निकाला। यह भी अधिक समय तक नहीं चल पाया। इसके बाद उन्होंने "धर्म" नामक एक पत्र निकाला। यह भी कुछ समय तक ही चलकर बन्द हो गया।

भारतीने अपनी अधिकांश रचनाएँ पाण्डिचेरीमें ही कीं। वहाँ उन्होंने अनेक देशभक्तिपूर्ण गीत रचे। "पांचालि शपथम्" "कुयिल पाट्टु" "कण्णन पाट्टु" आदि काव्योंकी रचना की और "ज्ञान रथम्" नामक एक गद्य-काव्य भी रचा।

छुटकारा

प्रथम महायुद्धमें अनेक मशहूर राजनीतिज्ञोंने जर्मनीके विरुद्ध इंग्लैण्ड और उसके मित्र राष्ट्रोंका समर्थन किया था। उसके अन्त होनेपर स्वराज्य प्राप्त करनेके सपने देखे जा रहे थे। पर सरकारने लोगोंको केवल राज्यों (प्रान्तों) के

शासनमें कुछ विभागोंके संचालनका अधिकार दिया। इस नए राज्य-सुधार-आयोजनको अमलमें लाते समय सरकारने राजनैतिक कैदियोंको मुक्त कर देनेकी घोषणा की। भारती पाण्डिचेरीके तंग जीवनसे ऊब गए थे। उन्होंने ब्रिटिश भारतमें आनेका निश्चय किया। पाण्डिचेरीकी सीमा पार करके ज्यों ही उन्होंने ब्रिटिश भारतमें प्रवेश किया त्यों ही पुलिसने उन्हें हवालातमें ले लिया। इधर मद्रासके कई प्रमुख लोगोंने सरकारपर बड़ा प्रभाव डाला। फलतः शीघ्र ही भारती मुक्त कर दिये गए। कुछ दिन तक वे अपनी पत्नीके गाँवमें जाकर रहे। ताम्रपर्णी नदीका तटवर्ती यह सुन्दर गाँव उन्हें बड़ा प्रिय था। भारतीके लिए मानसिक शान्ति प्रदान करनेमें यह स्थान बड़ा ही उपयोगी सिद्ध हुआ।

कुछ दिन आराम करनेके बाद भारती फिर मद्रास चले आए। इस समय "सुदेश मित्रन" का सम्पादन ए. रंगस्वामी अय्यंगार नामक प्रसिद्ध विद्वान व देशभक्त करते थे। उन्होंने भारतीको फिर अपने कार्यालयमें ले लिया और उन्हें उस पत्रका उपसम्पादक बनाया। पत्र-सम्पादनके साथ वे सार्वजनिक कार्योंमें भी भाग लेते थे। हमारे देशमें उन दिनों मजदूरोंका संगठन नया-नया शुरू हो रहा था। उसमें भारतीने बड़ी दिलचस्पी ली थी।

गाँधीजीसे भेंट

सन् १९१९ के आरम्भमें गाँधीजीने राउलेट कानूनके विरुद्ध बड़ा प्रबल आन्दोलन शुरू किया था। उसीके सम्बन्धमें वे उस साल मद्रास पधारे। उस समय भारती उनसे मिलने गए। उनका गाँधीजीसे परिचय नहीं था न कोई उनका परिचय देनेवाला ही था। उस समय उनके गाँधीजीके पास जानेकी कोई बात ही नहीं थी। वे चुपचाप अचानक गाँधीजीके कमरेमें प्रविष्ट हुए और जाकर गाँधीजीके पास बैठ गए। उस समय उस कमरेमें राजाजी स्वर्गीय सत्यमूर्ति रंगस्वामी अय्यंगार आदि उपस्थित थे। वे सब भारतीके साहससे दंग रह गए। किसीने उनका गाँधीजीसे परिचय नहीं कराया। भारतीने न नमस्ते कहा न कोई भूमिका बाँधी। उन्होंने अपना परिचय भी नहीं दिया बोले—"मिस्टर गाँधी! आज शामको एक सभामें मैं भाषण देनेवाला हूँ क्या आप उस सभाके अध्यक्ष बनेंगे? गाँधीजीने महादेव भाईको बुलाकर शामके कार्य-कलापके सम्बन्धमें पूछा तो विदित हुआ कि उन्हें उस समय अन्यत्र जाना था। उन्होंने भारतीसे कहा—"आज तो नहीं हो सकता कल हो तो कैसा रहेगा?" भारतीने कहा—"यह नहीं हो सकता। अच्छा मैं विदा लेता हूँ। आप जो आन्दोलन शुरू कर रहे हैं वह देशके लिए बड़ा हितकर होगा। आपको मेरा आशीर्वाद है।" यह कह कर वे चले गए। बापूजी कुछ विस्मित-से हो गए। उन्होंने उस समय वहाँ उपस्थित लोगोंसे पूछा कि ये कौन हैं? राजाजीने जवाब दिया—"ये हमारे तमिल

देशके राष्ट्रीय कवि हैं।" बापूजीने पूछा— क्या इस तमिल देशमें ऐसा कोई नहीं है जो प्रेमके साथ इस कविकी सेवा-सुश्रूषा कर सके?

भारतीका हिन्दी-प्रेम

सन् १९१८ में बापूजीने दक्षिण भारतमें हिन्दी प्रचारका कार्य आरम्भ किया था। मद्रासके लोगोंको हिन्दी भाषा सिखानेके लिए उन्होंने अपने पुत्र देवदास गांधीको मद्रास भेजा था। देवदास गांधीने तिरुवल्लिक्केणि नामक प्रसिद्ध मोहल्लेमें एक हिन्दी वर्ग चलाया। यह वर्ग मंडयम् श्री श्रीनिवासाचार्य नामक प्रसिद्ध देशभक्तके घरपर चलता था। श्री श्रीनिवासाचार्य पाण्डिचेरीमें भारतीके साथ रहते थे और स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कम्पनी भारत भण्डार और अन्य राष्ट्रीय-सेवा-कार्योंमें बहुत अधिक धनकी हानि सहन कर चुके थे।

देवदास गांधीके मद्रास आनेपर गांधीजीने दक्षिणसे श्री हरिहर शर्मा और उनके साथ कुछ अन्य नवयुवकोंको हिन्दी सीखनेके लिए प्रयाग भेजा था। हिन्दीकी शिक्षा पूरी करके हरिहर शर्माके मद्रास लौटनेपर देवदास गांधीने इन्हें हिन्दी प्रचारका काम सौंप दिया और वे अपने पिताके पास वापस चले गए। इसी समय श्री भारती फिर मद्रास आ पहुँचे थे। श्री हरिहर शर्माजी पहलेसे ही भारतीसे परिचित थे शर्माजी भी "स्वदेशी" लोगोंमें मिले हुए थे शर्माजीकी धर्मपत्नी गोल्लीदेवी भी कडयम् गाँवकी हैं। भारतीकी पत्नी चेल्लम्मा भी इसी गाँवकी थीं। इसी नाते वे हरिहर शर्माके कार्योंमें अभिरुचि प्रकट करने लगे। भारती स्वभावसे ही हिन्दी-प्रेमी थे। इसी कारण उन्होंने अपनी पुत्रीको हिन्दी वर्गमें भेजना शुरू कर दिया। तिरुवल्लिक्केणिका "पार्थ सारथि" मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध है। उस मन्दिरके सामने कुछ बाईं ओरके घरमें ही हिन्दी वर्ग चलता था। उस मन्दिरके पीछेकी ओर एक किरायेके मकानमें भारतीजी रहते थे।

समानता सम्बन्धी उनकी दृष्टि इतनी विशाल थी कि वे कौए और गौरैयाको भी मानव जातिके समान ही मानते थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि प्रेमसे हिंस्र जन्तुओंको भी शान्त बनाया जा सकता है।

दक्षिण भारतके बड़े-बड़े मन्दिरोंमें हाथी पालनेकी प्रथा है। तिरुवल्लिक्केणिके मन्दिरमें एक हाथी था। भारती बहुधा प्रति दिन हिन्दी वर्गमें जानेके बाद मन्दिरके उस हाथीके पास भी जाते और उसको कुछ फल आदि खिलाते थे। एक दिन हाथीने उनको अपनी सूँड़से ठेल दिया। वे गिर गए। उन्हें कुछ हल्की-सी चोट आई। उनके कुछ मित्रोंने उनको वहाँसे हटाकर उनके घर पहुँचा दिया। उसके पहले भी उनका स्वास्थ्य बहुत सन्तोषप्रद नहीं था। सन् १९२१ सितम्बर, ११ तारीखको ३९ वर्षकी अल्पायुमें उनका देहान्त हुआ।

भारतीका व्यक्तित्व

भारती बड़े हँसमुख उदार-हृदय और स्वतन्त्रता-प्रिय थे। उनका आत्माभिमान तो ऐसा था कि बहुत अधिक संकटमें होनेपर भी वे किसीसे कुछ माँगते नहीं थे। ऐसी परिस्थिति पैदा कर देते थे कि दाता बोध नहीं मानने लगते थे कि कवि हमसे धन ग्रहणकर हमारा उपकार कर रहे हैं। वे कभी दाताके हाथसे दान इस तरह ग्रहण नहीं करते थे कि उनका हाथ नीचे रहे और दाताका ऊपर। दाताको अपना हाथ बढ़ाकर अपनी हथेलीपर दानकी रकम रखनी पड़ती थी— भारती वह रकम उठा लेते थे। वे कहते थे— यह अहंभाव नहीं है—यह कवि गौरवकी रक्षा है। यदि मैं दाताका हाथ ऊपर आने दूँ तो वह समझने लगेगा कि धनी कविसे बड़ा है। याचक दीन होकर दाताका दान ग्रहण करे तो उसमें न याचकका गौरव है और न दाताका महत्व।"

पाण्डिचेरीमें कृष्णस्वामी चेट्टियार नामक एक सज्जन थे। (तमिल प्रदेशके वैश्य लोगोंके नामके साथ "चेट्टि"—आदरसूचक 'आर' जोड़कर 'चेट्टियार' —शब्द जोड़ा जाता है।) वे भारतीके बड़े भक्त थे। वे भारतीसे अक्सर मिलने आते थे और उनके साथ कुछ समय बिताकर विदा होनेके पूर्व कुछ रुपये देकर जाया करते थे। एक बार भारतीको पैसेकी बड़ी आवश्यकता थी। रुपयोंके लिए उनका काम रुक गया था। संयोगवश उसी दिन वहाँ चेट्टियार आ पहुँचे। भारतीने कहा—"आओ भाई चेट्टियार! रोज गीत सुना करते हो! आज कहानी सुनो।"

चेट्टियारने कहा— आप जो भी सुनायेंगे मैं सुनकर धन्य हो जाऊँगा।"

भारतीने कहा—कहानी पुरानी है—सुनो। दो मित्र थे। एक था चेट्टि और दूसरा किसान था। दोनों कामपर कहीं गए थे। चूँकि रास्तेमें भयानक जंगल पड़ता था और रास्तेमें लुटेरोंका बड़ा डर था वे वहाँका काम पूरा करके जल्दी ही लौटना चाहते थे। पर काम जल्दी पूरा नहीं हुआ इसलिए उन दोनोंको वापस आनेमें देर हो गई। घर तक पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया।

इतनी कहानी सुनाकर भारतीने पूछा—क्यों चेट्टियार! कहानीको रोचक बनानेके लिए लुटेरोंको अभी बुला लूँ या जरा ठहर जाऊँ?

चेट्टियारने कहा—आप कलाकार हैं चाहे जब बुला सकते हैं। मैं तो आपके साथ चलनेवाला बटोही हूँ। मुझे किसी बातका डर नहीं है क्योंकि आप मेरे साथ हैं।

भारतीने कहा—वाह! वाह! इसीको कहते हैं दिलेरी! तुम बड़े बहादुर हो। अच्छा तो सुनो आगे। लुटेरोंने किसानको खूब मारा उसके पास जो कुछ था, वह सब छीन लिया। यह देखकर चेट्टि अचानक गिर गया। यह

भी मालूम करना कठिन था कि उनकी साँस चल रही है या नहीं। जब डाकू किसानको लूट चुके तब चेट्टीकी यह दशा देखकर आपसमें बातचीत करने लगे—चलो छोड़ो इस घबड़ो। मरेको क्या मारना है। चेट्टि झट बोल उठा—क्यों भाई! तुम्हारे यहाँके सब कमरमें दस रुपये बराबर रखते हैं क्या?

इतनी कहानी सुनानेके बाद भारतीने पूछा—क्यों भाई चट्टियार! कहानी ठीक तो है?

चट्टियारने कहा—मैं क्या जानूँ कि कहानी ठीक है या नहीं। आप सज्जन लोग ही कहेंगे। उस चेट्टीकी बात तो मैं नहीं जानता। पर मेरी कमरमें दस रुपए हैं लीजिए।

यह कहकर उसने अपनी कमरसे दस रुपयेका नोट निकाला और भारतीके सामने रख दिया।

भारतीने कहा—कहानीके लुटेरे रातके समय अँधेरेमें लूटा करते थे मैं तो दिन-दहाड़े लूटता हूँ। यह कहकर वे हँसने लगे। भारतीको चट्टियार जिस प्रकार देख रहे थे उससे यह साफ मालूम होता था कि उनके मनमें भारतीके प्रति कितनी श्रद्धा थी।

महात्माओंके आचार-विचार ही अलग होते हैं। शुरू-शुरूमें लोग उन्हें ठीकसे समझ नहीं पाते। उनकी निन्दा या अवहेलना करते हैं। पर कुछ समय बाद वे ही लोग उन महात्माओंकी पूजा करने लगते हैं। भारतीके जीवनमें ऐसी अनेक घटनाएँ घटीं जिनसे जन-साधारण ही नहीं उनके सगे-सम्बन्धी भी उन्हें पागल समझते थे। आज उन्हीं घटनाओंके कारण कविकी महिमा गाई जा रही है।

एक बार पाण्डिचेरीमें एक लड़का भारतीके देखनेमें आया। उसको लोग पागल मानते थे। वह चिल्लाता या बकता तो नहीं था पर सदा मौन रहता था। वह कुछ समझता नहीं था। भारतीने कहा इसे प्रेमसे पाल-पोसकर ठीक किया जा सकता है। लोग उनका उपहास करने लगे। परन्तु भारतीकी संगतिमें रहनेके कारण कुछ दिन बाद यह लड़का बोलने लगा और बातें समझने लगा। इस घटनाके बादसे सभी भारतीकी प्रशंसा करने लगे।

वैदिक धर्म वर्णाश्रम धर्म पुराण-इतिहास आदिपर भारतीकी श्रद्धा अवश्य थी पर वे अंध परम्पराका खण्डन करते थे। जाति भेदको तो वे मानते ही नहीं थे। बहुत दिन पहले ही उन्होंने यज्ञोपवीत पहनना छोड़ दिया था। वैसे यज्ञोपवीतका त्याग दक्षिण भारतीय ब्राह्मणोंमें अत्यन्त निन्दनीय माना जाता है। भारतीको भी इस बातपर कड़ी निन्दा सहन करनी पड़ी थी।

व. रा. (स्वर्गीय व. रामस्वामी) नामक प्रसिद्ध तमिल लेखकने अपनी "महाकवि भारतीयार" नामक भारतीकी जीवनीमें एक घटनाका वर्णन किया है। उसका सरल भावार्थ यों है —

"एक दिन सवेरे करीब आठ बजे मैं अरविन्दके आश्रमसे निकलकर भारतीके घर जा पहुँचा। वहाँ कई लोग एकत्रित थे। बीचमें एक होमकुण्ड था जिसमेंसे धुआँ निकल रहा था। कुछ लोग वेदपाठ कर रहे थे। वहीं होमकुण्डके पास भारती विराजमान थे। उनके पास ही कनक लिंगम नामक हरिजन बालक भी बैठा था। उस समय प्रोफेसर सुब्रह्मण्यम जैसे कई प्रतिष्ठित लोग भी वहाँ उपस्थित थे।

"मैं जाकर प्रोफेसर साहबके पास बैठ गया। मैंने धीरेसे उनसे पूछा— यह क्या हो रहा है? उन्होंने कहा—कनक लिंगमका यज्ञोपवीत संस्कार हो रहा है। अब गायत्रीका उपदेश होनेवाला है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने फिर प्रोफेसर साहबसे पूछा—भारतीके पास बैठा हुआ बालक ही क्या हरिजन बालक— कनक लिंगम नामक वह बालक है जिसका यज्ञोपवीत हो रहा है! उन्होंने कहा— वही है भाई, देखो भारती खुद लड़केको गायत्रीका उपदेश दे रहे हैं।

"मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ ही महीनों पूर्व एक बार भारतीने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं अपना यज्ञोपवीत उतार दूँ। वे खुद बहुत दिनोंसे यज्ञोपवीत नहीं पहनते थे। यह कैसी बात है? स्वयं यज्ञोपवीत नहीं पहनते और मुझे तो यज्ञोपवीत उतार देनेकी सलाह देते हैं और अब जिस हरिजन बालकको यज्ञोपवीत पहनानेके लिये ऐसा आडम्बर रच रहे हैं।

"मैं मौन बैठा रहा। भारतीने मेरी ओर देखा तक नहीं। गायत्रीका उपदेश पूरा होनेपर उन्होंने कनक लिंगमसे कहा—बेटा! आजसे तुम ब्राह्मण हो। तुम निर्भय रहो। किसीसे मत डरो। यदि कोई तुमसे यह पूछे कि तुम्हारा यज्ञोपवीत संस्कार करानेका साहस किसने किया तो तुम निर्भय होकर मेरा नाम बता सकते हो। किसी भी परिस्थितिमें यह जनेऊ न उतारना।

"भारतीका यह अनूठा उपदेश सुनकर मैंने चारों ओर एक नजर डालकर देखा कि कहीं लोग मन-ही-मन हँस तो नहीं रहे हैं। पर सबके चेहरोंपर मैंने भारतीके विचारोंके समर्थनका ही भाव पाया। उपनयनके कार्यक्रमके अनन्तर सभी लोग पान-सुपारी ग्रहण कर विदा हुए। कनक लिंगमको उसके घर तक पहुँचानेके लिए भारतीने अपने एक मित्रको भेजा।

"जब सब लोग चले गए तब भारतीने अपना यज्ञोपवीत निकाल डाला। हँसते हुए मेरे पास आकर बोले—क्यों क्या बात है? मैंने कहा—दो विवाहित पत्नियाँ (तमिल प्रदेशमें रुक्मिणी और सत्यभामा श्रीकृष्णकी धर्म पत्नियाँ मानी

जाती है।) और दस हज़ार गोपिकाओंके साथ क्रीड़ा करनेवाले श्रीकृष्ण नित्य ब्रह्मचारी माने जाते हैं। आपका यह ब्रह्मोपदेश (गायत्रीका उपदेश) भी कुछ ऐसा ही मालूम पड़ता है। भारतीने कहा—जिसको संसार ब्राह्मण मानता और जानता है उसके लिए जनेऊ आवश्यक नहीं है। हमारे-तुम्हारे लिए यह अनावश्यक है। नवीन ब्राह्मण बालक कनकलिंगमके लिए यह नितान्त आवश्यक है। जिस समय मैं उसको जनेऊ पहना रहा था उस समय मेरा भी जनेऊ पहनना आवश्यक था। यह काम पूरा हो जानेपर अब उसकी आवश्यकता नहीं रह गई है। मैं उसको उतार रहा हूँ।"

भारती स्वभावसे अत्यन्त उदार थे। स्वयं कष्ट उठाते रहनेपर भी माँगनेवालेको निराश न करते। अपना नये वस्त्र गर्म कमीज सब संपत्ति गरीबोंको दे डालते थे। हमारे यहाँ जैसे रिक्शा गाड़ी चलती है, वैसे ही पाण्डिचेरीमें उन दिनों "पुश कार्ट" नामक गाड़ी चलती थी। यह गाड़ी आगेसे खींची नहीं जाती थी पीछेसे ढकेली जाती थी—इसीलिये उसका नाम पुश (Push) गाड़ी पड़ा। ऐसी गाड़ी चलानेवालोंमें सदा होड़ रहा करती थी कि कौन भारतीको अपनी गाड़ीमें ले जाएगा।

भारतीका सन्तोष

भारतीको जीवनभर आर्थिक कठिनाई सहनी पड़ी। पर इस कारणसे वे कभी विचलित नहीं हुए। ज्ञान रथम् उनका एक उत्कृष्ट गद्य-काव्य है। अपने ज्ञान रूपी रथपर सवार होकर वे उपशान्ति लोक, गंधर्व लोक, सत्य लोक और धर्म लोकका पर्यटन करते हैं। इन लोकोंके बीचमें मृत्यु लोकका भी वर्णन करनेका अवसर कविने निकाला है। उसमें उन्होंने अपने कुटुम्बकी स्थितिका बहुत ही सजीव और सुन्दर वर्णन किया है। उनकी पत्नी उनके सामने आवश्यक वस्तुओंकी सूची पेश करती है—कविने अंदाज लगाया कि उस एक दिनकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए उन्हें कम-से-कम अढ़ाई लाख रुपयोंकी आवश्यकता होगी।

भारती "मिथ्यावाद" का खण्डन करते थे। उन्होंने कहा है—"क्या इस संसारको मैं सपना मानूँ? क्या मेरी रूपवती पत्नी निरी माया है? सोनेके खिलौने-सी मेरी दो पुत्रियाँ क्या सपने हैं? नहीं मैं यह नहीं मान सकता।" भारती सौन्दर्यके उपासक थे। पर उनकी सौन्दर्य भावनामें कामुकता नहीं थी। सुख भोगके प्रेमी अवश्य थे पर सुख भोगमें इन्द्रियोंके अधीन होना वे सह नहीं सकते थे। उनका विश्वास है कि ईश्वरने सबको सुखी रहनेके लिए पैदा किया है। हम अपने सुखके साथ दूसरोंके सुखका प्रयत्न करें तभी हम सच्चे आस्तिक बनेंगे। उन्होंने कहा है —

"तनि ओरुवनुक्कुण विलै एनिल
जगत्तिनै अलित्तिडुवोम।

किया करती थी। संयोगवश मैं एक राजकुमारसे मिली। मेरा उससे प्रेम हो गया—मैं उससे भी मिल लिया करती थी। एक बार इन सारी बातोंका भेद खुल गया तो तीनों प्रेमी आपसमें लड़कर मर गए। वही शिकारीकी पुत्री अब कोयल बनी, चक्रमदास बैल बना, हनुमानदास बन्दर बना और राजकुमार तुम स्वयं हो। एक साधुने मुझसे कहा था कि मैं तुमसे अवश्य मिलूँगी। कोयलकी बात सुनकर कवि प्रेम-मग्न हो गया। उसने अपने हाथ बढ़ाए। कोयल उसके हाथोंमें आ गिरी। कविने उसे अपनी छातीसे लगा लिया। देखा—यह तो कोयल नहीं रूपवती युवती है। अचानक कवि जाग उठा। उसको ख्याल आया कि वह कल्पनामें निरा स्वप्न देख रहा था।

भारतीकी कविताओंको चार हिस्सोंमें बाँटा जा सकता है—देश-भक्तिके गीत, देव भक्तिके गीत, रचनात्मक काव्य और फुटकर काव्य। उनके सैकड़ों निबन्ध हैं। उनकी कई कहानियाँ हैं। वैशाक्तम् एक कहानी है जिसमें यह सिद्ध किया गया है कि वैष्णव और शाक्तके मेलसे वैशाक्तम् बनता है।

भारतीके जीवन-कालमें किसीने उनपर ध्यान नहीं दिया। उनकी मृत्युके बाद ही उनके साहित्यकी महिमा बढ़ी है। हम निस्संकोच कह सकते हैं कि कम्ब कविके बाद भारती ही हुए, जिनकी छाप तामिल साहित्यपर बहुत गहरी पड़ी है।

• • •

सुब्रह्मण्य भारती

[काव्य-संचय]

६ कशिप्पवयतिम् अमाल्–एमन्
कावित्त यिप्_ग तिवोमोयि एल्साम्
एप्रेत्तवो पेयरप्पु–पिसर्
यानुम अपिमुट्टिरन्नाम कप्पोर् ।

७ तम्मे मळ्ळ् वलियालुम्–मुन्नु
नाममपुम्पर् तवयलियालुम
इमायळप मद्दुम कास्म्–एमे
एरिदुप्पार्कुम् मञ्जिनाइस्मान्

८ इम्मोमु सोत्तिळने वेट्टेन्–इमि
एतुमोपूवेन् एम नाण्यिर् मक्काळ् !
कोयिदम पोम् ओव वार्त–इंगु
कूरत्तपावम् कूरिमन् कप्पीर् ।

९ पुत्तम पुथिय कसैमळ्–मन्न
मूल घोयम् पाळिन् नुरपमळ्कूस्म्
मेत्त वळमु मेर्के–मन्न
मेग्गे कसे मळ् तमिपिमिम् इस्के

१० सोत्तमुम कूतुमविस्ते–अवे
सोत्सुम तिरमे तमिय् मोय्यियिसक्ते
मेस्स तमिपिग्गि यागुम–मम्म
मेर्कु मोयिगळ् भूमि मिदा योगुम

६ जब मैं कन्या थी तब (कन्या पर्वमें उन दिनों) मेरे कानोंमें चारों ओर चलनेवाली (अनेकों दिशाओंकी) अनेकों बातें पड़ी थीं। उनके न जाने क्या-क्या नाम थे। वे स्वयं मिटकर नष्ट हो गई।

७ पिताकी कृपाके बलसे और प्राचीन उत्तम कवियोंके तपके बलसे आजतक काल मेरी ओर दृष्टि उठाते हुए भी डरता था।

८ आज मने एक बात सुनी। हाय! मेरे प्यारे बच्चो! अब मैं क्या करूँ? आज बोलनेकी योग्यता न रखनेवाले एक व्यक्तिने ऐसी बात सुनाई। सुनाई क्या, मानों मुझे मार ही डाला।

९ "नई-नई कलाएँ, पञ्च भूतोंके कार्यकलापके मर्म (आदिसे सम्बन्ध रखनेवाला साहित्य) आदिकी पश्चिममें खूब उन्नति हो रही है। वे विशद कलाएँ तमिलमें नहीं हैं।"

१० 'वे बतलाई नहीं जा सकती हैं। उन्हें व्यक्त कर बतलानेकी शक्ति तमिलमें नहीं है। अब धीरे धीरे तमिल मर जाएगी। परिणामतः वे पाश्चात्य भाषाएँ अब दुनिया भरमें फैलेंगी।

११ एयन्ब पेबे उरत्तानु-मा
इन्ब बली एनबकोयुबिडसामो
सेमिडुबीर् एहह् बिक्कुम-कली
सेल्वंपळ् यापुम कोणार्मदणु सेपीर् ।

१२ तम्मै मबळ् बलियासुम-बपु
सारव पुत्मवर् सब बलिम्यासुम
इम्ब पेबमपवि तोरुम-पुगप्
पुरिम्पुवि मिसै पट्म इरूपेन् ।

---

११ उस भाग्यहीन यह सब कहा। हाय! हाय! मैं क्या इस निन्दाके योग्य हूँ? (मेरे बच्चो!) तुम लोग आठों दिशाओंमें चले जाओ। कलाकी जितनी सम्पत्ति मिले लाकर यहाँ (तमिल साहित्यमें) एकत्रित करो।

१२ पिताकी कृपाके बलसे और आपके उत्तम विद्वानोंके तपके बलसे मैं इस महान अपयशसे बच जाऊँगी। उत्तम कीर्ति पाकर मैं अमर बनी रहूँगी।

---

२ तमिष्

१ यामरिन्द मोयिगळिले तमिष् मोयिपोल्
इनिदावदेंगुम काणोम्
पामररायु, विलंगु गळाय् उलगनैत्तुम
इगष्चि सोल पान्मै केट्टु
नाम मनु तमिष् रेनक्कोण्डु इगु
वाष् न्दिडुदल नन्रो ? सोल्लीर् !
तेमदुर तमिष् ओसै उलग मेलाम
परवुम वगै सेय्दल् वेण्डुम ।

२ यामरिन्द पुलवरिले कम्बनैप्पोल
वळ्ळुवर् पोल् इळंगोवै पोल्
भूमितनिल् यांगणुमे पिरन्दतिल्लै
उण्मै वेरुम पुगष् चि इल्लै ।
ऊमैयराय् सेविडर्गळाय् कुरुडर्गळाय्
वाष्गिन्रोम , ओरु सोल केळीर्
सेम मुरवेण्डु मेनिल तेरुवेल्लाम
तमिष् मुषक्कम सेयिगिडुवीर् ।

९. तमिल

इस कवितामें कवि तमिल भाषाकी महिमा गाकर आजकलके तमिल लोगोंकी दुर्गतिका वर्णन करता है और समझाता है कि उनका क्या कर्तव्य है। तमिल लोगोंकी जो बात है वह सभी भाषा भाषियोंके लिए लागू है।

१ हम जितनी भी भाषाएँ जानते हैं उनमें तमिल भाषाके समान मधुर कहीं कोई दूसरी भाषा नहीं है। (ऐसी उत्तम भाषा पाकर भी) हमें तुच्छ होकर, पशु तुल्य होकर सारे संसारकी निन्दाके पात्र होकर अपने बड़प्पनसे भ्रष्ट होकर नाम मात्रके लिए "तमिल-वाला" कहलाते हुए रहना क्या अच्छा है? हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि मधु-सा मिठास सींचनेवाली तमिलकी आवाज संसार भरमें फैले।

२ हम जितने कवियोंसे परिचित हैं उनमें 'कम्ब' के समान "वल्लुवर" के समान और "इळंगोवे" के समान दुनिया भरमें कहीं कोई पैदा नहीं हुआ है। यह सत्य है, यह झूठी बड़ाई नहीं है। (अब) हम लोग गूंगे होकर, बहरे होकर अन्धे होकर रहते हैं। एक बात तो सुनिए, यदि सुसभ्यतापूर्वक रहना हो तो गली-गलीमें तमिल भाषाकी धूम हो।

३ पिर माट्टु मत्सरिक्कुन्नोर् शास्तिरगळ्
 तमिष् मोषियिल पेयर्त्तिडल वेण्डुम्
इरवाद पुगष् उडैय पुदुनूल्गळ्
 तमिष् मोषियिल इयट्रल् वेण्डुम्
मरवाग ममक्कुळ्ळे पय गवगळ्
 सोल्लविल्लोर् महिम इल्लै
तिरमान पुलमैयेनिल् वेळिनाट्टोर्
 अदै वणक्कम् सेय्दल वेण्डुम् ।

४ उळ्ळत्तिल् उण्मैयोळियुण्डायिन्
 वाक्किनिले ओळियुण्डागुम
वेळ्ळत्तिन् पेरुक्कै पोल् कलै पेरुक्कुम
 कवि पेरुक्कुम मेय् मायिन्
पळ्ळत्तिल वीष्न्दिरुक्कुम कुरुडरेल्लाम
 विषि पेट्रु पदवि कोळ्वार्
तेळ्ळुट्र तमिषमुदिन सुवै कण्डार्
 इंगमरर् सिरप्पु कण्डार् ।

---

३ अन्य देशोंके उत्तम विद्वानोंके शास्त्रोंका तमिलमें अनुवाद करना चाहिए। अमर कीर्ति पा सकें—ऐसी नई रचनाएँ तमिलमें रचनी चाहिए। छिप छिपे (घर बैठे) आपसमें अपनी पुरानी बड़ाई सुनानेमें कोई गौरव नहीं है। उत्तम पाण्डित्य तो वही है जिसके सामने विदेशी लोग सिर झुकाएँ।

४ हृदयमें यदि सच्ची ज्योति जगे तो जिह्वापर ज्योति चमकेगी। यदि बाढ़के प्रवाहकी तरह कलाकी और कविताकी बाढ़ बढ़े तो गड्ढेमें पड़े हुए अंधे सभी दृष्टि पाकर उत्तम पद (आदरणीय स्थान) पाएँगे। सुमधुर तमिल-अमृतका स्वाद लेनेवाले यहाँ देवताओंका गौरव पाएँगे।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम एन्नोम –एगळ्
मानिक तायै वणंगुन्नेन्नोम । (वन्दे)

१ जाति मतंगळे पारोम –उमर्
जन्मभिद्देशत्तिल एय्दिन रायिन्
वेदियरायिनुम ओंघे–अन्नु
वेरमुलत्तिम रायिनुम ओन्ने । (वन्दे)

२ ईन पर्यमंळेनुम –मचर्
एन्नुडन् वाव विंगियप्पवरलो
वीनलराय् चिडुवारो–पिर
वेसत्तार् पोल् पल तींगिप् प्यारो । (वन्दे)

३ मायिरमुण्डिनु जाति–एनिल्
अन्नियर् व्र पुगस एन्न मीति–ओर्
तायिन् वयिट्टिल् पिरन्धोर्–तम्मुळ्
सण्डे सेय्दालुम सहोदर रचो ? । (वन्दे)

४ ओम्नु पट्टाल उण्डु वाय्वु–नम्मिल
ओट्ट्म नींगिल् अनैवर्कुम ताप्वु
नम्मिडु तेन्दिवाल वेण्डुम–इन्द
ज्ञानम वन्दाल पिरमगट्टेनु वेण्डुम । (वन्दे)

३ वन्दे मातरम्

यह गीत उन दिनोंमें रचा गया जब 'वन्दे मातरम्' का उच्चारण भी राजद्रोह माना जाता था।

वन्दे मातरम् कहें! 'महान् भूमि माताको सिर झुकाएँ" कहें।

१ हम जाति या धर्मको महत्व नहीं देंगे। यदि उत्तम जन्म इस देशमें प्राप्त कर लिया हो तो फिर ब्राह्मण हो या किसी अन्य कुलका—सब समान हैं।

२ कुछ हरिजन हों तो क्या वे हमारे ही साथ यहाँ नहीं रहेंगे? क्या वे चीनवाले बन जाएँगे? अन्य देशवालोंके समान क्या वे हानि पहुँचाएँगे?

३ हममें हजार जातियाँ हैं, तो (इस बातको लेकर) अन्योंका दखल देना कहाँकी नीति है? एक माँके पेटसे उत्पन्न भाई आपसमें लड़ लें तो भी क्या वे (एक दूसरेके) सहोदर नहीं हैं?

४ अगर हम एक होकर रहें तो हमारा (कुशल) जीवन है। यदि हमारी एकता टूट जाय तो हमारा पतन है। यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए। यह ज्ञान यदि हमें हो जाय तो फिर हमें किस बातकी कमी रहेगी?

४. भारत देशम्

भारत देस मेमु पेयर वोल्सुवार मिडि
मर्मगोल्सुवार सुपर पर्ग वेस्सुवार ।

१ वेव्हिळ पनि मसेंयिम मीवुळवुवोम-अडि
मेसे क्वाल मुपुडुम कप्पस विडुवोम
पळ्ळिलला मनतुम कोइकसोपृपुवोम एगळ
भारत देस मेमु तोळ कोटट्टवोम । (भारत)

२ सिंगळत्तीविमुक्कोर पाक्कम अमैप्पोम
सेतुव मेडुवति वीदि समैप्पोम
वंगत्तिल ओडिवरुम नीरिन मिगैयाल
मैयत्तु नाडु गळिल पयिर वोपृपुवोम । (भारत)

३ वेट्टु कनिगळसेयुदु तंगम मुदलाम
वेर पल पोरुळगळुम कुडैन्देडुप्पोम
एट्टुत्तिसै गळिलुम वोन रिवे विढ्ढ
एण्णुम पोरुळनतुम कोण्डुवरुवोम । (भारत)

४ मुत्तु कुळिप्पदोर तेन कडलिले
मोयृत्तु वणिकर पल नाट्टिनर वन्दे
नर्त्ति ममक्किनिय पोरुळकोण्डु
मम्मरुळ वेण्डुवडु मेकरैयिले । (भारत)

५ सिंधु नदियिन मिसै निलवितिनिले
सेरा नन्नाट्टिळमा पेण्गळुडने
सुंदरतेलुंगिनिल पाट्टिसैत्तु

भारत देश

स्वतंत्र भारतका उद्देश्य क्या है? इसकी कल्पना कवि भारतीने आजसे पचास वर्ष पूर्व यों की थी —

भारत देशका नाम लेनेवाले अभावके भयको नष्टकर दुख और शत्रुतापर विजय पाएँगे।

१ हम शुभ्र हिमाचलपर सैर करेंगे पश्चिमके समुद्रोंपर जहाज चलाएँगे निचले प्रदेशोंमें मन्दिर बनाएँगे— भारत देश (हमारा) कहकर (ताल) भुजा ठोकेंगे।

२ सिंहल द्वीप तक एक पुल बनाएँगे, (श्रीरामचंद्र द्वारा पूर्व निर्मित) सेतुको ऊँचा बनाकर सड़कें बनाएँगे। बंगमें जानेवाले पानीके आधिक्यको लेकर बीचके प्रदेशोंकी खेती बढ़ाएँगे।

३ खोद-खादकर सोना और अन्य अनेक द्रव्य निकालेंगे। आठों दिशाओंमें जाकर उन्हें बेचेंगे और इच्छित वस्तुओंको ले आएँगे।

४ मोती निकालनेका काम दक्षिणी समुद्रमें होता है। वहाँ अनेक देशोंके व्यापारी आएँगे और हमारे पसन्दकी चीजें हमें देकर हमारी कृपा चाहेंगे।

५ सिन्धु नदीपर चाँदनी रातमें केरल प्रदेशकी नवयुवतियोंके साथ सुन्दर तेलुगु (भाषा) के गीत रचकर (गाते हुए) नाव चलाकर आनन्द मनाएँगे।

६ गंग नदि पुरत्तु गोधुमै पण्डम
काविरि वेट्रि लैक्कु मारकोळ्ळुवोम
सिंग मराठियतम कवितै कोण्डु
चेरत्तु दंतगळ परिसळिप्पोम । (भारत)

७ काशि नगर पुलवर पेशुम उरै तान
काञ्चियिल केट्पदर्कोर करुवि शेय्वोम
राजपुतानत्तु वीरर तमक्कु
नल्लियर कन्नडत्तु तंगम अळिप्पोम । (भारत)

८ पट्टिनिल आडैयुम पंजिल उडैयुम
पण्णि मलैमलैया वीदि कुविप्पोम
कट्टि तिरवियंगळ कोण्डु वरुवार
काशिनि वणिगरक्कु अवै कोडुप्पोम । (भारत)

९ आयुधम शेय्वोम नल्ल कागिदम शेय्वोम
आलैगळ वैप्पोम कल्वि शालैगळ वैप्पोम
ओयुदल शेय्योम तलै सायुदल शेय्योम
उण्मैगळ शोल्वोमपल वण्मैगळ शेय्वोम । (भारत)

१० कुडैगळ शेय्वोम उषु पडैगळ शेय्वोम
कोम्बिगळ शेय्वोम इरुम्बाणिगळ शेय्वोम
नडयुम परप्पु मुणर वण्डिगळ शेय्वोम
ञालम नडुंग वरुम कप्पल शेय्वोम । (भारत)

६ कावेरीकी ओरके नागरपानोंके बदलेमें गंगा नदीकी ओरके गेहूँ लेंगे, सिंह (जैसे वीर) मराठोंकी कविता लेकर उन्हें चेर प्रदेशके हाथी दाँतसे पुरस्कृत करेंगे।

७. काशी नगरके विद्वान जो व्याख्यान देंगे वह काञ्चीमें सुना जाए, ऐसा यन्त्र बनाएँगे। राजपूतानाके वीरोंको कन्नड़ प्रदेशका उत्तम सोना देंगे।

८ रेशमके और सूती वस्त्र बनाकर पहाड़-सा ढेर लगा देंगे। गजनीके व्यापारी ठोस पदार्थ लाएँगे—उन्हें वे (वस्त्र आदि) देंगे।

९ औजार बनाएँगे—अच्छे कागज बनाएँगे, कारखाने खोलेंगे, विद्यालयोंकी स्थापना करेंगे। हम थकेंगे नहीं, सिरको नीचे गिरने नहीं देंगे, सच्ची बात बोलेंगे एवं उदारताके कार्य करेंगे।

१० छाते बनाएँगे, हल आदि खेतीके लिए आवश्यक वस्तुएँ बनाएँगे, बोरे बनाएँगे—लोहेकी कीलें बनाएँगे। कवच और विशाल गाड़ियाँ बनाएँगे। जिनको आते देखकर यम भी डर जाए, ऐसे जहाज बनाएँगे।

११ मन्दिरम कर्पोम विनै तन्दिरम कर्पोम
वान मळप्पोम कडल मीनै मळप्पोम
चन्दिरा मण्डलत्तियल कण्डु तेळिवोम
सन्दि तेरुपेरुक्कुम शात्तिरम कर्पोम। (भारत)

१२ काविमय शेय्वोम मस्क काडुवळर्पोम
कलै वळर्पोम कोल्ल कुलै वळर्पोम
ओवियम शेय्वोम मल्ल ऊशियळ शेय्वोम
उलमतोषिलनैत्तु मुवन्नु शेय्वोम। (भारत)

१३ शादि इरण्डोषिय वेरिल्लै—एन्ने
तमिय मगळ शोल्लिम शोल अमिधमम एन्बोम
नीदि नेरिथिमिनु पिरर्कुदवुम
नेर्मैयर मेलवर, कीवुवर मन्नोर। (भारत)



११ मन्त्र सीखेंगे काम करनेके तन्त्र सीखेंगे। आकाशको मापेंगे—समुद्रकी मछलियोंको नापेंगे। चन्द्रमण्डलकी बनावटकी जानकारी पाएंगे। सुरगों (खान)को बंधा सकें—ऐसी विद्या सीखेंगे।

१२ काव्य रचेंगे सुन्दर वन निर्मित करेंगे कलाकी वृद्धि करेंगे कारीगरों (लुहार आदि) की भट्टियाँ बढ़ाएंगे। चित्र बनाएंगे, अच्छी सूइयाँ बनाएंगे। संसारकी जितनी भी कारीगरियाँ हैं, मन लगाकर करेंगे।

१३ औवै नामक प्रसिद्ध तमिल पुत्रीने जो कहा कि "जाति केवल दो हैं—कोई तीसरी नहीं, यह अमृतवचन है"—यह घोषित करेंगे। नीति-निष्ठ होकर दूसरोंका उपकार करनेवाले उत्तम जातिके और अन्य लोग निम्न जातिके हैं—यह घोषित करेंगे।

---

५ संगळ ताम

१ तोम्रु निगप्पवलैतुम उर्वन्विडु
पूपू कसै वापर्गळुम—इवळ
एमु पिरन्दवळ एमुपराव
इयलविमळाम एंमळ ताम ।

२ पोस्म मपुत्तकॊरियप्पिरायत्तळ
मायिनुमे एंपळ ताय—इम्व
पाळळ एमाळुमोर कबिगे एस
पयिवडुवाळ एगळ ताम ।

३ मुप्पतु कोटि मुहमुडैयाळ उयिर
मोयुम्बुर ओपुडयाळ—इवळ
सेम्पु मोषि पविनेट्टुडैयाळ एनिर
सिन्दने ओपुडैयाळ ।

४ मायिनिल वेह मुडयवळ—शेयिल
नर्सरतिगप् वाळुडयाळ—तनै
मेविमर्किमयळ वोयुवळ तीयरै
वोट्टुडु तोळुवै याळ ।

५ मळवु कोटि तडक्के गळसुम
मरेगळ मडसुवळ साय—तमै
पेळवु माषि पहवरतुगळ
दोमुडु किडसुवळ ताम ।

५ हमारी माँ

इस कवितामें कवि भारत माताका वर्णन करता है —

१ हमारी माँ इस प्रकारकी है कि पुरानी जितनी भी बातें हुईं, उन सबको जाननेवाले ज्ञानी भी यह नहीं जान सकते कि यह (माता) कब पैदा हुई।

२ यद्यपि यह ऐसी है कि कोई भी इसकी आयुका निर्धारण नहीं कर सकता तो भी जब तक यह संसार स्थित रहेगा तब तक हमारी माता कन्याके रूपमें विराजमान रहेगी।

३ मुँह इसके तीस करोड़ पर प्राण इसका केवल एक है। (एक हृदय है भारत जननी!) इसके बोलनेकी अठारह भाषाएँ हैं पर इसका चिन्तन एक ही है।

४ इसकी जीभपर वेद है, हाथमें भलाई करनेवाली तलवार है, आश्रय लेनेवालोंपर कृपा करती है—इसकी भुजाओंमें दुष्टोंको गिरा देनेकी ताकत है।

५ साठ हजार सबल हाथोंसे हमारी माँ युद्ध करती है, विरोध मानकर आनेवालोंको यह चूर चूर कर देती है।

६ मूनिमियिनुम पोरे मिक्कुवेयाळ पेरुम
पुष्पिय मेन्मिकमळ ताय-एनिल
सोमिप्प्यार मुनमिमिविकुगार कोवुम्
कुर्गयने यवळ ताय ।

७. वन्दे वाडेमावि वल तुरविय
कै तोप्.वाळ एंगळताय-वैयिल
मोवे तिमिरि कोप्पेप्.स गाळुम
मोरुवनेयुम तोपुवाळ ।

८. योगतिमे मिगन्दूयळ-उम्मेयुम
मोमेम मधरिवाळ-उयर
मोगतिमेयुम मिरैम्यवळ एन्मवम
पोर्वुवे तानुवैमाळ ।

९ मस्करम नाविय मधरे वाय ति
मयम पुरिवाळ एंगळताय-अवर
अम्मवरामिन मवरे बिप्.बिग पिन
आनव पूतिदु वाळ ।

१० वेण्मै बळर इमयाचलन तन्द
बिरन मगळाम एंगळताय-अवन
तिरुम मरयिनुम तानमरियाळ निम्तम
श्रीरुणवाळ एगळ ताय ।

---

६ भूमिसे भी अधिक सहनशील है, बड़े ही पवित्र हृदयवाली है। पर लड़नेवालोंके सामने तो वह भयंकर दुर्गा स्वरूपिणी ही है।

७. भालपर बालचन्द्रको धारण करनेवाले सन्यासीको भी वह हाथ जोड़ती है और एक चक्रायुध धारणकर सातों लोकोंका पालन करनेवाले एककी भी पूजा करती है। शिव और विष्णु दोनोंकी पूजा करती है।

८ योगमें वह असमान है वह जानती है कि सत्य एक ही है। उत्तम भोगोंसे भी वह सुसम्पन्न है—उसके पास सोनेका ढेर है।

९. सद्धर्मी राजाओंको वह आशीर्वाद देकर उनका भला करती है। जो वैसे नहीं हैं, उन्हें निगलकर वह आनन्दका ताण्डव नृत्य करती है।

१० हमारी माँ शुभ्र हिमालयकी दी हुई कन्या-युवती है। उस (हिमालय) का अस्तित्व मिट जाए तो भी आप नष्ट हुए बिना सदा बनी रहेगी।

६ तायिन मणिक्कोडि

तायिन मणिक्कोडि पारीर—अदै
        ताय्न्दु पणिन्दु पुगष्न्दिड वारीर ।

१ औंगि वळर्न्दवोर कम्बम—अदन
        उच्चियिन मेल वन्दे मातरम एन्ऱे
पांगिन एष्ुदि सिरष्ुम—सेम्म
        पट्टोळि वीशि परन्दडु पारीर । (तायिन)

२ पट्टु तुगिलेना सामो—अदिल
        पायुम्दु शुवड्ुम वेरुम्बुयरकाद्
मट्टु मिगुन्दविसायुम—अदै
        मदियाद वुढविकोळ माणिक्क पडलम (तायिन)

३ इन्दिरन वच्चिरम ओरपाल—अदिल
        एंगळ तुरुक्करिळम्पिरै ओरपाल—ताय
मन्दिरम नडुवुर तोन्नुम—अदन्
        मान्मै वगुसिवयस्तवम यारो । (तायिन)

४ कम्बत्तिन कीष् निट्रककाणीर—एंगुम
        काणरुम वीरर पेरुन्तिरुक्कूट्टम
नम्बर्कुरिय अव्वीरर—तंगळ
        नल्लुयि रोम्बुम कोडियिनकाप्पर । (तायिन)

५ अणिमणियायवर निर्कुम—इन्द
        आरियम काट्टिप पोर आर्तवमप्पो
पणिगळ पोरुन्दिय मार्बुम—विरल
        पण्डिरर्योगुम वडिवमुम काणीर । (तायिन)

६ माताका झण्डा

पचास वर्ष पूर्व जब राष्ट्रीय महासभाने भी झण्डेकी कल्पना नहीं की थी उस समय कवि भारतीने राष्ट्रीय ध्वजाकी कल्पना करके उसको एक रूप प्रदान किया था।

माताका उत्तम झण्डा देखो। सिर झुकाकर उसकी वंदना करें और उसकी कीर्ति गावें।

१ ऊँचा-सा एक खम्भा है। उसके शिखरपर एक चमकनेवाला रेशम उड़ रहा है जिसमें सुवर्णाके साथ 'वन्दे मातरम्' लिखा हुआ है।

२ क्या उसको सिर्फ रेशमका कपड़ा ही मानें? उसको धरकर बड़ी तेजीसे बहनेवाली आँधी चले तो भी उसकी परवाह न करनेवाला सबल वस्त्र है।

३ उसके एक पार्श्वमें वज्रका चिह्न है दूसरी ओर हमारे मुसलमानोंका दूजका चाँद है। बीचमें माताका मंत्र (वन्दे मातरम्) दिखाई पड़ता है। उसके महत्त्वको समझनेकी शक्ति किसमें है?

४ कहीं भी देखनेमें दुर्लभ वीरोंका समूह खम्भेके नीचे (पास) खड़ा है देखो। वे विश्वसनीय वीर अपने अमूल्य प्राण देकर भी झण्डेकी रक्षा करेंगे।

५ उन लोगोंका पवित्र भाव सदा रहेगा—क्या यह आर्य पुरुष (उत्तम पुरुष) आनन्दप्रद नहीं है? उनके आभूषणोंसे अलंकृत वक्षस्थल और विजय-श्रीके तेजसे युक्त रूपको तो देखो।

६ सन्नमिप माट्टु पोगनर–कोडु
तीक्कन मरवर्गळ, घोरन्वनवीरर
क्षितै तुणिन्द तेसुंगर–साम्पिन
दोर्वाकिनके पणिवोपूविडुम पुळुवर ।

७ कन्नडर ओट्टियरोडु–पोरिल
कासनुम अञ्जवकलक्कुम मराठर
पोन्नगर देवगळोप्प–निर्कुम
पोर्पुडैयार इन्दुस्तानत्तुमस्सर ।

८ भूतलम मुट्टिवुम वरयुम–अरा
पोरविरल यावुम मरप्पुरूम वरंयुम
मातगळ कर्पुक्कळ वरेयुम–पारिल
मरैवरूम कीर्तिकोळ रजपुत वीरर ।

९ पञ्जनवतु पिरन्योर–मुन्नै
पार्तन मुदर पलर वाय्न्द नन्नस्तुार
तुञ्जुम पोपु विनुम तामिन–पद
तोण्डु निनात्तिडुम वंगत्तिनोरुम

१० सेम्बर्द वाप्पतु काषीर–अवर
शिम्मैयिन वीरम मिरन्तरम वाय्न्द
तेम्बवर पोट्टुम बरत–निला
तैयि तुयरम भिरप्पुर वाय्न्द (तायिन)

———

६ तमिल प्रदेशके वीर–भयकर आँखोंवाले मरव (नामक जातिके) लोग, चेर राज्यके वीर विधिवन्त आंध्र लोग, माताकी सेवामें ही निरत तुलुव (जातिके) लोग ।

७ कन्नड लोग, ओट्टि (उत्कलके) लोग, काल भी डर जाए–इस प्रकार युद्धमें जूझनेवाले मराठे स्वर्गके देवताओंके समान सहनशील हिन्दुस्तानक (आर्यावर्तके) वीर ।

८ जबतक भूतल नष्ट न हो जाए जबतक धर्म-युद्धकी विजयका अंत न हो, जबतक माताओंका सतीत्व नष्ट न हो तबतक बनी रहनेवाली कीर्तिसे युक्त राजपूत वीर !

९ पाँच नदीके प्रदेशके लोग पार्थ आदि वीरोंके जन्म प्रदेशके लोग सोते हुए भी माताकी चरण-सेवाका ध्यान रखनेवाले बंगके लोग ।

१० एक साथ होकर उस (सब) की रक्षा कर रहे हैं, देखो, उनका एकाग्र वीरत्व सदा बना रहे ! समर्थ लोगोंसे प्रशंसित भारत देवीकी ध्वजा चली रहे ! !

भारत समुदायम्

भारत समुदायम वाप्र्गवे—वाप ग वाप्र्ग
भारत समुदायम वाप्र्गवे—जय! जय!!, जय!!! (भारत)

मुप्पतु कोटि जनंगळिन संगम
मुप्_मैक्कुम पोतु उडमै
ओप्पिलाद समुदायम
उलगत्तुक्कोरु पुदुमै—वाप ग (भारत)

१ मनितर उणव मनितर परिक्कुम
वषक्कम इनियुण्डो ?
मनितर नोगा मनितर पार्क्कुम
वाप वक्कै इनि उण्डो—पुलनिल
वाप्वक्कै इनि उण्डो—नम्मिलन्द
वाप्वक्क इनि उण्डो ?

इनिय पोषिल गळ नेडिय वयल्गळ
एण्णरुम पेरुम नाडु
कनियुम किपंगुम धान्यंगळुम
कणक्किन्ड्रि तरुम नाडु—इतु
कणक्किन्ड्रि तरुम नाडु—नित्त नित्त
कणक्किन्ड्रि तरुम नाडु—वाप्प (भारत)

२ इनि योरु विदि सेय्वोम—अद
एंद नाळुम काप्पोम
तनि ओरुवनुक्कुणा विल एनिल
जगत्तिनै अपिृत्तिडुवोम—वाप्र्प (भारत)

भारतीय समुदाय

भारतीकी यह रचना उनके पाण्डिचेरीसे वापस आ जानेके बादकी है। आज हम अपना स्वाधीन लोकराज्य मानते हैं। आजसे चालीस वर्ष पूर्व कविने स्वतन्त्र भारतकी कैसी कल्पना की थी—इसकी झलक हम यहाँ पाते हैं।

भारत समुदाय जिए। भारत समुदाय जिए।
जय! जय!! जय!!! (भारत)

तीस करोड़ लोगोंके इस सबपर सबका समान स्वत्व रहेगा। यह अनुपम जन समुदाय है—सारे संसारके लिए एक नवीनता है।

१ मनुष्यका आहार मनुष्य छीन ले—यह क्रम क्या आगे चल सकेगा? मनुष्यको तड़पते देखकर मनुष्य (चुपचाप) देखा करे ऐसी जिन्दगी क्या आगे चल सकेगी? इस देशमें ऐसी जिन्दगी चल सकेगी? हममें ऐसी जिन्दगी चल सकेगी?

अनन्त उपजाऊ जमीन और सुविस्तृत खेतोंसे परिपूर्ण हमारा देश है। अपरिमित फल, मूल कंद आदि देनेवाला यह देश है—यह अपरिमित देनेवाला देश है। नित प्रतिदिन अपरिमित देनेवाला देश है।

२ अब एक नियम बनाएँगे और सदा उसकी रक्षा करेंगे। यदि कभी किसी एक व्यक्तिके लिए भी आहार न रहे तो हम संसारको मिटा देंगे।

३ " एल्ला उयिर्गळिलुम नाने इरुक्किरेन
  एन्रुरैत्तान कण्णन पेरुमान
एल्लोरु ममर निलयैयुदुम नम्मुरय
  इन्दिया उलगिर्कळिक्कुम–आम
इन्दिया उलगिर्कळिक्कुम–आम–आम
  इन्दिया उलगिर्कळिक्कुम–आम् म (भारत)

४ एल्लोरुम ओर कुलम एल्लोरुम ओरिनम
  एल्लोरुम इन्दिया मक्कळ
एल्लोरुम ओर निरै एल्लोरुम ओर विलै
  एल्लोरुम इन्नाट्टु मन्नर–आम
एल्लोरुम इन्नाट्टु मन्नर–आम आम
  एल्लोरुम इन्नाट्टु मन्नर–आम् म (भारत)

——

३ श्रीकृष्ण भगवानने कहा था, सभी जीवोंमें मैं ही रहता हूँ। सब लोग अमरत्व प्राप्त कर सकें ऐसा उत्तम मार्ग भारत दुनियाको प्रदर्शित करेगा। हाँ भारत दुनियाको प्रदर्शित करेगा, हाँ, हाँ, भारत दुनियाको प्रदर्शित करेगा।

४ सब एक कुलके हैं, सब एक किसमके हैं, सब भारतकी सताने हैं, सबकी एक सोच, सबका एक मोल–सब इस देशके राजा हैं, हम सब इस देशके राजा हैं, हाँ, हम सब इस देशके राजा हैं।

८ सुन्निर वाहम

एन्नु तप्पियुम इन्न पुतभिर वाहम ?
एन्नु मडियुम एंगळ अभिमेयिल मोहम ?
एन्नेमक्कन्ने के पिसंगुगळ पोगुम ?
एन्नम भिन्नतगळ तीर्न्नु पोय्यागुम ?
अयोव भारतमात्त कण्णोने !
आरियर वाप्‌पिने मातरिप्पोने !
वेभि तपमतुम भिन्नख्ळमो
मेय्यडियोम इनुम वाडुवन्नमो !
पंजमुम मोयुम निम मेय्यडियार्को !
पारिनिल मेन्मीगळ वेरिनिमार्को ?
तवमडैन्दपिन के पिरत्तामो ?
तायुम तन कुप गर्वैपे तळ्ळिडमोमो ?
मनलेमक्ळ वेयुम कनमे पिसायो
आरिय नीयुम निन अरम मरन्नायो ?
वैंनमकरक्करे पीड्डिवोने
वीर शिवामणि आरियर कोने ।

स्वतंत्रताकी प्यास

भारतीके इस गीत पर तत्कालीन अंग्रेज सरकार बहुत रुष्ट हुई। पर इस पर कोई कानूनी कारवाई नहीं चला सकी क्योंकि इसमें राजद्रोहकी कोई बात नहीं है।

हमारी स्वतंत्रताकी प्यास कब बुझगी? हमारा दासताके प्रति मोह कब नष्ट हो? हमारी माँके हाथकी हथकड़ियाँ कब गिरेंगी? हमारे कष्ट कब मिटकर झूठे (निरे स्वप्नवत्) बनेंगे?

उस दिन महाभारत मचानेके लिये जो आए—हे आर्योंके जीवन रक्षक! विजयकी प्राप्ति क्या तुम्हारी ही कृपासे नहीं होती? (तुम्हारे) सच्चे भक्त (हम) झुलसे जाएँ—यह क्या ठीक है? अकाल और बीमारी क्या तेरे सच्चे भक्तोंके लिए हैं? तो फिर संसारके सुख-वैभव किसके लिए हैं? कोई शरणमें आवे तो क्या उसे ठुकराया जाता है? माँ भी भला क्या अपने शिशुको दुतकार दे? हे आर्य, क्या तुम भी अपना कर्तव्य भूल गए? कठोर कर्मवाले राक्षसोंके हे घातक! हे वीर शिखामणि, हे आर्योंके राजा! क्या अभय प्रदान करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है?

———

१० बापुग नी एम्मान

महात्मा गांधी पञ्चकम

१ बाप् प नी एम्मान, इन्दर्वंयतु नाट्टिसेस्साम
तापुबुड् वबमे मिचि विडुवलत्तवरिकेट्टु
बापु यद्दु निब्बाम ओर भारत देशानतम्म
बापुविषकवम गांधि महात्मा नी बाय म । बाय म ।

२ अजिमै बाप् बगपि माहार विडुवलै यार्गु शेल्याम
कुडिमयिल उमर्डु, कलिम लानमुम कूडि मॉपि
पडिमिश तसैमे मेमुकुम्बाडिस्कोप शुपस्वि सेपुबाम
मुडिविला कीर्ति पेड्राम भुविपकुक्क मुयम्मै युड्राम ।

३ कोडि मैशाण पाशारी माट्
मूलिग कोणम्बन एनको ?
इडिमिलल तांगुम कुडे सोपुबाम एनको ?
एम मोलिप्पुगय बांवगुमे ये ?
पिडिविला तुम्बम सेय्युम पराधीन
पेम्बिणि यगड्रिडुम बण्णम
पडिमिध पुविशा व्यासवम एळिवाम

१७ हमारे महात्माकी जय

महात्मा गांधी पञ्चक

गांधीजीने जब असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया तब कविने उनकी स्तुतिमें ये पाँच गीत रचे।

१ जीयो हे हमारे महात्मा ! इस संसारके देशोंमें निम्न स्थान पाकर दरिद्र होकर स्वतन्त्रता खोकर, भ्रष्ट होकर जो भारत दुरवस्थामें था, उसको जिलानेके लिए आए हुए हे गांधी महात्मा, तुम जियो ! जियो !!

२ तुमने ऐसा क्रम रचा कि देशवासी दासत्वसे निवृत्त होकर स्वतन्त्र होवें, धन और भाग्यसे सम्पन्न हों शिक्षा और ज्ञानमें उन्नत हों और संसार भरके नेता बनें। तुमने अनंत कीर्ति पाई, संसार भरमें प्रथम स्थान पाया।

३ क्या तुम वह हो जो भयंकर नागपाशको काट डालनेके लिए मूलिका (जड़ी बूटी) लाया ? वज्र और विद्युतको सहनेकी शक्ति रखनेवाला (गोवर्धन गिरिरूपी) छाता बनानेवाले हो क्या ? क्या कहकर मैं तुम्हारी कीर्ति गाऊँ ? अनंत संकटोंको पैदा करनेवाली पराधीनताको दूर करनेके लिए तुमने संसारके लिए नया और अति सरल उपाय निकाला।

११ कली मगळिन पुगष्

१ वेळ्ळ तामरै पूविल इरुप्पाळ
वीणै तोय्युम ओलियिल इरुप्पाळ
कोळ्ळै इन्बम कुमगु कविदै
कूव पावलर उळ्ळत्तिरुप्पाळ
उळ्ळ्ळाम पोरुळ तेडि युणर्न्दे
ओदुम वेदत्तिनुळ्निन्रोळिर्वाळ ।
कळ्ळ मद्द मुनिवर्गळ कूरुम
करुणै वाचकत्तुट् पोरुळावाळ् । (वेळ्ळ)

२ मादर तीगुर पाट्टिल इरुप्पाळ
मक्कळ पेसुम मळलैयिल उळ्ळाळ
गीतम्पाडुम कुयिलिन कुरलै
किळियिन नावै इरुप्पिडम कोण्डाळ ।
कोदगम तोय्वसुडैत्तापि
कुलवु चित्तिरम गोपुरम कोयिल
ईदनैत्तिन एयिलिनै पुगुन्दाळ
इन्बमे वडि वागिड पेट्राळ । (वेळ्ळ)

२२ कला देवीकी स्तुति

वाग्देवी सरस्वती विद्याकी अधिष्ठात्री देवी है। इसको तमिलमें "कलै मगळ" कहते हैं। दशहरेमें नवमीके दिन तमिल प्रदेशमें "सरस्वती पूजा" बड़ी धूमधामके साथ मनाई जाती है। इस त्योहारको लोग "आयुध पूजा" भी कहते हैं। इस दिन सब औजारोंकी पूजा होती है। यंत्रोंपर काम करनेवाले अपने-अपने यंत्रोंकी पूजा करते हैं। सभी घरोंमें पुस्तकोंकी पूजा होती है।

१ कलादेवी श्वेत पद्ममें निवास करती है, वीणाकी ध्वनिमें रहती है, अपार आनंद प्रदान करनेवाली कविता रचनेवाले कवियोंके हृदयमें रहती है, एक मात्र 'सत्य' को खोजकर उसको पहचाननेके बाद प्रकट करनेवाले वेदोंके अंदर स्थित होकर चमकती है। वह देवी निष्कपट मुनि-वरोंके करुणा पूर्ण वचनोंका सार-रूप है।

२ माताओंके मधुर ध्वनि-युक्त गीतोंमें रहती है, बच्चोंकी तुतली बातोंमें रहती है, उस देवीने गीत गानेवाली कोयलकी आवाज और तोतेकी जीभको अपना वासस्थान बना लिया है। निर्दोष कारीगरीसे पूर्ण चित्र, गोपुर, मंदिर आदिकोंके सौन्दर्यमें रहती है। वह मूर्तिमंत आनंद है।

३ कल्का मडु तोयिल पुरिन्दुण्डु
बायुम मान्दर कुल देवमायाळ्
येल्लामकुँयिरागिय कोल्सर
विड्योम्बिडु शिवियर तव्वर
मिल्कुन मर्पोत्तळ बाधिगम शेयुबोर
बीर मयर सिम वेविपर पारुम
तंबमेप्पु वर्णोगिडुम देवम
बरुषि मीवरिवागिय देवम । (वेळ्ळै)

४ देयवम यावुम वर्णोगिडुम देयूवम
तीमे काट्टि विलक्किडुम देयूवम
उयवमेय करुणुडै योर्गळ
उयिरिनुण्डु पिरागिय देयवम
शेयवमेमोर शेयर्गै एडुप्पोर
शेम्मै मार्तिपानिडुम देयवम
कैवरवि उवैप्पवर देयवम
कविसर देयूवम, कम्पुळर देयूवम। (वेळ्ळै)

५ शोमवामिय मधि माट्टिडै मुळ्ळीर
शोम्बिलदै बणक्कुवम शरीर
बमनम इवटके शेयुम देयाल
नावि यविलडु ळिरपु कण्टीर ।
मन्विरते मुगु मुगुतेडुं
बरितो याग अहुक्कि मवन मेल
ज्ञानमर्त मत्तरै पिडुबोर
ज्ञासिरम मबळ पूजनपन्नाम । (वेळ्ळै

३ निर्दोष काम करके जीवन-यापन करनेवाले मनुष्योंकी यह कुटुम्ब-देवी है । लुहार, शिल्प शास्त्री बढ़ई अच्छी वस्तुओंका व्यापार करनेवाले वैश्य, वीर राजा ब्राह्मण —सभी इस देवीके चरणोंपर झुकते हैं । यह इससंसारमें ज्ञानमय दव ह ।

४ सभी देवता इस देवीको पहचानते हैं । यह देवी संकट पैदा करके उसको फिर हटा देती है । सबकी भलाई चाहने-वालोंको यह देवी जानकी जान है, जो कार्य आरम्भ करके उसमें तल्लीन हो जाते हैं, उनकी भलाई करनेवाली देवी है तन तोड़कर परिश्रम करनेवालोंकी देवी ह कवि वरोंकी देवी है आस्तिकोंकी देवी ह ।

५ उत्तम तमिल प्रदेशके रहनेवालो ! आओ हम सब मिलकर इस देवीकी वन्दना करें । यह अच्छी तरह जान लो कि इस देवीकी वन्दना करना कोई आसान काम नहीं है । बिना अर्थ समझे मन्त्रका उच्चारण करो और पुस्तकें एक पर एक सजाकर रखो और उनपर फूल और चदन चढ़ाओ—यह अंधी रीति उस देवीकी (सच्ची) पूजा नहीं है ।

६ मीडुदोल्म कलैयिन विळमकम
बीदितोल्म हुरव्होव पळिळ
मादु मुद्रिसुम उळूळम कर्णळ
मगणाळेंगुम पल पस पळिळ।
तेदु कत्नि हस्लाव बोकरे
तीयिनुविकरीयाग मडुतल
केदु तोर्डुममुवमेन मम
केम्मे मीळळ वयि हुव कम्बीर। (वेळ्ळे)

७ कमर वेशाम यवनर तम वैसम
तवय कायिद्रोळि वेव मादु
होम्पमबोर गिदृळि सीमम
मोस्म पारसिक पयन्वेसम
तोमलत तुपनकम मिसिरम
मूय कदर्कम्पुरतितिनस मुन
कामुन पर्वस माहुरे एस्लाम
कत्नि वेबियिन ओळि मिगुन्वोंग। (वेळ्ळे)

८ माल मेम्मबोर सोल्सिम पोम्कम
नहल मारल माहुरे वम्बीर
कनमिमु पेरिविर्यकिबोर
मोंगि कसिव युपंव्वे मरन्बीर
मामम्द्र विर्कगुपळोप्प
मण्यिस बाय वर्वे बाय् वेमसामो
योमर्कुं वयम्बुवस वेण्डाम
पुम्म तीप्प मुयसुमम बारीर। (वळ्ळे)

६ घर-घर कलाका ज्ञान कराया जाए गली-गलीमें एक-दो पाठशालाएँ खुलें, देश भरके सभी गाँवों (और शहरों) में कई पाठशालाएँ खुलें, जिस गाँव (या शहर) में विद्या (का प्रचार) नहीं है उसे ढूँढ-ढूँढकर अच्छा किया जाए, माताका प्रसाद पानेके ये ही मार्ग हैं।

७ हूणोंका देश यवनोंका देश, उदय-सूर्यका प्रकाश पानेवाला (जापान) देश, चीन, घनी पुराना पारसीक देश, तुर्की मिस्र, और समुद्र पारके सभी देशोंमें विद्यादेवीका प्रकाश फैल जाए।

८ ज्ञान केवल शब्दका भाव है। हे भारतवासियो! तुम लोग एक बहुत बड़ी भूल कर रहे हो। उन्नत विद्याके लिए (आवश्यक) परिश्रमको तुम लोग भूल ही गए हो। मान-मर्यादा खोकर मृततुल्य जीना भी कोई जीना है? जो बीत गया, उस पर अब दुखी मत होओ। संकट दूर करनेका प्रयत्न किए।

९ इमवेगनि पोर्लेगळ पोमृदम
इजिय मीर तण शुनेम्ळ इमट्टल
अम सतिरम आमिरम वेतल
मासमम पविमायिरम माट्टल
पिसण्ळ्ळ वम्मगळ यावुम
पेयर विळंपि योळिरा मिवत्तल
अम्न याविनुम पुण्यियम कोटि
ओणोर एप्पणेपुत्तरिविततस । (वेळ्ळे)

१० निरि मिगुन्ववर पोर्कुंबे तारीर
निवि कुरेन्ववर कामुगळ तारीर
मतुत्तु मट्टवर वामयोस मच्ळीर
माप्पमैयाळर उर्यैप्पिनै नल्पीर
मतुर ते मोचि मावरगळेल्लाम
वाणि पूर्वकुरियम पेशीर
एतुम् मल्लि इगैवयै यामुम
इम्पेवम तोयिल माट्टुवम वारीर । (वेळ्ळे)

———

९ अति स्वादिष्ट कंद, मूल, फल आदिका बाग-बगीचा लगाना, मीठे जलका आशय स्थापित करना, हजारों अन्न सत्र (जहाँ बिनापैसेके भोजन मिल जाता है।) स्थापित करना और दस हजार देवालय बनवाना, ये सभी धर्म ऐसे हैं कि इनके द्वारा बनानेवालेका नाम प्रसिद्ध होकर तेजयुक्त हो जाता है। उन सबसे करोड़ गुना उत्तम है— एक गरीबको अक्षर सिखाना।

१० धनिको! स्वमका कर दे दो, धनहीनो! पैसे-पैसे दे दो। दीनो, केवल मुँहसे आशीर्वाद दे दो। पौरुष-वालो! श्रम-दान दे दो। मधुर वचनवाली माताओ! वाणी पूजाके योग्य वचन बोलो। कुछ भी देकर किसी तरह, आओ हम यह महान काम कर डालें।

३४ पाप्पा पाट्टु

१ मोटि बिळयाडु पाप्पा—मी
मोयुम्बिलक मागाडु पाप्पा ।
कूटि बिळेयाडु पाप्पा-ओरु
कुपम्बैये वयारे पाप्पा ।

२ चिमचिर कुरुवि पोले-नी
तिरिन्दु परन्दु वा पाप्पा
वण्ण परवै गळै कण्डु-नी
मनविस मगिन्दिव कोळ्ळुपाप्पा ।

३ कोत्ति तिरियुमन्द कोषि-अदै
कूट्टि बिळैयाडु पाप्पा
एत्ति तिरुडु मन्द काक्काय-अदर्कु
इरक्कप्पडा वेण्डुम पाप्पा ।

४ पालै पोषिन्दु तरुम पाप्पा-अन्द
पशु मिग नल्लदडि पाप्पा
वाल कुष तुषरुम नायुदान-अदु
मनिदर्कु तोषु मडि पाप्पा ।

५ वण्डि इष_क्कुम नल्ल कुदिरै-नेल
वयालिल उपुडु नल्ल माडु
अण्डि पिय नक्कुम नम्मै आडु-इव
आदरिक्क वेण्डु मडि पाप्पा ।

६ काले एय_न्द उडन पडिप्पु पिन्बु
कनिड कोडुक्कुम नल्ल पाट्टु
माले मुष_ुम बिळयाट्टु-एमु
वयूरकम पडुत्तिकबोळ्ळुपाप्पा ।

१२ बच्चोंका गीत ।

पाप्पा शब्दका अर्थ है नन्हा बच्चा । कविके दो पुत्रियाँ हैं जिनमें छोटी "पाप्पा" नामसे पुकारी जाती है । उसको शिक्षा देते हुए कविने यह गीत रचा ।

१ बच्चे ! हमेशा खेलता-कूदता रह कभी सुस्त होकर मत बैठ । अन्य बच्चोंके साथ मिलकर खेल । किसी बच्चेको गाली न दे ।

२ नन्हे-नन्हे गोरैयेकी तरह तू भी इधर-उधर खेलता-कूदता रह । रंग बिरंगे पक्षियोंको देखकर तू आँखें ठंडी कर ।

३ यह मुर्गी देख, जमीनको चोंचसे कुरेद-कुरेदकर अपना भोजन खोज रहा है । उसको साथ लेकर तू खेल । कौआ झपटकर दूसरोंका माल चुरा लेता है उसपर दया कर ।

४ गाय दूध देती है । वह बहुत अच्छी है । यह कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ आ रहा है—वह मनुष्यका साथी है ।

५ घोड़ा, गाड़ी खींचता है । बैल किसानोंके काम आता है । वह हलमें जोता जाता है । बकरी हमारा आश्रय पाकर जीती है । इन सबका पालन करना चाहिए ।

६ सवेरे जागकर पढ़ना फिर उत्साहवर्धक गीत (का अभ्यास करना) शाम भर खेलना—इस क्रमकी आदत कर ले ।

७ पोय कोस्क कूडाकु पाप्पा–एधुम
पुर्र कोस्क कायाकु पाप्पा
वेपुवम नमवकु तुणे पाप्पा–ओर
तींगु वर माट्टाकु पाप्पा

८ पातर्क सेपुवरे कण्डाल–नाम
वर्यकोळ्ळ कागाकु पाप्पा
मोदि मिविस्तु विडु पाप्पा–अवर
मुर्पातिक वमिय नु विडु पाप्पा।

९ सुन्वम मेवंसि वम्ब पोकुम–माम
कोर्न्दु विड कागाकु पाप्पा
अम्नु मिगुम्व वेपुवम वण्डु-सुन्वम
मत्तर्मपुम पोसिक विकुम पाप्पा।

१० कोम्वास मिम केडुदि पाप्पा–ताम
गोस कोस्से तट्टरे पाप्पा
तेम्बि मव कुयगे मोम्बि–वी
तिव कोम्बु पोराकु पाप्पा।

११ तमिय तिव नाडु वम्मे पेट्ट-एंमळ
वायेकु कुम्विकडि पाप्पा
ममिय् विस इमियवदि पाप्पा-मम
मामोर्गळ वैदा मदि पाप्पा।

१२ दोस्किस उमर्यु तमिय कोस्से–अव
तोपकु पडितिकडि पाप्पा
कोस्वम मिरम्व हिन्दुस्तानम–अवे
विनमुम पुगयु मिवडि पाप्पा।

१३ पडसिकस इमय मर्से पाप्पा–तेर्मिकस
वापुम कुमरि मुर्भे पाप्पा
किडमकुम पेरिय कडल वण्डाय-इवन
किपुस्किलुम मेर्किसुम पाप्पा।

७ झूठ नहीं बोलना चाहिए। कभी पीठ पीछे निंदा नहीं करनी चाहिए। ईश्वर हमारा सहायक है हमपर कभी कोई संकट नहीं पड़ेगा।

८ अत्याचार करनेवालेको देखे तो कभी उससे डरना नहीं चाहिए। उसको गिराकर पैरोंसे कुचल डाल, उसके मुंहपर थूक दे।

९ जब हमपर विपदा आए, तब हमें भयभीत नहीं होना चाहिए। परमात्मा प्रेममय है, वह उन विपदाओंको दूर कर डालेगा।

१० सुस्त रहना बड़ा बुरा है। माताकी बातोंकी अवहेलना न कर। बात-बातपर रोनेवाला बच्चा पगु है। तू डट-कर लड़।

११ "हमारी माँ पवित्र तमिल भूमि है"—कहकर उसकी वंदना कर। यह अमृतसे भी उत्तम है। हमारे पवित्र पूर्वजोंका देश है।

१२ भाषाओंमें श्रेष्ठ तमिल है। उसका श्रद्धापूर्वक अभ्यास कर। हमारा हिन्दुस्थान समृद्ध है। उसकी प्रति-दिन स्तुति कर।

१३ इस देशके उत्तरमें हिमालय है और दक्षिणमें कुमारी अन्तरीप। पूर्व और पश्चिममें बड़े समुद्र हैं।

१४ बेव मुडेयविग्व नाडु–नस्स
      बीरर पिरन्ब बिम्ब नाडु
बोव मिस्ताव हिन्दुस्तानम्–इदे
      बेपुवमेसु कुम्बिडवि पाप्पा ।

१५ चातिगळ इस्वे यवि पाप्पा–कुस
      ताप् च्चि उर्यच्चि चोल्लल पावम
नीति उयर्न्द मति कल्वि–अम्बु
      निरैय उडैयवर्गळ मेलोर ।

१६ उमिर्गळिडत्तिल अम्बु वेण्डुम–देयूवम
      उम्मै एम् तात्मरिवल वेण्डुम
ववरा मुडेय नेम्बाम वेण्डुम–इडु
      वाप्_म मुरैमे मडि पाप्पा ।

———

१४ इस देशमें वेदोंकी उत्पत्ति हुई। अनेक वीर हुए। यह हिन्दुस्तान हर तरह से सम्पन्न है—इसे देव मानकर इसकी वन्दना कर।

१५ जाति नामकी कोई वस्तु नहीं है। कुलकी उच्चता या नीचता मानना पाप है। नीति, उत्तम बुद्धि विद्या प्रेम—इनसे युक्त लोग बड़े हैं।

१६ जीवोंसे प्रेम करना चाहिए। यह जानना चाहिए कि ईश्वर सत्य है। निश्चल मन चाहिए। यही जीनेका उपाय है।

———

१३ मुरशु

पेद्दि एरुदु विनकुम एट्ट कोटदु मुरसे
पेवम एमुम वापूग एमु कोट्दु मुरसे
मद्दि योट्टे कम्पनोडे मिर्तनम सेमूवाळ
मिग शक्ति वापूग वेग्गु कोट्दु मुरसे

१ कम्बडु मल्लडु सोल्येन-एमा
कुर्मे तेरिम्बडु सोल्येम
सीसक्तेस्का मुवसागुम-ओव
वेयवम तुर्मे सोम्मवेम्मुम।

२ वेव मरिम्बवन पार्पीन-पक
बिड् तेरिम्बवन पार्पीन
मीवि निर्से तवरामक-वग्ग
सेर्मगळ सोमूववर मामूतन।

३ पम्बगळ विर्पवन सोड्डि-पिरर
पट्टुमि तीर्पवन सोड्डि
तोण्डरेमोर वगुम्पिस्से-तोपिस
सोम्मसे पोल इपिमियिस्स

४ नानुम मपुप्पुम इंगोते-इम्म
नामूगिनिल ओपु कुर्रम्बास
वेसे तवरि शिवम्मे-दोतु
वीपु् म्विहुम मानिड वाति।

५ मोट्टे कुकुम्बागवनिले-पोरुळ
ओंग पळपवन तम्बी
मट्टे करमंगळ दोपूवे-ममी
वाय म्विड दोपूवळ मसे।

१३ डंका

हे डंके तुम इस तरहकी ध्वनि पैदा करो कि विजयकी घोषणा आठों दिशाओंमें हो जाए। तुम्हारी चोटमें वर्दोंकी सदा जय गुंजरित हो उठे। तुम्हारे चोटको प्रकारमें "त्रिनेत्रके साथ नर्तन करनेवाली माता शक्तिकी सदा जय हो!" यह ध्वनि गुंजरित हो उठे।

१ मैं देशके हितकी बात कहता हूँ मुझे जो सत्य प्रतीत होता है वह कहता हूँ जितनी भी भलाइयाँ हैं, उन सबका आदि पुरुष हमारी सहायता करे।

२ वेद जाननेवाला ब्राह्मण है कई विद्याएँ जाननेवाला ब्राह्मण है। नीति और नियमका पालन करते हुए दण्ड और पालनका प्रबंध करनेवाला नायक (क्षत्रिय) है।

३ वस्तुएँ बेचनेवाला श्रेष्ठि (वैश्य) है। औरोंकी भूख मिटानेवाला श्रेष्ठि है। 'दास' नामकी कोई जाति नहीं है। सुस्तीसे बढ़कर अन्य कोई नीचता नहीं है।

४ यहाँ चारों वर्ण एक समान हैं। इन चारमेंसे यदि एक भी कम हो जाए तो काम बिगड़ जाएगा। मनुष्य वर्ग ही नष्ट हो जाएगा (भग्न होकर गिर जाएगा)।

५ कुटुम्बमें वस्तुओंका संग्रह पिता करता है। अन्य काम संभालती हुई माँ कुटुम्ब चलाती है।

६ एवसमळ शोपृववार मवरळ-इवर
यावसम मोर कुसमवो
मेवि ममैवसम मोभाय-नसस
वोडु मळतुवस कण्डोम

७ सावीपिरिवुगळ सोलिस-मविस
ताय वेपुम मेलेपुम कोळवार
मोविपिरिवुगळ शोयवार-मंगु
निसमुम सण्डेगळ शोपृवार।

८ सावि कोडु मैगळ वेण्डाम-मन्नु
वमिस सोपिसिडुम वैयम
मावरपुव्रिगु वाप्‌वोम-सोपिस
मामिरम माण्पुरा सेपृवोम।

९ पेण्पुक्कु नामसै वैसान-भुवि
पेणि वळतिडुम ईसम
मण्णुक्कुळ्ळे शिस मूडर-मस्स
मावररिवै वेडुतार।

१० कण्णाळ ररण्डिमिस मोमै-कुसि
कात्रिव केडुसिव कामो
पेण्णाळ मरिवै वळर्तास-वैयम
पेवैमै मडिडुम काणीर।

११ वेपृवम पसप्पस सोलिस-पमे
तीमै वळपवर मूडर
उपृववमैसिसुम मोपाय-एंगुम
मोर पोष्ळामनु वेपृवम।

१२ तोमिर्म कुम्बिडुम पार्पार-मिसम
विपर्क पणडपुम तुप्पकर
कोडस निसुवियिम मुम्ने मिपु
कुम्बिडुम येगु मरसार।

६ पुत्र सेवाके काम करते हैं। क्या ये सभी एक ही कुटुम्बके नहीं हैं? हम देखते हैं कि सब एक होकर अच्छा कुटुम्ब चलाते हैं।

७ जो जातिका भेद बताकर उसमें ऊँच और नीचका अंतर मानते हैं वे नीतिमें अंतर लाते हैं और प्रतिदिन झगड़ा पैदा करते हैं।

८ जातिका कटु वर्गीकरण हमें नहीं चाहिए। यह संसार प्रेमसे पलता है। हम यहाँ आदरके साथ रहेंगे और अनेकों कार्य करेंगे।

९ संसारका भार सम्हालनेवाले ईश्वरने स्त्रियोंको (भी) ज्ञान प्रदान किया है। परन्तु इस मिट्टीके मोहमें कुछ लोगोंने स्त्रियोंकी बुद्धिको भ्रष्ट कर दिया है।

१० दो आँखोंमें एकको नष्ट करके क्या दृश्यका आनंद उठाया जा सकता है? यदि स्त्रियोंकी बुद्धिको बढ़ाया जाए तो निश्चय है कि संसारकी कमियाँ दूर हो जाएँगी।

११ जो लोग दैवकी अनेकता मानते हैं वे दिव्यभावकी आग प्रज्वलित करते हैं। ईश्वर एक है और सबमें समाया हुआ है।

१२ अग्निकी पूजा करनेवाले ब्राह्मण प्रतिदिन दिशाकी वन्दना करनेवाले मुसलिम मंदिरमें सूलीके सामने खड़े होकर प्रार्थना करनेवाले ईसाई,

१३ पारुम पणिन्दिडुम वेयूयम-पोरुळ
मादिमुम लिभिमुम वेयूयम
पारुमुळ्ळे वेयूवम ओधु-इविस
पर्पस सम्वैगळ वेम्बाम।

१४ वेळ्ळ निरत्तोव पूर्व-एंगळ
वीट्टिल वळसु कम्मीर
पिळ्ळपळ पेवुडु पूर्व-अवै
पेवस्तोव निरम मापुम।

१५ पाम्बल निरम ओर कुट्टि-कव्वम्
पाम्बु निरम ओर कुट्टि
पाम्बु निरम ओर कुट्टि-वेळ्ळै
पाविल निरम ओर कुट्टि।

१६ एन्न निरमिरुन्दालुम-अव
मावुम ओरे तर मक्को
इन्न निरम शिरियेमुम-इन्दु
एट्टुमेमुम तोस्सामो।

१७ वण्णंगळ वेड्रुमै पट्टाल-अविल
मानुवर वेड्रुम इल्लै
एण्णपळ शेय्गैपळ एल्लाम-इंगु
यावर्कुम ओन्रेनल कामीर।

१८ निगरेमु कोट्ट मुरसे-इन्द
नीनिलम याव मवरेल्लाम
ममरेमु कोट्टु मुरसे-पोयूर्व
वावि वगुप्पिनै एल्लाम

१९ मम्बेप्पु कोट्टु मुरसे-अविल
मानमुण्डा मेमु कोट्टु
मुन्दंपळ यावुमे भोगुम-नैवम्
दातु पिरिवुपळ पोनाल।

१३ ये सब जिस देवकी पूजा करते हैं वह सर्वसन्निहित है, सर्वव्यापी है। सबका एक ही देव है—इसमें झगड़ेकी आवश्यकता नहीं है।

१४ और १५ सुनिए, हमारे घरपर एक सफेद रंगकी बिल्ली पलती है। उसके कई बच्चे एक ही माँसे उत्पन्न होनेपर भी हर एकका अलग अलग रंग है।

उनमेंसे एक मटमैला है, एक काजल-सा काला। एक बच्चा साँपके रंगका है और एक दूध-सा सफेद।

१६ रंग चाहे जो हो क्या वे सभी बच्चे एक समान नहीं हैं? क्या यह कहा जा सकता है कि अमुक रंग अच्छा है और अमुक बुरा?

१७ रंग बदलता है, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि मनुष्य भी बदले। विचार और कार्य सबके एक हैं—यह जानो।

१८ हे शंख! तुम्हारी ध्वनिमें यह उद्घोषित हो कि इस संसारके सभी निवासी समान हैं। अपनी ध्वनिसे यह घोषित करो कि झूठा जातिभेद तोड़ा जाए।

१९ (सभी यह समझें) कि प्रेम आवश्यक है और उसीमें भलाई है। यदि छल-कपटका भेदभाव मिट जाए तो बुराइयाँ दूर हो जाएँगी।

२० मम्बोमु कोरट्टु मुरस–मवकळ
मतमै पेरम मिगाराम
इ बंगळ यागुम पेरगुम–इंगु
यापरम मोमेमु कोम्बाम।

२१ उरन पिरम्बार्गळै पोला–इग्
उरूगिल मनिद रेल्कारम
इरम पेरिदुण्डु वैयत्तिल–इविल
एदुक्कु वार्थंगळ शोपुवीर।

२२ मरत्तिनै नट्टवन तण्णीर–ममु
वार्त्ते वोयिड शेपुवान
शिरदै पुर्देयदु वेपुवम–इगु
शोर्न्दे उणा वेल्लै इल्लै।

२३ वयिट्ट वृत्त शोरमु कण्णीर–इंगु
वाय_म] मनिद रेत्सोर्दुम
पयिद्र शाप_डुग्डु वायवीर–पिरर
पंगै तिरडुवल वेम्बाम।

२४ उरन] पिरम्बमर्गळै पोला–इग्
उरुणिमिल मनिदरैस्कोरम्
तिरम कोम्बवर मेशिम्बोरै–इंमु
तिमु पियैतिड सामो।

२५। वसिमें मुत्तॅपडु वेपुवम–मम्मे
पाप सिड शोपुवडु वेयपम
मेसिमु कप्पासुम कुपम्ब–वस
वोपु_सि मिर्दितिड सामो।

२६. तम्पि इकुं मेसिवानाल–अण्णन
तानडि मे कोळ्ळ सामो ?
शेम्बुक्कुम कोम्बुपडुम भजि मवकळ
निट्टडिम पडा सामो।

२० सभी मनुष्य समान हैं। यदि हम जान जाएँ कि सब समान हैं तो सुखकी खूब वृद्धि होगी।

२१ इस संसारके सब लोग भाई-भाईके समान हैं। यहाँ स्थान बहुत है। इस संसारमें (फिर व्यर्थ ही) क्यों लड़ा जाए।

२२ जिसने पौधा लगाया वह बराबर पानी देकर उसकी बढ़तीका ध्यान रखता है। ईश्वर रक्षक है। यहाँ अन्न अपार है।

२३ इस संसारके सभी मनुष्योंके पेटके लिए यहाँ अन्न है। तुम लोग परिश्रम करके पैदा करो और खाओ, दूसरोंका हिस्सा मत चुराओ।

२४ इस संसारके सभी लोग सहोदर-सम हैं। क्या यह उचित है कि सबल निर्बलको खाएँ?

२५ सब सबल हैं। हमारा पालन देव करता है। बच्चा दुर्बल है इसलिए क्या उसको ठुकराया जाए?

२६ छोटा भाई जरा कमजोर है—इस कारणसे क्या बड़ा भाई उसे अपना दास बना ले? तोपोंके या लाठीके भयसे क्या मनुष्य दास बन जाए।

२७ मन्मेमु कोद्दु मुरसे-अविस
यार्कुम विहुवले पुम्मु ।
पिन्मु मनिवर्ग ळेस्साम-कस्थि
पेट्. पवम पेट्. माप् पार ।

२८ अरिवे पळतिकस वेन्मुम-मवकळ
अतमे पेस्मकुम मोयाय
गिरियारे मेन्मळ मोपूवाल-पिम्मु
वेपूवम एस्सोरयुम वाप सुम ।

२९ पाम्कुळ्ळे समतर्म-तोळर
पद्.म सहोवरर तमे
मास्कुम तोमें मोम्माकु-भुवि
एपुम विहुवसे मोम्मुम ।

३० पमिद्.मकु मोरिव वेम्मुम-इंगु
माप्. मनिवस्केस्साम
पमिद्. पसाकस्ति तम्मु-इम्म
पार नमतिर वेम्मुम ।

३१ मोमेमु कोद्दु मुरसो-अम्मिक
मोंगेमु कोद्दु मुरसो
नमेमु कोद्दु मुरसो-इम्म
मामिता मामस्केस्साम ।

---

२७ (सुखी जीवनके लिए) प्रेम आवश्यक है। उसमें सबका स्वातंत्र्य है। इस (स्वतंत्रता) के साथ सब लोग सुशिक्षित और सभ्य होंगे।

२८ सब लोगोंको अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिए। यदि छोटोंका उद्धार कर दिया जाए तो दैव सबका भला करेगा।

२९ संसारमें समता और भ्रातृत्व आ जाए तो ऐसी परिस्थिति आएगी कि किसीकी बुराई किए बिना सारा संसार स्वतंत्रतापूर्वक जीवन बिताएगा।

३० इस संसारमें सभी लोगोंको पेटभर भोजन अवश्य मिले। अनेक प्रकारकी विद्याओंको सीखकर और दूसरोंको सिखाकर इस संसारको ऊपर उठाना चाहिए।

३१ हे डंके! तुम्हारी ध्वनि द्वारा एकत्वकी घोषणा हो यह घोषित करो कि प्रेममें सब एक हैं। हे डंके! इसीमें सब लोगोंकी भलाई है।

१४ कण्णन एन शेयकन

कूसि मिग केमूपार कोडुस वेस्काम साम मरप्पार
वेळै मिण वतिरन्नाम्र वीट्टिले तंगिडुवार
"एमडा नी नेडु किगु वर विस्मै" एन्वाल
"पानैयिले तेळिरनु पल्काल कडित्त" वेन्बार
वीट्टिले पेण्डाट्टि मेर पूलम वन्दवेन्बार
पाट्टियार वोसु पिट्टु पमिरप्पाम नक्लेन्बार,
ओपामल पोम्मुरैप्पार, ओमुरैक्क वेर सेमूबार
वामाबियोडु तगियिरते पेशिडुवार
उळ वीट्टु पोयुदि एस्काम ऊरम्मलत्तुरैप्पार
एन वीट्टिल इस्लपेभास एंगुम मुरसारैवार
शेवगराल पट्ट शिरममिमपडप्पु, कण्णीर
सेवगरिस्का विडिळो शेमूमै नडक्कमिर्सै
ईंगिवनास पानुम इडर मिपुम्नु वाडुगैयिल
एंगिरुवो वन्दान "इडै वादि नान" एन्नान्
माडु कन्नु मेयुत्तिडुवेन, मक्कळै नान कात्तिडुवेन
वोडु पेरुक्कि विळक्केट्टि वत्तिडुवेन
शोस्र पडि केप्पेन, तुमि मणिगळ कात्तिडुवेन
शिस कुपुन्दैक्कु शिगार पाट्टिसेल्ले
आट्टगळ काट्टि अपाव पडि पार्त्तिडुवेन
काट्टु वपि यानालुम, कळ्ळर भयमानालुम
इरविर पगसिले एन्नेरमानालुम
शिरमत्तै पार्र विस्ले, तेवरीर तम्मुडने
सुट्टुवेन तंगळुक्कोर तुम्ब मुरा काप्पेन
कट्टु विड पधुमिस्सै काट्टु मगिदन ऐप्पु ।

१४ कान्ह मेरा नौकर

ज्यादा मांगते हैं, जो कुछ भी दो भूल जाते हैं, अगर काम ज्यादा हो तो अपने घरपर रह जाते हैं। यदि उनसे पूछा जाए "क्यों भाई कल क्यों नहीं आए" तो जवाब देते हैं कि मटकेमें बिच्छू या उसने दाँतसे काटा। कहते हैं—घरमें गृहिणीको भूत बाधा हो गई। कहते हैं आज नानीको मरे बारहवाँ दिन है। अनवरत झूठ बोलते हैं। तुम कोई काम दो तो कुछ और ही कर बैठते हैं। तुम्हारे सगोत्रियोंसे अलग जा-जाकर बातें करते हैं। तुम्हारे घरकी सारी बातें खुले बाजारके बीचमें घोषित कर देते हैं। तुम्हारे घर यदि किसी वस्तुका अभाव हो तो उसकी अकेली चोट घोषणा कर देते हैं। नौकरोंसे जो कष्ट पाया वह बहुत-बहुत अधिक है। यदि नौकर न रहा तो काम ही नहीं चलता।

इस तरह संकटमें मैं जब व्याकुल हो रहा था तब न जाने कहाँसे कोई आया और बोला—मैं (जातका) ग्वाला हूँ। गाय बछड़े चराता हूँ, बच्चोंका* भी पालन करता हूँ।

घर साफ करके दीपक जलाकर रख सकता हूँ। किसी भी आज्ञाका पालन करूँगा। कपड़े-लत्तेकी रक्षा करूँगा। छोटे बच्चोंको सुंदर गीत रचकर सुनाऊँगा और सुंदर नाच नचाऊँगा—यह ध्यान रखूँगा कि वे रोएँ नहीं। चाहे जंगलका रास्ता हो चाहे चोरोंका भय हो, रात हो, दिन हो—जब भी आवश्यकता हो, अपने तनकी चिन्ता किए बिना आपके साथ रहकर यह ध्यान रखूँगा कि आपपर कोई संकट न पड़े। मैंने कोई विद्या प्राप्त नहीं की—जंगली आदमी हूँ।

---

* तमिलमें यहाँ पर "मक्कळै" शब्द प्रयुक्त है। इसका अर्थ 'बच्चोंका' या "प्रजाका"—दोनों हो सकता है।

आमपोय_ु गोसडि कुत्तुपोर मरप्पोर
नामरियेम, वादू_म मयक्कम् माम्पुरियेम

एघु पस शोल्लि निघाम, "एडु पेयर शोल" एन्मेन
"ओशु मिस्सै,कण्णम एगवार अरित्तुळ्ळोर एर्दै' एघान

कट्_वरि उळ्ळ उडल, कण्णिले मस्स गुणम
ओहू_रवे नथामा उरत्तिडुम ओल—इंगिवट्टाल
तन्नवनेपुळ्ळते मार्दै मम्मिपु थि पुडम
"मिक्कपुरे पल शोल्लि विस्तु पसा शाद्_गिराय
कूत्ति एस केळ किभाय कूप' एघेम। "ऐमने!
तात्तिकट्_म पेण्णाट्टि सन्दविकळेतु मिस्तै
मानोर तमिमाळ मरैविरै तोषा थिवित्तुम
आमा ययविर्कळविस्स, वेयरोर
आवरित्तार पोवुम। अवियेन मेम्मिनमुळ्ळ
कावल पेरिवेनक्कु काशु पेरिविस्सै" एघाम।

पस्ड कालत्तु पयित्तियत्तिल ओभ्रमवे
कण्डु मिमचुम कळिम्पुडमे मामवर्म
माळाग कोण्डु विट्टेन, अमु मुवर्कोम्पु
नाळाय नाळाग नम्मिडत्ते कण्णनुक्कु
पद्_ मिगुम्बु वरक पार्कियेन, कण्णनाल
पेड्_पस्म नन्मै पेसाम पेदिमुडियातु

कण्ण इम इरम्पुम कार्पडु पोल एन कुडुम्बम
वण्णमुरा काक्किण्णाम वामु मुगुसल कण्डरियेन
थोदि पेस्सकुगिरान, वीडु दाडु मावकुगिराम
तारियार दोय कुड् मेस्सम तट्टि यवस्सकुगिरान
मनक्कुक्कु यात्ति वळर्पुत्ताय वत्तियनाय
मोषक मम्म शाट्_गिरान, ओमुगुर विस्सै

फिर भी आवश्यकता पड़नेपर लाठी चला सकता हूं, मुक्का मार सकता हूं, घातक युद्ध कर सकता हूं। मेरी ओरसे कभी भी धोखेबाजी नहीं होगी।

यों बहुत कुछ कहकर वह चुप हो गया तब मैंने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?' उसने उत्तर दिया— कुछ नहीं लोग मुझे 'कान्ह' कहा करते हैं।"

वह हट्टा कट्टा था, उसकी आंखोंमें अच्छे गुण झलकते थे, उसके वचन स्पष्ट और गंभीर थे। इन कारणोंसे मैं मन ही मन प्रसन्न होकर जान गया कि वह एक योग्य व्यक्ति है। मैंने उससे कहा—'तुम बातें तो बहुत करते हो और अपनी बड़ी बड़ाई भी खूब करते हो। बोलो, वेतन क्या लोगे?' उसने कहा 'महाशय! मेरी न तो शादी ही हुई है और न मेरे कोई सन्तति ही है। मैं तो अकेला हूं। यद्यपि कोई पका केश दिखाई नहीं पड़ता तो भी मेरी आयुके कितने वर्ष बीते—इसका कोई हिसाब नहीं। आप मुझे आश्रय भर दें, बस। मैं तो हृदयके प्यारको अधिक महत्त्वपूर्ण मानता हूं, पैसेको नहीं।"

मैंने सोचा कि यह पुराने जमानेके सनकी लोगोंमेंसे कोई है। मैं बड़ा खुश हुआ। मने उसको अपनाया। तबसे मैं देखता हूं कि दिन प्रतिदिन कान्हकी हमारे प्रति लगन बढ़ती ही जाती है। कान्हसे मैं इतनी भलाइयाँ पा रहा हूं, जिनका वर्णन करना संभव नहीं है।

आंखोंकी रक्षा जैसे पलकें करती हैं, ठीक उसी प्रकार वह मेरे कुटुम्बकी रक्षा करता है। कभी बड़बड़ाता नहीं है। घरके बाहरका भाग बुहारता है, घर साफ रखता है। दासियां जो त्रुटियां करती हैं, उन्हें समझाकर उन त्रुटियोंको दूर करता है। बच्चोंका तो वह गुरु धाय-मां और वैद्यके समान है। उत्तम सद्वृत्तिका परिचय देता है। मैं उसमें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं पाता।

पच्चमेलाम शोर्तुवत्तु पास वाँगि मौर वाँगि
पेण्डुपळे ताय पोलापिरियि मुर मारुरितु
मण्नाय मन्विरियाय मस्तापिरियनुमाय
पण्मिसे वेमृवमाय पार्वयिसे शोवकमाय
पंगिरुण्डो वन्मान इड माचि एम्बु णोमाण

इंगिवनै याम पेरवे एसतवम सेमुयिट्टेन
कण्मन एनवगते काल वैस माळ मुवलाय
एण्णम पिचार पत्तुम मवन पोरुप्पाय
सेत्वम इळमाण्बु वीर शिरप्पु मर्कीति
कल्वि मरिवु कवित शिवयोमम
तेळिवे पळिवाय सिवशामम एमुम
मोळि शोर तसमर्नतुम वाँगि वरुणिमन काण्!

कण्णनै नाम आट्कोण्डोम तण्बुकोण्डोम तण्बुकोण्डोन
कण्मनै माठकोळ्ळु कारणमुम उळ्ळवये।

——————

आवश्यक वस्तुओंका संग्रह करता है, दूध लेकर रखता है—दही लेकर रखता है। स्त्रियोंकी माता-सम आदरके साथ रक्षा करता है। वह एक अच्छे मित्र तुल्य है, अच्छे मंत्री और अच्छे गुरुके तुल्य है, संस्कार उसके देव तुल्य हैं पर देखनेमें वह सेवक-सा ही लगता है। न जाने कहाँसे आया और बोला मैं जातिका ग्वाला हूँ।

न मालूम किस तपस्याका फल है कि मैंने उसको इस तरह पाया। जबसे मेरे घरमें कान्हके चरण पड़े, तबसे मुझे किसी बातका सोच-विचार नहीं करना पड़ा। सब उसका काम हो गया। ऐश्वय यौवनका-सा स्वास्थ्य, सम्पन्नता बड़ाई, यश, विद्या ज्ञान कविता शिवयोग (भक्ति) सुस्पष्ट शिवज्ञान ऐसी तेजोमय सारी भलाइयाँ नित्य बढ़ रही हैं।

कान्हको मैंने अपनाया क्या—मैंने उसको पहचान लिया, पहचान लिया। कान्हको अपनाया, इसके कारण भी हैं।

---

१५. कुण्णम्मा एन कावलि

विल्लि पुव्वकर वोपुव कपुवळमवि–पेण्गाळ
तिरैयिवट्टु मुममकर मरैत्तुमैसल
वल्लि इर्वेयिनेयुम ऑंगि पुम न्तिुम–इव
मार्वयुम मूडुवडु ळात्तिरंयम्वाय
वल्लि इडयिमयुम मार्वि रव्वैयुम–सुवि
मरसव नालपगु मरैल्वविल्ल
सोल्लिक तेरिववित्तै मन्मरक्कै–मुव
चोवि मरत्तु मोव कावलिगुण्णे।
भारियर मुमेरिपळ मेम्मै एममिराय–पर्व
आरिय पेण्मळुक्कु सिरंपळ वण्डे
मोरिव पुर कण्डु पपागिय पिन–वेवम
मोप्पुवडु काडवुचविल नाण मेमडि ?
यारिल्लवेमे इमु तवुतिवुयार–वडु
वाण मुणत्तिरैये मणड्डि विहारा ?
कारिय मिल्लै यवि वोप पवाप्पिसै–कवि
कण्वल तोसुरिवक कात्तिरुप्पामो ?

१५—कान्ह मेरी प्रेयसी

स्त्रियाँ परदा करके अपना कमल जैसा मुह छिपाती हैं यह दिल्लीके मुगलोंके कालसे चला आया क्रम है। पतली कमरको और आगे बढ़ आनेवाली छातीको ढकना ही शास्त्र (सम्मत रीति) है। पतली कमरको और आगे बढ़ आनेवाली छातीको कपड़ा छिपा लेता है, इस कारणसे उनका सौन्दर्य छिप नहीं जाता। मन्मथ कला समझाए नहीं समझी जाती। यदि मुखज्योतिको ही छिपा लिया जाए तो फिर भला प्रेम कैसे हो सकता है?

आर्योंकी प्राचीन रीतियाँ तुम्हें अच्छी लगती हैं। प्राचीन कालकी स्त्रियाँ क्या परदे में थीं? एक दो बार मिलकर परिचित हो जानेके बाद नाम मात्रके लिए दिखानेमें लज्जाकी कौनसी बात है? यदि मैं जबरदस्ती परदा हटा दूँ तो कौन मेरा क्या कर लेगा? व्यर्थकी हिचकिचाहटसे कुछ नहीं होनेका। जिसको फल प्राप्त हो गया क्या वह फिर उसका छिलका दूर करनेमें विलम्ब करेगा?

"क्यमन" वण्णिक्करैयाय मिझयगै कण्डुवगि निमे मणकक पेकुनाळ्ळ मिरम्मि अथम पोर्मे मलरे पुडुलेने कोण्डुनक्कु नितम कोटुत्तु निर्मवेस्साम मीयामा चितम यरनुणैयिक तिमोयियै मी यवने मार्लेयिव वाककळिसाय मैयकिमासिस्कै अवन साल वरनुवल सहियामल शोल्लिविट्टुाय। आयिप ये मिथम मयगिम येर्द कीर्ति तैयमेंगुम तान परव तेम मलैयिन स्रार्विनिकोर वेडरकोम शोल्वमुम मस बीरमुमे सम्मुडैयाम माडनैतुम अम्मि नडुगुम क्षेयकुडैयाम मोट्टु पुसिम्पनमृतम मूत्त मणतामा मेट्टु कुरणमुनक्कु नेरान पेम वेम्पि मिसै मणम पुरिय निच्चमित्तु मिझम्पम तम यणुगि "मिझोर तैमकै एन पिळ्ळैक्कु कम्माकम शोम्मुम कवतुवेयेम" एम्मिडमुम एण्मा पेस मपिप्‌वि एम्‌विए मिम तम्बे म्मोगे वडन पट्टाम्।

पिसर शिस विमेगळ शोमवमपिम पेम कुयिलै मिनोत्त तोपियकम मीयुमोय मार्मेयिले मिसर कोडियळ मिळे माड वस पोले काट्टिनिडैये कळिसाडि निर्वियिले पेट्टक्केन यमान वेस वेम्बर क्षेरमाल तमरुर्म मम्मन, तमिये तुण पिरिन्नु मम्मयमृवन् मेंममोय मार्म तोडर्नु वरा

महान मानकर मैं उनके चरणोंमें गिरी। मुनिने प्रेमसे मुझे आशीर्वाद दिया। मैंने उनसे कहा, "हे मुनिवर! इस पृथ्वीपर निम्न पक्षी जातिमें मेरा जन्म हुआ है। परन्तु मेरा स्वभाव अन्य कोयलोंसे भिन्न है। मैं सबकी भाषा समझ पाती हूँ। यही क्यों? मुझमें मनुष्यों जैसे मनोभाव हैं कृपया मुझे समझाइए कि ऐसा क्यों है?

मेरे यों पूछनेपर मुनिने कहा, "हे कोयल, सुन। पूर्व जन्ममें तू वीर मुरुगा नामक कठोर कर्मवाले शिकारी नायककी पुत्री होकर चेर देशके दक्षिणी भागमें एक पहाड़पर रहती थी। तू यौवनमें अत्यन्त रूपवती थी। तीनों तमिल राज्योंमें सौन्दर्यमें तेरी समता करनेवाली और कोई नहीं थी। शिकारियोंमें तेरा ममेरा भाई एक "माडन्" (अथवा राजा) था। वह तेरे रूपपर मुग्ध होकर काम ज्वर-ग्रस्त हुआ। बहुत दिनोंसे उसकी यह इच्छा थी कि तुमसे ही उसका विवाह हो। वह तुझे स्वर्ण पुष्प और ताजा शहद आदि ला-लाकर दिया करता था। वह सदा तेरी ही याद करके व्यग्र रहा करता था। हे मधुर भाषिणी! तूने उसकी पत्नी बननेका वचन दिया—प्रेमसे नहीं परन्तु उसको दुखी न देख सकी, इसलिए तूने वचन दिया। हे सुन्दरी! तेरी सुन्दरताकी कीर्ति तो देशभरमें फैल ही चुकी थी। दक्षिणी पहाड़के पार्श्व प्रदेशमें एक शिकारियोंका राजा था। वह सम्पत्ति और वीरता—दोनोंसे सम्पन्न था। उसके कृत्योंसे सारा देश काँप उठता था। उसका नाम मोट्टै पुलियन था। वह अपने ज्येष्ठ पुत्र मेट्टै कुरंगन (मर्कट राय) के लिए एक सुयोग्य वधूकी खोजमें था। उसने तुझे प्राप्त करनेका निश्चय किया। तेरे पिताके पास आकर उसने कहा—'तेरी लड़कीको अपने पुत्रकी वधू बनानेका मैंने निश्चय किया है।' बहुत प्रसन्न होकर तेरे पिताने स्वीकृति दे दी।

इसके बाद कुछ समय बीत गया, तब एक दिन हे कोयल! तू अपने ही समान रूपवती सखियोंके साथ धामको खेल रही थी। तुम लोगोंका खेलना विद्युल्लताकी क्रीड़ा-सा लगता था।

तोपियरम मोयुम तोगुत्त मिये मास्मा बावियकम कण्डु बिट्टान, मैमस करें मस्मु मिमें तनक्काम निक्कामितान, मायु मी मण्यर्मे कण्ड उडन मा मोहम् कोण्डु बिट्टाम मिमें मवन मोविकनाम मी मवनें मोविक निम्राम मामवोर मोविकमिते मावि मस्मु बिट्टोर तोवियरम वेम्मन गुडर कोलसें तान कम्मे मावि मरतान मस्म गुरुल्मन पोतु मेमे मक्मित मर्मु बिट्टार, मायमतुम मिमिडते "माम्मि तसंवन मपन याम" एन मरंतु "वेडर तम मण्ळे किमें यपगुवेमाय माडममाप तोमियवन पयनें इपु पेट्टेन कण्मुमे मिन मिमी नाम कावत सोम्पेन' एमिवोमत मम्टु पेवेमावत ममतडकिक मी मोयिवाय 'ऐपनें! वेपळ मरममेंयित ऐनूव वैयतल्माम, मपुयित तनिपरिस्तावयराम ममवरें सेर्वें मीर मम्गुवने बायु गिवस्पीर मम्नवरें वैम्पोन मर्ते डुरपर तम्मपळ याम कोस्तु मडर सियम डुपि मुयतें वेंदुपतुम्को ? बेस्तु विरल मावेम्बर वेडस्मको पैम्पेगुप्पार ? पतिमियाय बायु्मयल्मास पारवेम्बर तामेमिगुम नति मिर्मे मगळार मोगळ डुकि पोमविस्ते पोमविर्ये पोडु्पिरेम पोप मवमीर तोपियमम एमें बिट्टुु पोयिमरे, एन सोयुगेम एमु मी

———

तुम लोग वन प्रान्तमें जब बस रही थीं तब घेर देशके राजाका पुत्र शिकार खेलने आया। वह राजकुमार एक हिरनका पीछा करता हुआ बहुत दूर चला गया—वह अपने साथियोंसे अलग हो गया था। उसने तुझे सखियोंके साथ स्नान देख लिया। तुरन्त वह तुझपर रीझ गया। उसने निश्चय कर लिया कि वह तुझे अपनाएगा। हे युवती! तू भी उस राजकुमारको देखकर प्रेममग्न हो गई। उसने तुझे देखा तूने उसे। उसी दर्शनमें तुम दोनोंने अपने प्राण एक-दूसरेको दे डाले। राजकुमारको वहाँ देखकर तेरी सखियाँ हट गईं। उसको चक्रवर्तीका पुत्र जानकर वे डर गई थीं। वह राजकुमार तेरे पास आया और बोला "मैं घेर राजाका पुत्र हूँ। हे शिकारीकी पुत्री! तू बहुत सुन्दर है। पुरुष जन्म मैंने आज फल पाया। देखते ही मैं तुझपर मुग्ध हो गया। तू भी कम मुग्ध नहीं हुई थी। अपनेको काबूमें रखकर तू बोली महाराज आपके महलमें सुनती हूँ पाँच सौ कामिनियाँ हैं और सभीका अनुपम सौन्दर्य है। सुना है कि उनके गानसे पत्थर भी पसीजता है। आप उन्हींके साथ सुखी होकर रहिए। मुझ राजाकी आवश्यकता नहीं है। मैं तो पर्वत प्रदेशकी निम्न जातिकी हूँ? राजाका उचका ब्याह होता है? वीर प्रतापी राजा कहाँ निम्न शिकारीकी पुत्रीको इच्छा करेगा? यद्यपि हम जातिकी छोटी हैं तो भी हम पत्नी होकर रहती हैं—वारांगना होकर नहीं। आपके स्वर्णमय चरणोंकी सौगन्ध है आप जाइए। सखियाँ भी मुझे छोड़कर चली गई हैं हाय! मैं क्या करूँ?

* * * *

इसके बाद सिद्ध होता है कि कवि ही वह राजकुमार था। कोमल कविके हाथमें पिरगी है। कविका यह देखकर आश्चर्य होता है कि वह कोमल नहीं सुन्दर युवती है। अचानक उसकी नींद टूटती है और कविको बोध होता है कि वह केवल स्वप्न देखता था।

तुम लोग वन प्रान्तमें जब खेल रही थीं, तब शेर देशका राजाका पुत्र शिकार करने आया। वह राजकुमार एक हिरनका पीछा करता हुआ बहुत दूर चला गया—वह अपने साथियोंसे अलग हो गया था। उसने तुझे सखियोंके साथ समस्त देख लिया। तुरन्त वह तुझपर रीझ गया। उसने निश्चय कर लिया कि वह तुझे अपनाएगा। हे युवती! तू भी उस राजकुमारको देखकर प्रेममग्न हो गई। उसन तुझे देखा तूने उसे। उसी क्षणमें तुम दोनोंने अपने अपने प्राण एक-दूसरेको दे डाले। राजकुमारको वहाँ देखकर डरी सखियाँ छूट गई। उसको चक्रवर्तीका पुत्र जानकर वे डर गई थीं। वह राजकुमार तेरे पास आया और बोला मैं शेर राजाका पुत्र हूँ। हे शिकारीकी पुत्री! तू बहुत सुन्दर है। पुरुष जन्म मैंने आज फल पाया। देखते ही मैं तुझपर मुग्ध हो गया। तू भी कम मुग्ध नहीं हुई थी। अपनेको काबूमें रखकर तू बोली महाराज आपके महलमें सुनती हूँ पाँच सौ कामिनियाँ हैं और सभीका अनुपम सौन्दर्य है। सुना है कि उनके गानसे पत्थर भी पसीजता है। आप उन्हींके साथ सुखी होकर रहिए। मुझ राजाकी आवश्यकता नहीं है। मैं तो पर्वत प्रदेशकी निम्न जातिकी हूँ? कहीं वनराज सिंहका शशकसे ब्याह होता है? और प्रतापी राजा कहो निरे शिकारीकी पुत्रीकी इच्छा करेगा? यद्यपि हम जातिकी छोटी हैं तो भी हम पत्नी होकर रहती हैं—बारांगना होकर नहीं। आपके स्वप्नमय चरणोंकी सौगन्ध है आप जाइए। सखियाँ भी मुझे छोड़कर चली गई हैं हाय! मैं क्या करूँ?

* * * *

इसके बाद सिद्ध होता है कि कवि ही वह राजकुमार था। कोमल कविके हाथमें गिरती है। कविको यह देखकर आश्चर्य होता है कि वह कोमल नहीं सुन्दर युवती है। अचानक उसकी नींद टूटती है और कविको बोध होता है कि वह केवल स्वप्न देखता था।

———